कांग्रेस स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में

# दिल्ली का राजनैतिक इतिहास

*

---

...र उस का कारण यह
इन्द्र ने उस स्थान पर कि

सन् १९३५ ]

प्रकाशक :—

ज़िला कांग्रेस कमेटी,

देहली।

* *
*

मुद्रक :—

अर्जुन इलैक्ट्रिक प्रिंटिंग प्रेस,

देहली।

# पहला अध्याय

## सलतनतों का भूलना

अगर सही तौर पर देहली का राजनैतिक इतिहास लिखा जाय और उसे एक खास समय तक सीमित न किया जाय तो हिन्दुस्तान के पूरे इतिहास पर एक दृष्टि डालनी पड़ेगी। देहली आज ही कोई राजधानी नहीं बनी, बल्कि यदि हिन्दू कहावतों का विश्वास किया जाय तो कौरवों और पाण्डवों के समय से दिल्ली राजधानी चली आती है। बयान किया जाता है कि सब से पहले दिल्ली का नाम इन्द्रप्रस्थ था और उस का कारण यह बताया जाता है कि किसी समय में इन्द्र ने उस स्थान पर कि

जो इन्द्रप्रस्थ के नाम से बाद में विख्यात हुआ, दोनों हाथ भर के मोतियों का दान किया था। और 'प्रस्थ' का अर्थ दोनों हाथों से दान करना बताया जाता है। इस कारण उस स्थान का नाम कि जहां पर यह दान किया गया था 'इन्द्रप्रस्थ' पड़ गया और उसके बाद यही कौरवों और पाण्डवों के खानदान की राजधानी बनी। इसलिये पुराने किले में जो गांव बसा हुआ था वो अन्त समय तक 'इन्प्रपथ' गांव कहलाता रहा। नई दिल्ली बनने और पुराना किला खाली होने पर 'इन्द्रपथ' का नामों निशान मिट गया। अब इस प्रकार यदि कोई दिल्ली का इतिहास लिखना चाहे तो उसे उस समय से चलना होगा कि जब पाण्डवों ने उसे अपनी राजधानी बनाया। उसे शायद उस समय से प्रारम्भ करना पड़े जब आर्यों की देवामाला में इन्द्र देवता का ऊँचा स्थान रखा गया। उसे यह भी मालूम करना होगा कि इन्द्र देवता ने यह मोतियों का दान किस अवसर पर और किन अवस्थाओं में किया था? उस समय का समाज क्या था? उस समय की राजनीति क्या थी? उस समय लोगों का साधारण जीवन और देश के हालात क्या थे? और इन्द्रप्रस्थ का राजनैतिक जीवन किस प्रकार गुजरता था। मगर यह इतना बड़ा कार्य है कि दिल्ली के राजनैतिक जीवन के इस संक्षिप्त इतिहास में, जिस का एक नियत समय में तय्यार हो जाना आवश्यक है, पूरा होना असम्भव है। केवल एक संकेत के तौर

पर घटनाओं की नदी के निकास का हवाला दिया जा सकता है और उन तमाम घटनाओं को जो कौरवों और पाण्डवों के समय से लेकर पृथ्वीराज के समय तक और पृथ्वीराज के समय से लेकर मुगलों के राज्य तक, और मुगलों के राज्य से लेकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी और वर्तमान ब्रिटिश सरकार के समय तक हुई हैं दृष्टिगोचर करना पड़ेगा। क्योंकि इस संक्षिप्त परिच्छेद में हमें केवल उतने समय का ही दिल्ली का नकशा खेंचना है कि जिस का सीधा सम्बन्ध कांग्रेस से है। मगर फिर भी यह जरूरी मालूम होता है कि दिल्ली के जीवनमें जो राजनैतिक घटनायें कांग्रेस के प्रारम्भ से पहले हुई है उन का बहुत संक्षेप के साथ कुछ ज़िक्र आ जाय।

कौरवों और पाण्डवों का समय चार हज़ार वर्ष से पहले का बयान किया जाता है। उस समय से लेकर पृथ्वीराज के समय तक इन्द्रप्रस्थ पर क्या क्या गुजरी यह किस्से कहानियों में भी कहीं साफ तौर पर प्रगट नहीं होता।

मगर इस में कोई सन्देह का स्थान नहीं कि पृथ्वीराज की राजधानी जिस का नाम उस समय देहली ही था, ठीक उसी स्थान पर थी कि जहां आज कसबा महरौली और लाडोसराय गांव के बीच एक ऊँचा टीला कुतुब साहब की लाट के करीब दिखलाई देता है। उस समय से लेकर सन् १९११ तक

दिल्ली बराबर उत्तर की ओर हटती चली गई और हर नये दौर में पुरानी दिल्ली दक्षिण में रह गई और नई दिल्ली उत्तर में स्थापित हुई। इस प्रकार आठ या नौ नई देहलियाँ बसीं। इस सम्बन्ध में एक पुरानी नज़म का, जो बूढ़ों की ज़बानी सुनने में आई, यह मिसरा व्याख्यात है "नौ दिल्ली दस बादली और किला वजीराबाद" जो कि पेशगोई है कि नवीं दफा दिल्ली वर्तमान दिल्ली के स्थान पर बनेगी और दसवीं बार यानि अन्तिम बार बादली के स्थान पर, और उस समय किला वजीराबाद में होगा। एक लिहाज से यह भी हो चुका, क्योंकि नई दिल्ली की बुनियाद बादली में खेतों में पड़ी थी। यह पहला अवसर है कि वर्तमान नई देहली शाहजहांनाबाद के दक्षिण में बनाई गई। यानि दूसरे शब्दों में देहली की यह पहली करवट है। जिस का रुख पुरानी देहलियों की ओर है। न मालूम यह आने वाली घटनाओं का रुख किस हद तक प्रकट करती है।

बारहवीं सदी ईस्वी के आखिरी आधे हिस्से से लेकर बीसवीं सदी के प्रारम्भ तक दिल्ली के नाम और बसने के स्थान भी बदले, और हकूमतों के दौर भी बदले। एक खानदान की हकूमत आई और दूसरे की गई। खानदानों के अनुसार पृथ्वी-राज के बाद गौरी, ऐबक, गुलाम, सय्यद, तुगलक, खिलजी, लोधी, पठान, मुगल, और अंग्रेजों की सलतनत का दौरा रहा,

परन्तु राजनैतिक हालत के अनुसार देहली पर तरह २ के दौर बल्कि दौरे आये। हर एक राज्य करने वाले का समय अपना भिन्न २ प्रकार का दौर रखता था और हर दौर में दिल्ली की राजनीति में नाना प्रकार के रङ्ग पैदा होते थे। कभी हकूमत की डोर किसी मुंह चढ़े गुलाम और कभी सलतनत की डोर किसी धार्मिक और न्यायप्रिय प्रजा-रक्षक बादशाह या वज़ीर के हाथ में होती थी। कभी किसी बड़े योद्धा सिपहसालार या किसी महलों में रहने वाली समझदार या नासमझ बेगम का जोर होता था और कभी किसी पीर फकीर या धर्म-गुरू के संकेत पर हकूमतों की आज्ञाओं का रुख बदलता था। या स्वार्थी तङ्ग दिल टेढ़ी चाल वाले दरबारियों की टोली कुन्डल बनाये बैठी रहती थी।

यदि इस समय की राजनैतिक पेचीदगियों और जालदार गोरखधन्धों की जांच की जाय तो यह अवश्य प्रगट होगा कि प्रगट और अप्रगट राजनीति का बहता हुआ चश्मा प्रायः तख्त के गिर्द दिल्ली के महलों और किलों की चार दीवारों में पाया जाता था और इस बहते हुए चश्मे से वह तमाम सोतें निकलती थीं कि जो एक ओर तो प्रजापालन के एक बड़े मैदान को सींचती थीं और दूसरी ओर मौत और बरबादी की दूतनियां बन कर लोगों के भाग्य का फैसला करती थीं। इस तमाम दौर की यूं तो हजारों और लाखों घटनायें हैं कि जिन से इतिहास के

पृष्ठ काले नज़र आते हैं। लेकिन हमारी दृष्टि में केवल कुछ ऐसी घटनायें हैं जो सदैव सुनहरी शब्दों में लिखने के योग्य हैं।

पहली घटना यह है कि सुलतान गयासुद्दीन मोहम्मद तुगलक ने जो मुसलमानों के प्रारम्भिक ज़माने का एक ईश्वर-भक्त, परिश्रमी और दूरदर्शी बादशाह हुआ है, एक अवसर पर यह घोषणा की "धार्मिक विश्वास एक व्यक्तिगत मामला है, इसे सलतनत की स्थापना या हकूमत के प्रबन्ध से कोई वास्ता नहीं", और यही हकूमत का उद्देश्य था कि जिसका अनुसरण प्रत्येक उस बादशाह ने आवश्यक बताया कि जिसका दौर कमी-वेशी करने के धब्बों से साफ रहा हो। इसलिए शेरशाह, बाबर, और अकबर की रफ्तार यही रही। यों तो और नाम भी गिनवाने के योग्य हैं, मगर यहां यह तीन नाम काफी हैं।

एक और घटना जो इस योग्य है कि उसका सरसरी तौर पर वर्णन आ जाये, यह है कि उस तमाम दौर में जो ईस्ट-इंडिया कम्पनी की स्थापना से पहले का है, देहली और हिन्दुस्तान को किसी ऐसी हकूमत से काम नहीं पड़ा कि जिसके ज़माने में हिन्दुस्तान की दौलत हिन्दुस्तान से बाहर गई हो। बल्कि मुगलों के प्रभुत्व के ज़माने तक काबुल, बदकशां, और बलख तक की राजनैतिक और व्यापारिक संसार का केन्द्र देहली ही रहा है। जहां हिन्दुस्तान के बाहरसे आने वाली चीज़ें

और बहुमूल्य तोफे पाये तख्त दिल्ली में ही पहुंचते रहे, और हिन्दुस्तान की पूंजी बढ़ती रही। जितना धन महमूद, तैमूर, नादिर, और अहमदशाह अबदाली हिन्दुस्तान से लेगये होंगे, उससे अधिक उस ज़माने में कि जब देहली के बादशाहों का प्रभुत्व हिन्दुस्तान की वर्तमान सीमाओं से बाहर था, बाहर से हमारे मुल्क में ज़रूर आया होगा। और अगर कोई इसकी जाँच करे तो इसी नतीजे पर पहुंचेगा कि बाहर के हमलों और लूट के बाद भी जो केवल अस्थाई थे, हिन्दुस्तान की सदियों के बाहर के व्योपार से आने वाली दौलत से भरे रहे।

इस दौर की एक तीसरी घटना भी वर्णन करने योग्य है अगर बाहर से आक्रमण करने वाले मुसलमान होते थे तो हिन्दुस्तान के मुसलमान उनका उसी शक्ति और तैयारी से मुकाबला करते थे, और हिन्दुस्तानी हकूमत के लिये कट २ कर मरते थे, कि जिस प्रकार हिन्दू।

अन्त में एक चौथी बात भी दृष्टि में रखने योग्य है और वह यह कि इस दौर में फौजों के मुकाबले होते थे, बगावतें होती थीं, बादशाह कत्ल और तख्त से अलग होते थे, हकूमत का शासन और प्रबन्ध बिखरता और बदलता था। मगर हिन्दुस्तान के किसान और व्यापारी प्रायः बिना किसी अपमान और परे-शानी के जीवन व्यतीत करते थे। जब कभी हकूमत में क्रांति

होती थी तो फौजों के अफसर और दरबारी, और हकूमत के कर्मचारी और जागीरदारों ही तक यह क्रांति सीमित रहती थी। एक गया और दूसरा आया, शेष आबादी उसी प्रकार अपना जीवन व्यतीत करती थी।

## अंग्रेजों की हकूमत का बीज

अंग्रेजों की हकूमत का बीज भी दिल्ली में ही बोया गया। और आश्चर्य यह है कि यह बुनियाद मुगलों के प्रभुत्व के समय में पड़ी। मगर इससे पहले कि हम इस घटना का वर्णन करें, यह बता देना आवश्यक समझते हैं कि अकबर के बाद मुगल बादशाह आधे मुगल और आधे राजपूत होगये थे। और शायद देहली के आखरी मुगल बादशाह के वक्त तक यद्यपि धार्मिक विचारों के अनुसार वह मुसलमान थे, मगर उनकी रगों में तीन चौथाई खून राजपूती था। और उनकी ख्याली, दिमागी, रिवाजी और व्यवहारिक दुनिया हिन्दु सभ्यता के गहरे रंग में रंगी जा चुकी थी और दरबारी जीवनमें जो उस समयके राजनैतिक जीवन का श्रोत था हिन्दु धनाढ्य, अधिकारी बादशाह के वजीरों का प्रभाव इतना काफी था कि किसी मायने में भी उस हकूमत को बाहर की हकूमत नहीं कहना चाहिये। कुछ संकीर्ण विचार वाले बादशाहों के शासन में तंग दृष्टिकोण का भी प्रवेश था। और उनके द्वारा ऐसी घटनायें भी घटित हुईं और जिन की याद

को स्वार्थी इतिहास लेखकों ने इस तरह अंकित किया कि वर्षों और शताब्दियों के भिन्न भिन्न जातियों और विशेष कर सारे हिन्दु मुसलमानों के भाईचारे और पड़ौस के अच्छे सम्बन्धों में अनुचित और हानिकारक कटुकता के बीज बो दिये हैं, और यही वह जहरीले बीज हैं कि जिनका विस्तार और सिंचाई संकीर्ण दृष्टि वाले निकम्मे बियाबान में स्वार्थी खेंचातानी करने वाले हाथों से होती हैं। खैर! यह तो एक प्रसंगवश जिक्र आ गया।

समय की आवश्यकता ने सन १६१३ में जहांगीर जैसे महान शहनशाह के दरबार में इङ्गलिस्तान के सफीर सर टामसरो को पहुंचाया। जिसने अपनी कौम की ओर से व्यापारिक सुविधाओं के वास्ते एक प्रार्थना पेश की और सूरत में फैक्टरी बनाने की इजाजत मिली। इसके बाद सन् १६३४ में शाहजहां ने पीपली ( बंगाल ) में फैक्टरी बनाने की इजाजत दी और सन् १७१३ में फर्रुखशेर ने वह स्थान अंग्रेजों को दे दिया कि जिसे अब कलकत्ता कहा जाता है। इस बादशाह का इलाज एक डाक्टर हैमिल्टन ने किया था और उसके सिलसिले में सिर्फ यह इनाम चाहा कि उसके देश से आने वाली वस्तुओं पर आने का कर माफ हो जाय। इस जमाने में देहली पायतख्त ( राजधानी ) था।

आज दो सौ वर्ष से कुछ ही अधिक हुए जब यह घटना हुई थी। और आज उसी किले पर जिस में डाक्टर हैमिल्टन ने हिन्दुस्तान के बादशाह से एक व्यापारिक रियायत इनाम में प्राप्त की थी, बर्तानी हकूमत का झन्डा जोर से लहराता है। और उस किले में कि जहां बड़े २ देशों के बादशाह अदब से हिन्दुस्तान के तख्त के सामने हाथ बांधकर खड़े होते थे, अंग्रजी फौजों की बारकें हैं। जरा अनुमान लगाइये कि ढाई सौ वर्ष से ज्यादह नहीं हुए कि देहली के लालकिले में दरबार खास में तख्तताऊस पर शहनशाह आलमगीर उन वजीरों, राजाओं, महाराजाओं, के साथ जिन की सम्पत्ति तमाम इङ्गलिस्तान से ड्योढ़ी और दुगनी थी, विराजमान है और "अदब से आंखें नीची रक्खो" कि आवाज के साथ अन्य देशों और इंगलिस्तान प्रतिनिधि तख्त ताऊस को बोसा देने आगे बढ़ते हैं। मगर जमाने की करवटें पहले भी ऐसी ही थीं और अब भी किसे मालूम है कि जमाना कितनी और करवटें बदलेगा।

वर्तमान पुरानी देहली की बुनियाद शाहजहाँ ने डाली थी और वह सन् १६४८ ईस्वी में तय्यार हो गई थी। उसका नाम शाहजहाँनाबाद था। मगर देहली को अपना पुराना नाम इतना पसन्द है कि वह न शाहों के नाम से विख्यात होना चाहती है और न शहनशाहों के, और न उसे किसी खानदान से मोहब्बत

है, और न किसी विशेष मनुष्य से वास्ता है। वह सब की परीक्षा लेती है, और जो उसकी तराजू में पूरा नहीं उतरता उसे सदैव के लिये दुनिया के उस बियाबान में पहुंचा देती है जहाँ से कभी आवाज भी न आये। देहली मनुष्य के उस प्राकृतिक धर्म के गायन की गूंज है जिसका प्रारम्भ और अन्त विप्लव और छुपी हुई क्रान्ति है।

# दूसरा अध्याय

# सन् १८५७ से पहले की देहली

सोलहवीं सदी के आरम्भ से उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भिक आधे हिस्से तक करीब ढाई सौ वर्ष देहली मुगलों और राजपूतों के राजनैतिक उतार चढ़ाव में झकोले खाती रही। पुरानी देहलियों के खण्डहरों का और शाहजहांनाबाद के कूंचे और बाजारों का एक चप्पा भी ऐसा न मिलेगा जो इतिहासिक घटनाओं की चित्रकारियों से खाली हो।

अगर खण्डहरों के पत्थर और जमना की रेती के जर्रे बोल सकते तो देहली के रहन सहन, आर्थिक अवस्था, सभ्यता,

*प्रथाओं और राजनैतिक जीवन के चित्रकारों से दफ्तर के दफ्तर काले कर डालते। इन बेजानों की बोली तो हम नहीं समझ* सकते, मगर मिटे हुये चिन्ह एक धुधला सा खाका जरूर पेश करते हैं। जिस तरह की आज प्रतिदिन की घटनाओं का कोई नित नया रंग खिलता रहता है, इसी तरह शताब्दियों तक प्रति दिन दिल्ली में नई नई घटनायें होती होंगीं। गदर से पहले की दिल्ली का हाल बुजुर्गों की जवानी जो कुछ सुना उसको भी कलमबन्द करने के लिये एक दफ्तर चाहिये। गदर से पहले की देहली का वर्णन बड़े बूढ़े इन शब्दों में किया करते थे:— "शहर बसे में यह होता था या शहर बसने की यह हालत थी" यानी उनकी दृष्टि में गदर के बाद से शहर उजड़ गया था और घटना भी यही थी।

आज जिस देहली शहर पर हम दृष्टि डालते हैं वह गदर से पहले की देहली का सिवाय कुछ पुरानी इमारतों के कोई नकशा पेश नहीं करता। आधे के करीब तो गदर से पहले का शहर बिसमार कर दिया गया था और तमाम विख्यात कूंचे और बाजार जो जामा मसजिद और किले के बीच नगर की शोभा को बढ़ाते थे, उन का कहीं चिन्ह मात्र भी शेष नहीं रहा। धनाड्यों और राज्य कर्मचारियों के भवन, गरीबों की झोंपड़ियां और धार्मिक स्थान तक गिराकर चटियल मैदान बना दिया गया था, और यह " गद्दारों को सज़ा दी गई थी"। आज उन्हीं

कूचों और बाजारों के मैदानों का नाम पीपलपार्क, चांदमारी का मैदान वा पैरेड मैदान, राजघाट का मैदान, किले की खाई का मैदान, केवल सौभाग्य से मिरजा अली गौहर यानी शाह आलम के बाग का एक हिस्सा पर्दा बाग हो गया है और उसके सामने एडवर्ड पार्क बना दिया गया है और दर्यागंज व फैज बाजार के मैदानों में पहले छावनी बनी थी और अब कुछ हिस्सा उनका उजाड़ और शेष आहिस्ता आहिस्ता बस रहा है। नगर का एक अच्छा बड़ा हिस्सा कैलास घाट से काबली दर्वाजे तक रेल की भेंट हो गया।

अनुमान लगाइये कि जब नगर के बसे हुए भाग पर कुदाल फावड़े बज रहे होंगे और आधे के लगभग बसा हुआ नगर गिराया गया होगा, तो उस समय के बड़े बूढ़ों की निगाह में शहर उजड़ा या रहा। यही कारण है कि वह जब कभी गदर से पहले की देहली का ज़िक्र करते थे तो वह सदैव 'शहर बसने या शहर बसे" शब्द प्रयोग में लाया करते थे। इस के अलावा भी आज शहर में गदर से पहले की कोई बात बाकी नहीं, रहीसों और साहूकारों की बड़ी २ हवेलियां जिन के पीछे की ओर सुन्दर बाग थे. जिनमें नहरें और फव्वारे चलते थे, आज उनका चिन्ह भी बाकी नहीं है। एक एक हवेली में कई कई मोहल्ले आबाद हैं। एक समय ऐसा था कि इस शहर के घरों की रसोई तक में नहर फिरी हुई थी। बड़े २ बाज़ारों में हौज और नहर

थी। और नहर के किनारे २ दोनों ओर घनदार पेडों के सुंदर झुरमट थे। वह लोग आज भी जीवित हैं कि जिन्होंने शहादतखां की नहर भी देखी, चांदनी चौक की बहती हुई नहर और उस स्थान पर हौज भी देखा, जहां आज घन्टाघर है। वह नहर जो आजकल की ठन्डी सड़क के मुकाबिले से गुजर कर फैज बाज़ार आती थी, और किले के नीचे की लाल डिग्गी भी देखी आज कल के पर्दा बाग के सामने की नहर और फैज बाजार की नहर भी देखी। और पनचक्कियों की नहर और ग़ुतुरगुल भी देखा जिस नहर का पानी खाई में से होकर किले में उबलता था। कुछ वह आंखें भी अभी बन्द नहीं हुई हैं, जिन्होंने कोतवाली का चबूतरा भी देखा था जिस की जगह आज फव्वारा है। खैर ! यदि उस चबूतरे को फव्वारे से बदला गया तो एक अच्छा परिवर्तन है।

बाकी आज न गदर पहले का शहर का वह चेहरा रहा और न वह नकशा रहा। न उस समय के पुराने मकानों के चेहरे बाकी हैं।

जामा मसजिद की दोनों ओर दक्खिन में "दारूलसफा" और "दारूलबका" थे। जिनमें से दारूलसफा तो आज सिविल अस्पताल बना हुआ है। और दारूलबका जो एक मदरसा था और दारूलसफा का एक इमारती जोड़ा था, उस का कहीं पता-

दिल्ली का ऐतिहासिक चर्खा एक जलूस में

निशान बाकी नहीं। गर्ज यह कि गदर पहले की देहली में सिर्फ दो ही चीजें उस ओर बाकी रह गई हैं। यानि लाल किला और जामा मस्जिद। या जैनियों के उर्दू के मन्दिर की वह लाल इमारत कि जिस में बहुत कुछ तबदीली हो चुकी हैं। वरना, कहां, शाहजहानाबाद और कहां आज की देहली। और यह सब उस क्रान्ति का परिणाम है जिसे इतिहास में गदर के नाम से स्मरण किया जाता है। अगर कोई व्यक्ति गदर के समय के उन राजनीतिक हालत पर एक निगाह डालनी चाहे कि जिनका नतीजा यह हुआ तो यूं तो किताबें और बहुतसी हैं जो ज्यादहतर अंग्रेजों की लिखी हुई हैं। मगर हमारी दृष्टि में एडवर्ड टामसन की वह किताब है, जिसका नाम अंग्रेजी में The other side of the medal यानि "तस्वीर का दूसरा रुख", ऐसी हैं कि जिससे गदर के हालात पर एक न्यायप्रिय अंग्रेज के बयान में एक अच्छी पर्याप्त रोशनी पड़ती है। इस सम्बन्ध में कुछ किताबें जो हिन्दुस्तानियों ने लिखीं वह जब्त हो गईं, यद्यपि वह गदर से ७० वर्ष बाद लिखी गईं थीं। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है, कि किस की हस्ती थी कि वह गदर के जमाने का पूरा विवरण भारतवासियों के दृष्टिकोण से गदर के बाद ही लेख-बन्द कर सकता। दिल्ली घटनाओं की बेरोक और निराश्रित रफ़्तार से इस क्रांति का केन्द्र बन गई थी। औरंगजेब आलमगीर के बाद से हिन्दुस्तान की हकूमत का शासन लगभग

खन्डर बन्डर हो चुका था। और राजनैतिक घटनाओं की रफ़्तार एक मदमस्त मनुष्य की बिगड़ी हुई चाल से भिन्न न थी। देश में छोटी छोटी पार्टियें बन रही थीं और आपाधापी के दर्वाजे खुल गये थे। यद्यपि प्रत्येक स्वार्थी की दृष्टि देहली की ओर लगी हुई थी, परन्तु दिल्ली की हस्ती चौगान की गेन्द से ज्यादह न थी, जिसे स्वार्थियों की खेंचातानी जिधर चाहती थी लेजाती थी। योद्धा, वीर, कामी विलास के महलों में दिन रात गुजारते थे। योग्य वजीरों और सूबेदारों की जगह अदूरदर्शी, और अपना घर बनाने वाले स्वार्थी ले चुके थे। यह हाल केवल मुसलमानों का ही नहीं था बल्कि हिन्दुओं में भी यही कमजोरियें मौजूद थीं। देहली प्रतिदिन की क्रान्ति का झूला बनी हुई थी। कभी कोई सरदार विद्रोह करता. कभी कोई वजीर बिगड़ जाता था। कभी नवाब और राजा रूठ कर बैठ जाते थे। कभी नवाब, वजीर देहली पर फौजी चढ़ाई करते थे, तात्पर्य यह कि दिन रात की यह खेंचा-तानी थी कि जिसका परिणाम यही हो सकता था कि जो हुआ। ईस्ट इन्डिया कम्पनी यद्यपि केवल एक व्यापारिक कम्पनी थी परन्तु देश के कुप्रबन्ध में इसकी रफ्तार और सत्ता बढ़ती गई, और उसकी सम्पत्ति में बढ़ोतरी होती गई। हत्ता कि शाह आलम के वक्त में प्रायः एक फिकरा जनता की जबान पर था, और वह यह "सलतनते शाह आलम अज दिल्ली ता पालम" और वास्तव में पालम तक भी उनकी

सल्तनत न थी, बस नाम के बादशाह थे। और वास्तव में तो देश के एक बड़े हिस्से पर ईस्ट इन्डिया कम्पनी का राज था। यद्यपि उनकी हैसियत मुगलों के दीवान से ज्यादह न थी, और देश के बाकी हिस्सों में कई राजाओं का राज था, कई नवाबों की हकूमत थी, कई सूबेदारों का कब्जा था, और प्रत्येक व्यक्ति अपने स्थानों पर स्वयं अधिकारी था। हिन्दुस्तान की राजनीति में दिल्ली के बादशाह का सिर्फ इतना ही हाथ था कि जिस किसी को खिताबों नौबत-नक्कारों और जागीरों के रद्दोबदल की जरूरत पड़ती थी या जिस किसी को बादशाह के नाम से लाभ उठाना होता था, वह किसी न किसी तरह अपना स्वार्थ पूरा कर लिया करते थे।

मगर कुछ दूरदर्शी इस दशा को देखकर यह अनुमान लगा रहे थे कि वह दिन दूर नहीं कि जब अंग्रेज इस धोखे की टट्टी को हटा कर और देश की हकूमत की डोर खुद अपने हाथ में ले लेंगे। इन ऐसे कुछ व्यक्तियों ने सन् १८५७ के गदर की बुद्धिमानी और सावधानता से नीव डाली। इच्छा उनकी यह थी कि अंग्रेज़ी सत्ता का अन्त कर दें।

उन लोगों के विचार में ऐतिहासिक अनुभव एक ही पाठ सिखाता है कि हकूमतों की क्रान्ति केवल फौजों की शक्ति और शस्त्रों के प्रयोग से ही हो सकती है। वह सत्याग्रह के शस्त्र से अनभिज्ञ थे या उसको एक सामाजिक या सोशियल शस्त्र ही समझते होंगे। जिसको व्यवहार में लाने से, उनके विचार में

हकमतों की स्थापना या परिवर्तन नहीं हो सकता था। परन्तु यह भी समझते थे कि हिन्दुस्तान के निवासियों के दिल में धर्म की जड़ें इतनी गहरी जा चुकी हैं कि यदि हिन्दुस्तान में रहने वालों से कोई काम कराया जा सकता है तो वह केवल धर्म के नाम पर।

इस लिये ईस्ट इन्डिया कम्पनी की फौजों में ईस्ट इन्डिया कम्पनी की इस गलती से फायदा उठा कर कि नये प्रकार के कारतूसों में चरबी या चिकनाई काम में लाई जाती थी, यह विचार फैला दिया कि ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने मुसलमानों का दीन और हिन्दुओं का धर्म बिगाड़ने के लिये कारतूसों में सूअर और गाय की चरबी को काम में लाया गया था, और इस विचार से फौजों को विद्रोही और मुकाबले के लिये तय्यार कर दिया था। धोन्धूपन्थ नानासाहेब, अजीमुल्ला, नाना-साहेब का मुशीर, रानी झांसी, तांतियाटोपी और मौलवी अहमदशाह वास्तव में इस आन्दोलन के सँचालकों में से थे। परन्तु उन के विचारों और षड-यन्त्र को शक्तिशाली बनाने वालों का जाल हिन्दुस्तान में दूर २ फैला हुआ था। कोई फकीर दरवेश के भेष में, कोई सन्यासी और वैरागी के रूप में जगह २ अपना अपना काम कर रहे थे। वह मवाद जो वास्तव में सन् १७५७ यानी बकसर की पराजय के बाद से जमा होना शुरू हो गया था और वह अकस्मात् ही ता० १० मई सन् १८५७ के दिन फूट निकला।

यद्यपि सही अर्थों में देहली इस आन्दोलन का केन्द्र न थी, परन्तु केवल घटनाचक्र उसी के चारों ओर चलने लगा, जिसमें इस घटना का सब से बड़ा भाग था। यद्यपि मुगलों की सल्तन्त और उनकी सत्ता खत्म हो चुकी थी परन्तु फिर भी हिन्दुस्तान की निगाहें उस गई गुजरी प्रतिष्ठा के साये की ओर उठा करती थीं। यह बात भी मनोरंजन से खाली नहीं कि अन्तिम समय तक मुगलों की सत्ता के साये यानि बादशाह को जिलउल्लाह, यानि खुदा का साया कहा करते थे। वह तमाम घटनायें जो दिल्ली में गदर के समय में सामने आईं, इतिहासिक पुस्तकों, किस्से कहानियों, सरकारी कागजों और सब से अधिक जुबानी दास्तानों में, जिन में से अब बहुत कम बाकी रह गई हैं, पाई जाती हैं। खैर! जो कुछ भी हो उनको यहां दुहराने की आवश्यकता नहीं, यहां केवल इतना कह देना पर्याप्त है कि दिल्ली और हिन्दुस्तान के राजनैतिक इतिहास में सब से बड़ा विप्लव यह हुआ कि ६ महीने तक स्थान २ पर लड़ाई के बाद हिन्दुस्तानी गदर के संचालकों को पराजय और अंग्रेजों को विजय प्राप्त हुई और एक दिन उसी किले में कि जहां शाहजहां ने जशन महाताबी ( चौदहवीं के चांद का उत्सव ) मनाया था उसी दिवाने खास और दिवाने आम में जहां हिन्दुस्तानी हकूमत का सूर्य कभी तेजी से चमक रहा था, मुगल परिवार के आखरी बादशाह अबुजफर सराजुद्दीन बहादुरशाह अपराधी के रूप

में अङ्गरेजों की फौजी अदालत के सामने पेश हुआ, और उसके विरुद्ध महल के नौकरों, दरबारियों और बादशाह के खास मुशीगों की गवाहियां हुईं, और अन्त में उसे राज्य से पृथक होने और देश-निकाले का दण्ड दिया गया।

शहर बड़ी हद तक नागरिकों से खाली होगया, धड़ाधड़ गिरफ्तारियें हुईं, "गद्दारों और विद्रोहियों को गोलियों का निशाना बनाया गया या फांसियों की सजायें हुईं। शहर में जो फौजें घुसी थीं उनकी लूटमार से बहुत कम चीजें बचीं। आंखों देखे गवाहों का यह बयान है कि फौजों के देहली में प्रवेश कर लेने के बाद कई दिन तक शहर के मुख्य २ बाजारों के पेड़ों से फांसियों का काम लिया गया। बहुत से घर, मकतल ( वह जगह जहां कत्ल हुआ करते हैं ) बने और तात्पर्य यह कि देहली पर एक ऐसा कठिन समय आया कि जिसके स्मरण मात्र से वर्षों लोग कांपा करते थे। और जिस २ जगह पर भी गदर की खास २ घटनायें हुईं जैसे कानपुर, लखनऊ और अन्य स्थानों में, लगभग ऐसे ही नक्शे सब स्थानों में बने, और सारा हिन्दुस्तान थर्रा उठा। यही कारण था कि गदर के वर्षों बाद तक उत्तरी भारत के ऐसे राजनैतिक केन्द्रों में जैसे देहली या लखनऊ थे, कोई भूल कर भी क्रान्ति का नाम न लेता था।

## तीसरा अध्याय

# कांग्रेस और उसका प्रारम्भ

गदर के बाद वर्षों तो हिन्दुस्तान बिल्कुल चुप रहा। इसके अलावा कि सय्यद अहमदखां देहली वालों ने (जो बाद में सर सय्यद अहमदखां हुए) "असबावे-बगावत" (विद्रोह के कारण) के नाम से एक अखबार तय्यार किया, जिसकी सिर्फ २०० प्रतियें इंगलिस्तान में जिम्मेदार आदमियों को बांटी गईं। और उसमें गदर के कारणों पर प्रकाश डाला गया।

ऐसे स्थानों के रहने वाले जैसे मदरास, कलकत्ता और बम्बई जहां गदर की घटनाओं के ऐसे अनुभव नहीं हुए थे, जैसे उत्तरी

भारत में, आहिस्ता २ दबी जबान से अंग्रेजी सरकार से अनुनय विनय करनी शुरू की, और इस प्रकार की प्रार्थना और जीहजूरी का दायरा बहुत ही तंग था, और उसमें अधिकतया नौकरियों का ही जिक्र होता था।

गदर के २०-२२ वर्ष बाद कलकत्ते में जो उस समय अंग्रेजी राजनीति का केन्द्र था, कुछ ऐसे हिन्दुस्तानी पैदा होगये थे कि जिन्होंने अंग्रेजी शिक्षा से प्रभावित होकर अंग्रेजी राजनैतिक असूलों के अनुसार देश की ओर से सीमित मांगें पेश करनी शुरू करदी थीं। और इन मांगों में इससे अधिक कुछ न था कि अंग्रेजी पार्लियामेंट में दस-पांच हिन्दुस्तानी प्रतिनिधियों का स्थान भी होना चाहिये। शिक्षित भाग जो बहुत ही सीमित था, अंग्रेजी शिक्षा, अंग्रेजी सभ्यता और अंग्रेजी विचारों वाली दुनिया पर नाज किया करता था। उत्तरी भारत इसी को गनीमत समझता था कि उसे शान्ति का जीवन व्यतीत करने का अवसर मिले, और हकूमत के विरुद्ध आवाज निकालना बहुत ही बुरा अपराध और पाप ख्याल करता था। परन्तु दक्खनी और पूर्वी, पश्चिमी और दक्खिनी हिन्दुस्तान यानि कलकत्ता, बम्बई और मदरास के आस पास के शिक्षित निवासी इंगलिस्तान कि सरकार के प्रतिनिधित्व शासन की रफ़्तार को बड़ी उत्सुकता के साथ देखना सीखते जाते थे, और सलतन्ते बर्तानिया की नई बसी हुई बस्तियों के हकूमत के ढंग का बड़ी गहरी दृष्टि से अध्ययन

किया जाता था। इसके अलावा हिन्दुस्तान की हकूमत के सीधो अंग्रेज पारलियामेंट के हाथ में आजाने ने हिन्दुस्तान की हकूमत के तरीके का रुख एक खास सीमा तक बदल दिया था।

## इन्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना

आहिस्ता २ यह विचार हिन्दुस्तान के अंग्रेजी शिक्षित भाग में बढ़ रहा था कि हकूमत से अनुनय विनय करने का संगठित तरीका निकाला जाय। उस समय में एक सज्जन ए० ओ० ह्यूम नामी थे, जिन्होंने इन दशाओं का ठीक अनुशीलन करके इन्डियन नेशनल कांग्रेस की नीव डाली। और सब से पहले परामर्श के लिये एक प्रारम्भिक जलसा दिसम्बर सन् १८८४ के अन्तिम सप्ताह में मद्रास में इस अभिप्राय से किया। जिसमें देश के अंग्रेजी जानने वाले १७ राजनैतिक नेता बंगाल, अवध, मद्रास, कलकत्ता, बम्बई, पूना, बनारस, इलाहाबाद और सीमाप्रान्त के सम्मिलित हुए। और इस प्रकार इन्डियन नेशनल कांग्रेस की नींव पड़ी।

उस समय से सन् १९०५ तक बराबर इन्डियन नेशनल कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन भिन्न २ स्थानों पर क्रीसमीस ( बड़े दिनों ) की छुट्टियों में होते रहे। और प्रत्येक वर्ष हरेक अधिवेशन में शिकायतें और मांगें बड़ी नम्र जबान में पेश की जाती थीं।

और कांग्रेस के सभापति पद का सम्मान देश के विख्यात नेताओं को दिया जाता था।

## प्रतिनिधियों का चुनाव

प्रायः तरीका यह था कि देश की हर प्रकार की राजनैतिक संस्था को यह अधिकार प्राप्त था कि वह अपना सम्बन्ध इन्डियन नेशनल कांग्रेस से करलें, और प्रत्येक वर्ष अधिवेशन से पहले देश के भिन्न २ भागों में सार्वजनिक जल्से करके बिना किसी गिन्ती की पाबन्दी के कांग्रेस के प्रतिनिधि सार्वजनिक जलसों की राय से चुने जाया करते थे। और वास्तव में होता सिर्फ इतना ही था कि जो अधिवेशन में सम्मिलित होने के विचार से जाना चाहते थे उन सब के नाम सार्वजनिक जल्से में पेश होकर स्वीकृत हो जाया करते थे। कांग्रेस का सप्ताह बहुत अच्छे और सुन्दर प्रकार के अंग्रेजी भाषणों का एक अच्छा अवसर होता था, और उसमें यह भी पाबन्दी न थी कि गवर्नमेन्ट के नौकर या पेन्शन वाले सम्मिलित न हों। मि० ह्यूम, मि० पूल, सर हेनरी कोटन, सर विलियम वेडरबर्न और दूसरे अंग्रेज इन अधिवेशनों में सम्मिलित हुआ करते थे, और कांग्रेस के सभापति भी बनाये गये।

## कांग्रेस अधिवेशन में दिल्ली का प्रतिनिधि

इन्डियन नेशनल कांग्रेस का आठवां अधिवेशन सन १८६२ में इलाहाबाद में हुआ और यह पहला अवसर था कि देहली वालों में से एक साहब मौलवी उमराव मिर्जा हैरत ने, जिन्होंने बाद में एक बड़ी शान का अखबार "कर्जन गजट" के नाम से निकाला था, कांग्रेस में भाषण दिया। इस कांग्रेस में देहली की ओर से डाक्टर हेमचन्द्रसेन और अब्दुल मुनाजीर मौलवी मनसूरअली भी शरीक हुये थे।

## कांग्रेस का दूसरा दौर

### कांग्रेस में स्वराज्य, स्वदेशी और बायकाट

सन् १६०५ में बंगाल की तकसीम के कारण एक बहुत बड़ा आन्दोलन शुरू हुआ, और उसके बाद १६०६ में कलकत्ता में जो कांग्रेस हुई, जिसके सभापति दादाभाई नैरूजी थे, पहली कांग्रेस थी कि जिसमें सभापति के भाषण में स्वदेशी, स्वराज्य और बायकाट के शब्द पहली बार आये, यानि सन १६०६ की कांग्रेस में इन्डियन नेशनल कांग्रेस का पहला दौर समाप्त हुआ और दूसरे दौर का प्रारम्भ हुआ।

## सूरत कांग्रेस में लोकमान्य तिलक

इस से पहले ही से दक्खिन के मरहठों में, जिन का हिन्दुस्तान भर में राज्य होते होते रह गया, एक नया आंदोलन पैदा हो चुका था। या यह कहिये कि गदर के समय से ही चला आ रहा था। और इस आंदोलन के योग्य नेता बाल गंगाधर तिलक और उनके अनुयायी पैदा होचुके थे। बाल गंगाधर तिलक कांग्रेस की उस चाल से जिसका संचालन विशेषता के साथ सर फिरोजशाह मेहत्ता और मि० गोपाल कृष्ण गोखले ने किया था अप्रसन्न थे। और वह कांग्रेस को नम्र जबान से प्रार्थनायें करने आदि से निकाल कर मनुष्य को जन्मसिद्ध अधिकारों को मांगने की सतह पर लाना चाहते थे। इस कसमकस का पहला प्रदर्शन सन् १९०७ में सूरत की कांग्रेस में ऐलानिया तौर पर उस झगड़े की शक्ल में सामने आया जो एक ओर बाल गंगाधर तिलक और उनके साथियों में, और दूसरी ओर मि० फिरोजशाह महत्ता और मि० गोखले और उनके नर्म हृदय मित्रों में पैदा हुआ। इस कांग्रेस में मि० सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, मि० विपनचन्द्रपाल, मि० अरविन्द घोष, पं० मदनमोहन मालवीय, और लाला लाजपतराय आदि अन्य दूसरे व्यक्ति भी सम्मिलित थे। और झगड़ा ला० लाजपतराय का नाम पेश करने पर प्रगट हुआ था।

यह दूसरा अवसर है कि जिसमें दिल्ली की ओर से सय्यद हैदर रजा प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुये थे। इससे पहले एक वार मिर्जा हैरत और एक दो वार प्रारम्भ में ला० प्यारेलाल वकील भी सम्मिलित हुए थे। वरना देहली का कांग्रेस से और कोई सम्बन्ध न था। इस समय से कांग्रेस वाले गर्म दल ( एक्सट्रीमिस्ट ) और नर्मदल ( मोडरेट ) दो दलों में विभक्त हो गये और इनका यह विभाजन सन १६१६ तक कायम रहा।

इसी सम्बन्ध में यह बयान कर देना भी आवश्यक मालूम होता है कि बंगाल की तक्सीम के सम्बन्ध में जो आंदोलन शुरू हुआ था, उसके मध्य ही में सन् १६०६ में मुसलिम लीग की भी स्थापना हो गई थी। और सन् १६१६ में न केवल कांग्रेस के गर्म दल और नर्म दल में ही मिलाप हुआ, बल्कि मुसलिम लीग का अधिवेशन भी लखनऊ में ही हुआ। और शासन में अपने अधिकारों के सम्बन्ध में दोनों ने एक ही प्रस्ताव पास किया। और यही वह जमाना है कि जब मिसेज ऐनी बीसेन्ट ने होमरूल की आवाज उठाई और होमरूल लीग की बुनियाद पड़ी।

## कांग्रेस का तीसरा दौर

सरसरी तौर पर यह बता देना भी जरूरी है कि सन्

१६१६ तक कांग्रेस का यह तीसरा दौर जो लखनऊ से शुरू हुआ कायम रहा। परन्तु सन् १६२० की नागपुर कांग्रेस से कांग्रेस के विधान और उद्देश्य दोनों बिल्कुल बदल गये, और स्वराज्य, असहयोग और अहिंसा ध्येय और उद्देश्यों में सम्मिलित हो गये और इण्डियन नेशनल कांग्रेस के मेम्बर बनने वालों के लिये चार आने वार्षिक फीस कर दी गई। नवम्बर सन् १६१६ से खिलाफत कमेटी और सालाना खिलाफत कान्फ्रेंस भी कायम हो गई थी। और करीब २ कांग्रेस खिलाफत कमेटी, और लीग इन तीनों की कमती बढ़ती एक ही कार्य प्रणाली हो गई थी।

## कांग्रेस का चौथा दौर

सन् १६२० से १६२२ तक कांग्रेस असहयोग के पक्ष में रही। सन् १६२२ में स्वराज्य पार्टी की स्थापना हुई और सन् १६२३ में कांग्रेस ने स्वराज्य पार्टी को कौंसिल में जाने की आज्ञा दे दी। यह कांग्रेस का चौथा दौर था।

## कांग्रेस का पांचवा दौर

सन् १६२५ में कानपुर की कांग्रेस में कौंसिल-प्रवेश, कांग्रेस की कार्य प्रणाली में सम्मिलित हो गया और यह सूरत सन् १६२६ तक कायम रही। सन् १६२६ में लाहौर की

कांग्रेस में पूर्ण स्वराज्य और कौंसिल बहिष्कार के प्रस्ताव पास हुये। और यह कांग्रेस का पांचवां दौर था, जो सन् १९३३ तक क़ायम रहा।

## कांग्रेस का छठा दौर

सन् १९३४ में कांग्रेस ने फिर कौंसिल-प्रवेश को स्वीकार किया और यह कौंसिलों का छठा दौर था जो इस समय जारी है। इसके बाद हम देहली की उन घटनाओं पर दृष्टि डालगे जिनका सम्बन्ध विशेषता के साथ कांग्रेस से रहा है। इस सर-सरी दृष्टि में जो हमने बहुत ही संक्षेप के साथ कांग्रेस के प्रारम्भ से इस समय तक ६ दौरों पर डाली है, केवल इस अभिप्राय से कि पढ़ने वाले को उस तस्वीर की जमीन का अन्दाजा हो जाय कि जो हम आगे चलकर खेंचेंगे।

सार्वजनिक सभा का एक दृश्य

# चौथा अध्याय

## देहली और राजनीति

यूं तो जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि देहली भिन्न २ हकू, मतों की राजधानी रही, और राजनीतिक हलचलों के ज्वार भाटे में किसी समय खाली नहीं रही । बल्कि पिछले एक हजार वर्ष के समय में हिन्दुस्तान भर की राजनीति की लहरें बराबर देहली से उठती रहीं, या देहली में आकर समाप्त होती रहीं । केवल कुछ समय के लिये मोहम्मद तुगल के जमाने में जब कि उसने राजधानी को देवगिरी में तवदील किया, या उस समय में कि जब शेरशाह ने आगरे को राजधानी बनाया । फिर उसके

बाद् अकबर ने जब देहली से राजधानी को बदल कर आगरे को राजधानी बनाया। शाहाजहां के समय तक और फिर आखिर में गदर के बाद् से कमती बढ़ती सन १६१६ तक देहली में राजनीति का केन्द्र रहा।

मगर फिर भी ऐतिहासिक घटनायें इस बात की गवाही देती हैं कि उस उतार के जमाने में भी देहली में समय २ पर राज-नीति के उबाल आये। मगर सन् १८५७ से सन् १६०६ तक अगर देहली में कुछ लोग ऐसे पैदा हुए भी कि जिनका झुकाव राजनीति की ओर था तो उनकी जबानों पर ताला पड़ा रहा। यदि यह कहा जाय तो अनुचित न होगा कि वह भय जो गदर के बाद से देहली की आबादी पर छा गया था, एक प्रकार से इतना गहरा था कि आम जनता का ही नहीं बल्कि खास-खास आदमियों का मस्तिष्क उससे बेकार और लकवा मारे हुये की तरह हो गया था। एक बड़ी संख्या देहली वालों की देहली को गदर के बाद छोड़ चुकी थी, और देश के भिन्न २ हिस्सों में बिखर गई थी, और जो बचे खुचे घर रह गये थे वह वही लोग थे कि जिनके दिल सहमे हुये और दिमाग छिन्न भिन्न थे और वह अपने छुटकारे और जीवन का अमन इसी में पाते थे कि उचित शिकायतों को कभी जबान से भी बयान न करें इसलिये सन १६०६ तक यही अवस्था रही। धार्मिक, सोशियल या शिक्षा सम्बन्धी संस्थायें तो अवश्य बनीं, मगर इन सब का रवैया

यह रहा कि पहला कार्य हकूमत के गुणगान करना और उनकी प्रंसशा में सुनहरी कसीदे लिख कर पेश करना । इस दौरान में देहली में शिक्षा सम्बन्धी-केन्द्र कुछ बढ़े, और कहीं २ कभी कुछ साप्ताहिक, या मासिक परन्तु बेजबान अखबार भी जारी और बन्द होते रहे। सन् १६०६ तक अंग्रेज़ी पढ़े लिखे भाग में काफी बढ़ोतरी हो गई। और इसके भाग के विचारों की रफ़्तार भी एक सीमा तक आज के विचारों की ओर झुकने लगी।

## थियोसिफल सोसायटी की स्थापना

एक शाख थियोसिफल सोसायटी की भी उन्नीसवीं सदी के आखीर में स्थापित हो चुकी थी और सब से पहले मिसेज ऐनी-बीसेन्ट का भाषण इसी सोसायटी की संरक्षतामें सन् १६०३ में टाउनहाल में हुआ था। जिसमें ला० बालकिशनदास जी ने सभापति पद ग्रहण किया था। अच्छे दो ढ़ाई सौ अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग एकत्र हुये थे। और उसमें मिसेज ऐनी बीसेन्ट ने थियोसिफी पर प्रकाश डाला था।

## लार्ड कर्जन के भाषण पर असंतोष

उसी समय में एक जापानी यात्री देहली में आया था और उसका भाषण रामाथियेटर में हुआ था। सन १६०५ की बंगाल तकसीम पर आंदोलन शुरू होने के बाद देहली के शिक्षित

युवकों में एक नया खमीर पैदा होना शुरू हो गया था । उसी समय में लार्ड कर्जन ने एक भाषण में कहा था कि हिन्दुस्तानी झूठ बोलने में बिलकुल ताम्मुल नहीं करते हैं। उस पर देश के अखबारों में कड़ी टीकाटिप्पणी शुरू हो गई थी।

## लार्ड कर्जन के उत्तर में डा० नजीरअहमद

इतफाक से सेन्ट स्टीफन्स कालेज में लार्ड लेफरायल का एक भाषण हुआ, जिसमें उन्होंने लार्ड कर्जन की सफाई पेश करते हुये इस बात पर जोर दिया कि हिन्दुस्तानी को सच बोलने का अभ्यास डालना चाहिये। डा० नजीरअहमद जिनकी उस जमाने में देहली के बहुत अच्छे वक्ताओं में गणना होती थी, उस सभा में उपस्थित थे। उन्होंने अपने एक प्रभावशाली भाषण में कहा कि "राजा और जिस पर राज किया जाय, उनमें यही फर्क होता है कि राजा की प्रत्येक बात अच्छी और जिन पर राज्य किया जाता है उनकी बुरी दृष्टि से देखी जाती है। अगर राजा सिगार पिये तो उसका अनुकरण जमाना करे और अगर वह लोग जिन पर राज्य किया जाता है हुक्का भी पीयें चाहे वह सिगार के मुकाबिले में तिब्बी और अन्य दूसरे लिहाज से बहतर ही क्यों न हो वह घृणा की की दृष्टि से देखा जाय।" इसी प्रकार और बहुत सी चीजों का मुकाबिला करने के बाद ज़रीफाना मगर दुमायनी एक मिश्रा कहा जिसपर उपस्थित जनता

की करतल ध्वनि से सेन्ट स्टीफन्स कालेज का भवन गूंज उठा। वह कहने लगे अच्छा हम झूठे ही सही मगर जनाब लाट साहब, "झूठे है। हम तो आप हैं झूठों के बादशाह"। इस समय डा० नजीरअहमद की आयु ६० वर्ष से ऊपर हो चुकी थी। परन्तु जिस अन्दाज से उन्होंने इस विचार को प्रकट किया और उपस्थित जनता ने उसका स्वागत किया, उस से देहली के शिक्षित श्रेणी वालों के दिमागी झुकाव का अनुमान हो सकता था। यानि वह चाहते थे कि कोई आदमी बिना भय उनके विचारों को प्रकट कर सके।

## सैयद हैदर रजा राजनैतिक क्षेत्र में

थोड़े ही दिन बाद सेन्ट स्टीफन्स कालेज के एक एम० ए० के विद्यार्थी सय्यदहैदररजा ने देहली वालों की इस इच्छा को पूरा किया।

## कार्यकर्ताओं की एक संस्था

एक संस्था बनी जिस में शहर के वकील, एक दो डाक्टर, दस पाँच अन्य नागरिक सम्मिलित हुये। उन में से निम्न नाम उल्लेखनीय हैं। स्वर्गीय लाला शंकरनाथ एम० ए० बैरिस्टर बार-एट-लॉ, जो वास्तव में दिल्ली के रहने वाले न थे, लेकिन दिल्ली में वकालत करते थे। सैय्यद हैदररजा जिनका जिक्र ऊपर आया है। स्वर्गीय ला० किशनदयाल वकील, जो ला० हरदयाल

के भाई थे। स्वर्गीय ला० अमीरचन्द, जिन्हें देहली षड़यन्त्र केस के बाद सन १९१३ में फांसी हुई। स्वर्गीय डा० बी० के० मित्रा, ला० शिवनारायण एडवोकेट, जो आजकल देहली बार-एसोसियेशन के सभापति हैं। स्वर्गीय ला० चन्दूलाल चांवल वाले, और मि० चन्द्रभान कैफी। लेकिन वास्तव में इस संस्था के सर्वसर्वा विशेषता के साथ स्वर्गीय ला० शंकरनाथ और सय्यद हैदररजा थे। ला० शंकरनाथ वक्ता न थे, और सैय्यद हैदररजा भाषणशैली में अपना जवाब न रखते थे। स्वर्गीय चन्दूलाल चांवल वाले बड़ी विद्वतापूर्ण और ओजस्वी भाषण दिया करते थे। बाद में उन्होंने एक मासिक पत्र "जबान" के नाम से निकाला था। सय्यद हैदररजा ने पहले पहल अपने भावपूर्ण ओजस्वी और बहुत ही मनोरंजक भाषण से देहली में एक खास नाम और ख्याति पैदा की और देहली वालों में सभाओं में जाने और भाषण सुनने का शौक पैदा कर दिया। और उस के बाद सन १९०७ में एक साप्ताहिक पत्र "आफताब" के नाम से निकाला, जिसे लोग हाथोंहाथ शौक से खरीदते थे।

## राजनीतिक आन्दोलन को नया रंग

जब सय्यद हैदररजा के तेज और प्रभावशाली भाषण नगर के प्रत्येक भाग में होने शुरू हुए और प्रकट किये जाने वाले

विचारों ने गहरा राजनीतिक रंग लेना शुरू किया तो वह संस्था कि जिस की संरक्षकता में काम होना प्रारम्भ हुआ था, आहिस्ता २ बिखरनी शुरू हुई और अन्त में उसमें सिर्फ ला० शंकरनाथ और मि० हैदररजा और बा० चन्द्रभान 'कैफी' और ला० चन्दूलाल चावल वाले रह गये।

## प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट

सन १६०८ में जब आफताब के सम्पादक सय्यद हैदररजा पर प्रेस रजिस्ट्रेसन एक्ट के सिलसिले में मुकद्दमा कायम हुआ हुआ तो करीब २ सय्यद हैदर रजा ही अकेले रह गये।

सन १६०७ के अन्त तक सय्यद हैदर रजा ने इतनी ख्याति प्राप्त कर ली थी कि सूरत की कांग्रेस के अवसर पर गर्म विचार वाले दल ने उनका खूब ही स्वागत किया।

सन १६०७ में ला० लाजपतराय और अजीतसिंह नज़रबन्द हुये थे और पंजाब में काफी राजनीतिक शोरोगुल शुरू हो गया था। इस नज़रबन्दी का देहली पर यह असर पड़ा कि राजनीतिक जल्सों में सम्मिलित होने वालों की संख्या तो बढ़ गई, मगर भाषण देने वालों की संख्या इतनी कम हो गई कि अन्त में सिर्फ सय्यद हैदररजा बाकी रह गये। इस समय में "आफताब" के सहकारी सम्पादक के लिये पं० रामचन्द्र पिशावर वाले दिल्ली में आये। यह एक बहुत जोशीला युवक

था और सय्यद हैदररजा का दाहिना हाथ था। उसके भाषण बहुत जोशील होते थे। पं० रामचन्द्र के सम्बन्ध में बहुत समय के बाद यह मालूम हुआ कि वह किसी तरह अमरीका पहुंच गये थे और सन १६२६ या १६३० में एक मुकद्दमे के दौरान में उन्होंने खुली अदालत में एक हिन्दुस्तानी को गोली से मार दिया और तत्त्ण उन्हें भी पिस्तौल से ठन्डा कर दिया गया था।

## राजनैतिक जल्सों की गर्मागर्मी

फिर भी सन १६०६ के अन्त से सन १६०८ के अन्त तक देहली में जल्सों का बाजार गर्म रहा और सय्यद हैदररजा के भाषणों की चहल पहल, और इस में 'कैफी' की नज्मों की चासनी भी मिली रही। सय्यद हैदररजा के भाषण "तिलस्मे होरुबा" और "बोस्ताने ख्याल" की रंगीनों से सजे हुए होते थे और यही उन की लेखनी का हाल था।

इस समय में कांग्रेसी क्षेत्र में सिर्फ कुछ ही मुसलमान थे कि जिन की गणना पक्के कांग्रेस वालों में होती थी। सय्यद हैदर रजा देहली वालों की बहुत अधिक पूछताछ थी। देश के भिन्न भिन्न भागों से उन के बुलावे आते थे। इसलिये नागपुर व पूने में उन के बहुत ही महत्वपूर्ण भाषण हुए। उस समय नागपुर में डाक्टर बी० एस० मुंजे और पूना में बाल गंगाधर तिलक की

अनुपस्थिति में मि० नरसिंह चिन्तामणी केलकर का दौर दौरा था।

## सन १९०९ में नया खमीर

सन १९०६ के अन्त से सन १९०८ के अन्त तक राजनीति में भाग लेना और राजनीतिक चहल पहल की दृष्टि से देहली का गदर के बाद से पहला दौर था। सन १९०९ के आरम्भ में सय्यद हैदररजा इंगलिस्तान चले गये, परन्तु प्रगट तौर पर जो खमीर इस समय में पैदा हो गया था, वह खत्म नहीं हुआ। बल्कि अगर वह शाहदत जो सन १९१३ के दिल्ली लार्ड हार्डिंग बम केस में पेश हुई सही है, तो ला० अमीरचन्द ने जिन्हें बाद में फांसी हुई, स्वतन्त्र विचारों और स्वतन्त्रता के उद्देश्य के पाठ को खामोसी के साथ जारी रखा। इस सम्बन्ध में लाला हरदयाल देहलवी का नाम विशेषतौर पर इसलिये उल्लेखनीय है कि ला० हरदयाल सेन्ट स्टीफन्स कालेज के एक योग्य और परिश्रमी विद्यार्थी थे और उन्हें सन १९०७ में सरकारी छात्र-वृत्ति देकर शिक्षा पूर्ण करने के लिए ओक्सफोर्ड भेजा गया था।

लेकिन शिक्षा ग्रहण करने का समय समाप्त करने के बाद उनके दिमाग की क्रांति इतनी सख्त हुई। उन्होंने सरकारी छात्र-वृत्ति भी छोड़ दी और डिग्री भी लेने से इन्कार कर दिया और

हिन्दुस्तान वापिस आ गये। देशी मोटा-झोटा लिबास पहनने लगे, जमींन पर सोने लगे और मासिक पत्र "वैदिक मैगजीन" के नाम से प्रकाशित करने लगे। परन्तु वर्ष भर के अन्दर ही अन्दर वह फिर वापिस यूरोप चले गये। इसके बाद से क्रांतिकारी आन्दोलनों के सम्बन्ध में उनका नाम समय २ पर हिन्दुस्तान के सामने आता रहा। एक समय तक वह कट्टर किस्म के हिन्दू रहे, फिर उसके बाद कुछ यूरोप रहने के समय में मिश्री और तुर्की मुसलमानों से कुछ सम्बन्ध कायम होने के बाद वह मुसलमानों के बड़े पक्षपाती और समर्थक होगये और महायुद्ध समाप्त हो जाने के बाद फिर उनके विचारों में एक जबरदस्त परिवर्तन हुआ और उन्होंने एक किताब में यह लिखा कि हिन्दुस्तानियों को पुरानी युनानी (ग्रीक) और लातीनी ( लेटिन ) भाषा का अध्ययन करना चाहिये। संस्कृत एक मुर्दा भाषा है। दुनिया की भलाई अंग्रेजी भाषा, पश्चिमी सभ्यता के द्वारा हो सकती है इत्यादि २।

अमरीका की गदर पारटी के वह खास संचालकों में से थे और जहां तक मालूम हुआ है उन्होंने तमाम दुनिया और विशेषकर तमाम यूरोप की यात्रा और अध्ययन किया है और भिन्न २ भाषाओं के जानकार हैं और आजकल एक खामोश जीवन लंदन में बसर करते है, और कोई किताबें लिख रहे हैं।

यही ला० हरदयाल हैं कि जिनका नाम लार्ड हार्डिंग बम केस के सिलसिले में सन १६१३ में आया था।

सन १६१२ के अन्त में लार्ड हार्डिंग का चांदनीचौक में जलूस निकला, और जिस समय वह किले की ओर जा रहे थे धूलिया वाले कटड़े के सामने एक बम गिरा और उसमे लार्ड हार्डिंग जख्मी हुए और उनका चमर ढोलने वाला सेवक हाथी के हौदे के पीछे खड़ा २ मर गया। इस सम्बन्ध में सन १६१३ में हार्डिंग बम षडयन्त्र केस चला और उसकी पैरवी के लिये श्री चितरञ्जनदास दिल्ली बुलाये गये थे। इसमें देहली के ला० अमीरचन्द और ला० अवधविहारी को फांसी और ला० हनुमन्त सहाय को ७ बरस सख्त कैद की सजा हुई।

मगर यह साफ तौर पर समझ लेना चाहिये कि सन १६१८ के प्रारम्भ तक देहली में कोई कांग्रेस कमेटी वगैरह न थी और इस केस का जिक्र केवल इस कारण से किया गया है कि देहली की राजनीतिक घटनाओं में से यह एक घटना है। इसका सीधे तौर पर कांग्रेस से कोई सम्बन्ध नहीं।

## सन १६१२ में दिल्ली फिर राजधानी बनी

अब हमें फिर सन १६१२ की ओर वापिस जाना चाहिये। सन १६०६ के प्रारम्भ से सन १६१२ के प्रारम्भ तक दिल्ली

में कोई विशेष राजनीतिक आन्दोलन या संस्था नहीं थी। सन १९११ में देहली फिर अर्द्धशताब्दी के बाद भारत की राजधानी बनी। और भारत सरकार के साथ देहली में बहुत से बाहर के लोग आये।

## डा० अन्सारी देहली में

सन १९१२ के प्रारम्भ में डा० मुख्तार अहमद अन्सारी साहब भी देहली में आये और अली भाई भी देहली में आये।

## अली भाइयों की सरगर्मियां

मि० मोहम्मदअली ने अपने 'कौमरेड' और 'हमदर्द' अखबार देहली से निकाले और मि० शौकतअली ने जो उसी समय में सरकारी नौकरी से पेन्शन पाकर हटे थे 'खुद्दामेंकाबा' की नींव डाल कर उसका केन्द्र देहली में स्थापित किया। खुद्दामेकाबा के आन्दोलन का यह उद्देश्य था कि मुसलमानों की एक संस्था अरब के धार्मिक स्थानों की रक्षा के लिये कायम की जाय और प्रत्येक वर्ष मुसलमानों की एक संख्या काबे में भेजी जाय जो स्वयं, सेवकों की भांति वहां पर सिपाहियों की तरह जीवन व्यतीत करे और इस आंदोलन में न केवल हिन्दुस्तान के बल्कि तमाम दुनियां के मुसलमान शरीक हों। सन १९१३ में एक ही घटना उल्लेखनीय है और वह देहली के कसाइयों की हड़ताल थी।

## म० गांधी और गोखले दिल्ली में

इसी वर्ष मि० गोपालकृष्ण गोखले और म० गांधी दिल्ली आये और उनका महत्वपूर्ण प्रभावशाली चिरस्मरणीय भाषण सँगम थियेटर मछली वालां में हुआ। सन १९१३ में ही कानपुर की मसजिद का किस्सा हुआ जिसके सिलसिले में मौलाना मोहम्मद अली ने विशेषतः के साथ बड़ी दिलचस्पी ली और मसजिद के एक भाग को गिराये जाने के सिलसिले में देहली से एक आल इंडिया आंदोलन की नींव डाल दी। इस सिलसिले में फिर मौलाना मोहम्मद अली भारतमन्त्री से बातचीत करने के लिये इंगलिस्तान चले गये। देहली के राजनीतिक जीवन में सन १९१२, १९१३ और १९१४ में मौलाना मोहम्मद अली के व्यक्तित्व और उनके अखबारों ने बहुत बड़ा कार्य किया।

## डा० अन्सारी जंगेतराबलस के नेतृत्व में

सन् १९१२ में जंगेतराबलस में (Tripoly war) के सिलसिले में मौलाना मौहम्मदअली ने रेड क्रिसेन्ट सोशायटी यानी 'हिलाले अमर' का आन्दोलन शुरू किया और एक बड़ी मिशन जिस का नेतृत्व डाक्टर एम० ए० अन्सारी साहब ने किया, कायम होकर तुर्की गई, इस मिशन में मि० चिरागुद्दीन भी देहली से डाक्टर साहब के साथ गए थे और जहां तक देहली का सम्बन्ध है डा० एम० ए० अन्सारी साहब के राजनैतिक

जीवन का प्रारम्भ समझना चाहिये। सन् १६१३ में जब मिशन वापिस भारत आई, उस समय उस के सम्बन्ध में देहली में एक विशाल प्रदर्शनी और मिशन के स्वागत के लिये विराट सभायें हुईं।

## मौलाना जफरअलीखां का जलूस

मौलाना जफरअलीखाँ जो मिशन से कुछ पहले ही वापिस आ गये थे और दिल्ली में उनके स्वागत के लिये जो जलूस और जलसा हुआ वह भी बड़ी शान व शौकत का था। बल्कि इस जलूस के बीच में जामा मस्जिद के पास एक नौ वर्षीय बच्चा कुचल कर मर गया और कहा जाता है कि वह अपनी मां का इकलौता था। उस क बाप ने रोकर जनता के सामने यह कहा कि अगर कोई दूसरा बच्चा होता तो वह भी इन चरणों पर न्यौछावर है।

## महायुद्ध का प्रारम्भ

अगस्त सन १६१४ में महायुद्ध छिड़ गया और सितम्बर १६१४ में तुर्क इस युद्ध में सम्मिलित हो गये। इस अवसर पर मौलाना मोहम्मदअली ने अपने अंग्रेजी अखबार "कामरेड" में "Choice of the Truks" "यानी तुर्क क्या कहते हैं" शीर्षक से एक बहुत ही बड़ा लम्बा लेख लिखा। और गवर्न-

मेंट ने उसे जब्तशुदा घोषित करार दे दिया । उस समय से तुर्कों के पक्ष में तमाम हिन्दुस्तान में एक सख्त आन्दोलन पैदा हो गया। और इस आन्दोलन का मर्कज अलीभाई थे।

## तुर्कों के साथ सहानुभूति

मुसलिम आन्दोलन की वह लहर जिसने आगे चल कर एक बड़ी बाढ़ का रूप धारण कर लिया। तुर्कों की सहानुभूति के सम्बन्ध में मौलाना मोहम्मदअली और मौलाना शौकतअली ने विशेषता के साथ शुरू की थी। यद्यपि कलकत्ते में मौलाना अब्बुलकलाम आजाद "अलहिलाल" और "अलबलाग" अखबारों द्वारा मुसलमानों में राजनैतिक भावना और उस पर कार्य करने का वातावरण पैदा कर रहे थे। वास्तव में इस आन्दोलन का केन्द्र पहले अलीभाइयों और फिर हकीम मोहम्मद अजमलखाँ और डाक्टर अन्सारी और मौलाना अहमदसईद व मुफ्ती मोहम्मद किफायत उल्ला के कारण देहली ही बन गया था।

कांग्रेस की इस समय तक यहाँ न कोई शाख स्थापित हुई थी और न यहाँ के सब रहने वालों में राजनैतिक विचारों ने कोई ठीक रूप धारण किया था और इस का सब से बड़ा कारण यह था कि सन् १९०७ में सूरत की कांग्रेस के समय से

सन् १९१६ लखनऊ की कांग्रेस के वक्त तक नर्म व गर्म दल कांग्रेस वालों के विचारों में मतभेद होने के कारण कांग्रेस का हल्का सीमित हो गया था।

## मि० गोखले की मृत्यु पर शोक सभा

सन् १९१५ के प्रारम्भ में मि० गोपालकृष्ण गोखले का स्वर्गवास हुआ और दिल्ली में सार्वजनिक शोक सभा टाउन हाल में हुई, जिसमें इम्पीरियल काउन्सिल के मेम्बर, सरकारी और गैरसरकारी, अंग्रेज़ और दिल्ली के रईस सम्मिलित हुये। उसमें मि० सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और अन्य हिन्दू नेताओं ने जो काउन्सिल के लिये आये हुए थे तथा मौलाना मौहम्मदअली और मौलाना अब्बुलकलाम आजाद ने भाशण दिये और विशेषता के साथ देहली के एक पुराने पादरी टामस ने कहा कि स्वर्गीय गोखले हिन्दुस्तान के सच्चे सपूत थे, और हकूमत और प्रजा दोनों को नजर में रखते थे।

## अलीभाइयों की नजरबन्दी

इसके कुछ समय बाद ही मौलाना शौकतअली को देहली में और अब्बुलकलाम आजाद को कलकत्ते में नजरबन्दी के हुक्म मिल गये और उससे हिन्दुस्तान में एक सख्त असंतोष की लहर पैदा होगई। इसके बाद हकीम अजमल खां और डाक्टर अन्सारी की ओर नजरें उठने लगीं।

महात्मा गांधी के लँगोटी के रूप में दर्शन
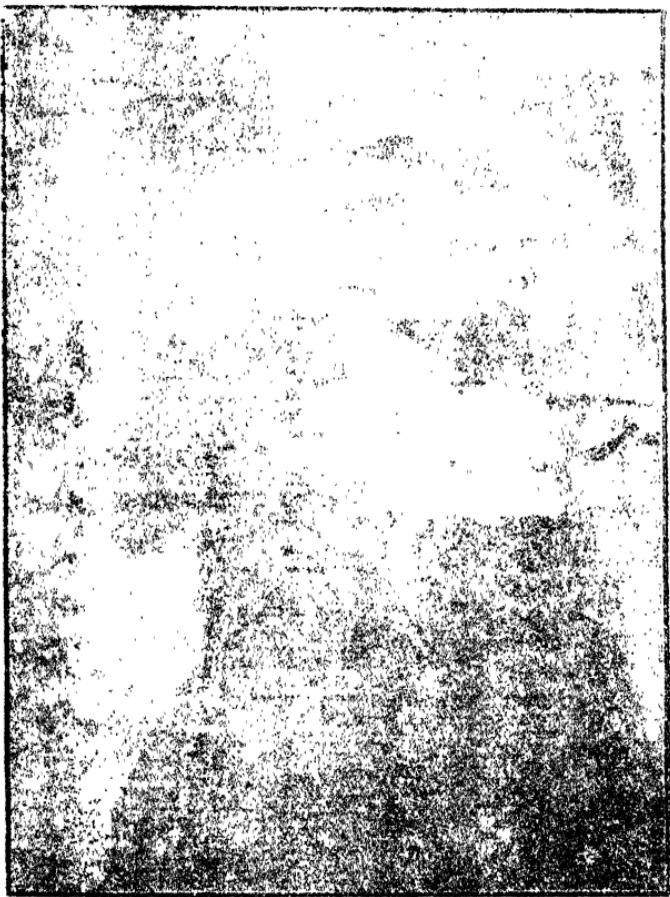
## नजरबन्द सहायक फण्ड

आहिस्ता आहिस्ता दिल्ली में "नजरबन्द सहायक फण्ड" के नाम से एक सहायता देने वाली संस्था स्थापित हुई। जिस के सभापति डाक्टर अन्सारी थे।

## कांग्रेस ने क्या परिवर्तन किया

### पुराने रईसों की जहनीयत का उदाहरण

यहाँ पर एक घटना दिल्ली के पुराने रईसों की जहनीयत की ओर पेश कर दूं। सन् १९१५ के अन्त में टाउन हाल में चीफ कमिश्नर के सभापतित्व में एक जल्सा महायुद्ध के लिये चन्दा एकत्रित करने के वास्ते किया गया था और ऐसे जलसे तमाम हिन्दुस्तान में हुये थे। उस समय दिल्ली के खास नेताओं में रायसाहिब वज़ीरसिंह की भी गणना होती थी। इसलिये इस जलसे में उनका भाषण बड़े जोर के साथ हुआ। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी राज्य से पहले हिन्दुस्तान में कत्ल, बर्बादी और लूटमार के अलावा और कुछ न था। लेकिन आज अंग्रेज़ी राज्य ने राम-राज और अशोक व अकबर के राज्य को भुला दिया है। शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं, इत्यादि इत्यादि। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह सरकार की सहायता करे। शायद उसी समय लाख या डेढ़ लाख के चन्दों का

ऐलान हो गया था। इस घटना से यह अवश्य मालूम होता है कि देहली के अमीर और रईस उस समय किस जहनीयत के थे, उसमें अब कांग्रेस आन्दोलन ने इतना फर्क अवश्य कर दिया है कि इस प्रकार के भाषण अब सुनने में नहीं आते हैं।

## मिस माइनर के प्रयत्न

इस वक्त से जून १६१६ तक कोई विशेष उल्लेखनीय घटना नहीं हुई। इसके अलावा कि मिस माइनर जो मिसेज एनी बीसेन्ट की खास अनुयायियों में से थीं, व्यक्तिगत तौर पर स्वयं राजनैतिक विचारों का पक्ष लेती रही हैं।

## मि० ए० आर० पोलक का भाषण

इसलिये सन १६१६ में जब मि० ए० आर० पोलक जो महात्मा गाँधी के दक्षिणी 'अफ्रीका के मित्र थे, देहली आये। क्योंकि यहाँ कोई राजनैतिक संस्था नहीं थी इसलिये मिस माइनर ने ला० प्यारेलाल मोटरवालों की सहायता से संगम थियेटर में एक सार्वजनिक सभा का प्रबन्ध किया। मिस माइनर इन्द्रप्रस्थ गर्ल्ज़ कालेज की हैड मिस्ट्रैस और थियोसोफिकल हलके की जीवन प्राण थीं।

मि० गोखले के जलसे के बाद से एक अर्द्धराजनैतिक प्रकार का यह पहला जलसा था। भाषण इसमें अंग्रेजी में हुये। ढाई सौ तीन सौ से अधिक उपस्थिति न थी जिसमें सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस और ४०-५० के लगभग पुलिस के सिपाही इत्यादि थे।

## मि० आसफअली राजनैतिक क्षेत्र में

इस जलसे के सभापति मि० आसफअली थे और यहां से मि० आसफअली का देहली में राजनैतिक जीवन प्रारम्भ होता है।

## होमरूल लीग की स्थापना

सन् १९१६ ही में मिसेज ऐनी बीसेन्ट ने होमरूल का आन्दोलन शुरु किया और वर्ष के अन्तिम मासों में मिस माइनर ने ला० प्यारेलाल मोटर वालों और रायबहादुर सुलतान सिंह की सहायता से लीग की एक शाख देहली में स्थापित की, और दरीबे के सिरे पर खूनी दरवाजे के एक कमरे पर उसका दफ़्तर खोला।

## वाचनालय का युवकों पर प्रभाव

उसके साथ ही कमरे पर एक वाचनालय भी खोला। इसका सब से पहला प्रभाव यह यह हुआ कि कुछ नवयुवक उस वाचनालय में अध्ययन के वास्ते रोज आने लगे।

## ला० शंकरलाल राजनैतिक क्षेत्र में

वह लोग कि जो लीग के प्रारम्भ में मेम्बर बने उन में निम्न के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं :—डा० अन्सारी, सरदार नानकसिंह, रामकिशनदास लकड़ीवाले, मि० अमृतलाल बोरा कम्पनीवाले, पं० शिवनारायण हकसार, ला० बैनीप्रसाद, मि० आसफअली और ला० शंकरलालजी, जो उसी जमाने में देहली में आये थे और इनका दिल्ली का राजनैतिक जीवन भी यहां से प्रारम्भ होता है। इनके अलावा १५—२० और होम-रूल लीग के मेम्बर हो गये।

## चीफ कमिश्नर और होम रूल लीग

मि० हेली जो बाद में सर मैलकम हेली हो गये वह दिल्ली के चीफ कमिश्नर थे, उनको यह सख्त नागवार गुजरा और उन्होंने मिस माइनर को बुला कर कहा कि यह शुरूआत उन्हीं की की हुई है और अगर उन्होंने इस राजनैतिक आन्दोलन से अपना सम्बन्ध विच्छेद न किया तो उनके स्कूल की सरकारी सहायता बन्द कर दी जायगी और बातचीत के बीच में कहा कि We hold the hilt end of the knife "चाकू का दस्ता हमारे हाथ में है" यानी सरकार जिस समय चाहे स्कूल को दी जाने वाली ग्रान्ट बन्द कर दे।

## इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स स्कूल की ग्रान्ट बन्द

यद्यपि इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स स्कूल मिस माइनर के जीवन उनके प्राणों से भी प्रिय था। परन्तु उन्होंने साफ जवाब दे दिया और स्कूल की ग्रान्ट रोक दी गई।

## वाचनालय में सी. आई. डी. वालों की भीड़

रीडिंग रूम में सी० आई० डी० की इतनी भीड़ रहने लगी कि असल पढ़ने वालों को स्थान मिलना भी कठिन हो गया।

## वाचनालय में आने वालों पर सी० आई० डी० वालों की कृपा

जो पढ़ने वाले रीडिंग रूम में जाते थे अगर उनमें कई नौजवान विद्यार्थी होते थे तो सी० आई० डी० वाले उन्हें घर तक पहुंचा आया करते थे। जिससे कई भयभीत होकर फिर वाचनालय में नहीं आते थे।

## बम्बई क्रानिकल में दिल्ली के समाचार

देहली में उस समय कोई समाचार-पत्र न था, परन्तु इन तमाम हालात का पूरा नकशा सप्ताह में या आवश्यकतानुसार "बम्बई क्रानिकल" में प्रकाशित होना शुरू हो गया था

और "वम्बई क्रानिकल" ने बड़ी सख्त टीका टिप्पणी दिल्ली के अधिकारियों पर शुरू कर दी।

## इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स कालिज की सहायता

इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स स्कूल के साथ इन घटनाओं के प्रकाशित होने से रचनात्मक सहानुभूति बहुत प्रकट हुई और स्कूल के प्रबन्धकों को दिल्ली के बाहर से हजारों की रकम मिली।

## पं० हृदयनाथ कुंजरू का भाषण

इसके थोड़े ही समय बाद पंडित हृदयनाथ कुंजरू दिल्ली आये और हकीम अजमल खां साहब के सभापतित्व में कम्पनी बाग में एक बड़ा आम जलसा हुआ जिसमें पन्डित कुंजरू ने बहुत ही सरल और अच्छी उर्दू में भाषण दिया, और होमरूल के आन्दोलन के सम्बन्ध में सरकारी वायदे खिलाफियों का जिक्र करते हुये बताया कि सरकार के वायदे शायर की प्रशंसा की सीमा में रहते हैं यानी "वह वायदा ही क्या जो वफा हो गया।"

## चीफ कमिश्नर की शान में सख्त शब्द

इन के बाद मि० आसफअली बैरिस्टर ने इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स स्कूल की सहायता बन्द करने के सम्बन्ध में कहा कि चीफ

कमिश्नर ने यह सख्त हिमाक़त की। इस समय के राजनैतिक भावों का इसी से अनुमान हो सकता है कि इधर तो जनता ने इस शब्द के प्रयोग को दिलेरी का प्रमाण समझा और उधर सरकारी हल्कों में इस पर सख्त टिप्पणी हुई। सर जोफरे मोन्ट मुरेन्शी ने जो दस दिन के लिये चीफ कमिश्नर हो गये थे, हकीम अजमल खां से यह शिकायत की कि आप के सभापतित्व में हैली साहब की अशोभनीय शब्दों से टीका टिप्पणी की गई है और उधर मि० आसफअली को बुलवा कर कहा कि "हिमाकत" शब्द चीफ कमिश्नर की शान में बहुत सख्त है। यही बात नरम शब्दों में कही जा सकती थी। किसी दूसरे अवसर पर भाषण करते हुये इन शब्दों को वापिस ले लेना चाहिये। इस घटना के दो ही रोज बाद एक और बड़ी विराट् सभा हुई और उसमें शेर और शायर की चासनी के साथ इस तमाम घटना को दोहराया।

## दिल्ली में विराट् सभायें

सन १९१६ के आखिर से देहली में सार्वजनिक सभायें होमरूल लीग की संरक्षकता में होनी शुरू हो गई थी और वास्तव में यह सभायें विशाल और दस दस हजार, बीस बीस हजार की उपस्थिति से होती थी। लोगों में एक नया जोश और शौक पैदा हो गया था।

## लखनऊ कांग्रेस में दिल्ली के प्रतिनिधि

सन १६१६ के दिसम्बर में लखनऊ में कांग्रेस और मुसलिम लीग के अधिवेशन साथ ही साथ हुये थे और कांग्रेस में भी नर्म और गर्म दल की पार्टियों में एकयता हो गई थी। सूरत की कांग्रेस से सन् १६१६ तक यह दोनों दल एक दूसरे से पृथक ही रहे थे।

परन्तु क्योंकि यह विचार किया जा रहा था कि नये सुधारों का प्रस्ताव गवर्नमेण्ट के सामने विचाराधीन है और भारतमन्त्री भी हिन्दुस्तान आने वाले हैं, तमाम राजनैतिक नेताओं ने यह अनुभव किया कि यह समय समझौते और एकयता का है। इसलिये कांग्रेस और लीग ने सर्वसम्मति से प्रान्तीय एक सत्तात्मक शासन की तजवीज बना कर प्रकाशित की। मिसेज एनी बीसेन्ट ने भी इसी प्रकार की लेकिन कुछ भिन्न तजवीज पेश की। इससे दिल्ली के राजनैतिक वातावरण में दसगुनी उन्नति हो गई। इस वर्ष देहली से ला० प्यारेलाल मोटर वाले और रायबहादुर सुलतानसिंह और कुछ अन्य सज्जन लखनऊ कांग्रेस में शरीक हुये थे।

## मौलाना आरिफ हस्वी कार्यक्षेत्र में

इसी अवसर पर लखनऊ में उर्दू कान्फ्रेन्स हुई थी और उस में दिल्ली से मौलाना आरिफ हस्वी गये थे।

# महायुद्ध के लिये दिल्ली में नेताओं की कानफरेन्स

सन १९१६ के अंतिम मासों में दिल्ली में महायुद्ध के सम्बन्ध में गवर्नमेंट ने देश के नेताओं और खास २ व्यक्तियों और रईसों की एक कानफरेन्स बुलाई जिसका उद्देश्य यह था कि हिन्दुस्तान से युद्ध के सम्बन्ध में हर प्रकार की सहायता प्राप्त की जाय। इस कानफरेन्स में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, मिसेज सरोजिनी नायडू और म० गांधी को भी दिल्ली में बुलाया गया था। अन्तिम समय पर लोकमान्य तिलक तो इस कानफरेन्स में किसी कारणवश सम्मिलित न हो सके, लेकिन म० गांधी इस कानफरेन्स में सम्मिलित हुए थे।

# म० गांधी और मिसेज नायडू का भाषण

यह पहला अवसर था कि म० गांधी और मिसेज सरोजिनी नायडू ने दिल्ली की सार्वजनिक सभा में भाषण दिये। यह जलसा पत्थर वाले कुए पर बनारसी कृष्णा थियेटर में हुआ था। मिसेज सरोजिनी नायडू का भाषण अंगरेजी में हुआ था और म० गांधी ने पहली बार हिन्दुस्तानी में भाषण दिया था। और क्योंकि उस समय महात्माजी अच्छी तरह हिन्दुस्तानी नहीं बोल सकते थे, उन्होंने यह कहा कि यह मेरे लिये पहला अवसर

है, मेरी त्रुटियों के लिये क्षमा किया जाय, लेकिन अब की बार जब देहली में आऊंगा उर्दू में बोलूँगा। यह एक बड़े आश्चर्य की बात है कि यद्यपि महात्माजी उस वक्त टूटी-फूटी उर्दू बोलते थे मगर आध घन्टे तक उनके भाषण के समय जनता सन्नाटे में बैठी रही।

## होमरूल लीग के कार्यकर्ता

सन १९१७ में बराबर बहुत से जलसे हुए डाक्टर अन्सारी होमरूल लीग के सभापति हो गये और सन १९१७ में ला० शंकरलाल भी बराबर होमरूल लीग के जलसों और जलूसों के कार्य में बड़े उत्साह से सम्मिलित हो गये। और उनके साथ पं० शिवनारायण हकमर, मा० शिवदत्त, ला० बेनीप्रसाद, ला० गुलजारीलाल, ला० टीकमचन्द, ला० मोहनलाल, ला० छीतरमल, सरदार नानकसिंह, ला० दलेलसिंह जौहरी, मि० प्रेमकिसन खन्ना एक ओर ,और मुसलिम रजाकारों की जमायत जो डा० अन्सारी के नेतृत्व में संगठित हुई थी, अलावा उन लोगों के जिनके नाम पहले ऊपर आ चुके हैं, दूसरी ओर बहुत ही जोश और परिश्रम से होमरूल लीग का काम करने लगे, और तमाम वर्ष देहली में राजनैतिक हलचल रही।

## रामलीला का जलूस नहीं निकला

सन १९१७ में अलावा उन जलसों के जो होमरूल लीग की

संरक्षता और एक सत्तात्मक शासन के पक्ष में होते थे, सितम्बर और अक्तूबर में और भी जलसे हुए। रामलीला और मोहर्रम एक ही वक्त में आकर पड़े। मगर इस कारण से जो रस्ता हकूमत ने तजवीज किया था हिन्दुओं को स्वीकार न था और पूराने रास्ते के खिलाफ था। इस लिये विरोध रूप हड़ताल करदी और दस दिन तक नगर में एक प्रकार का शोग और सनसनी रही। हकीम अजमलखां साहब ने अपने घर पर मुसलमानों को एकत्रित किया और यह प्रस्ताव पास कर दिया कि रामलीला का वही पुराना रास्ता रहना चाहिये। हिन्दू और मुसलमानों में यह भी समझौता हो गया कि महन्दी का जलूस रामलीला के जलूस से आध घन्टा पहले खतम हो जायगा और रामलीला का जलूस फिर अपने नियुक्त समय पर पुराने रास्ते से जायगा। मगर हकूमत ने ला० प्यारेलाल वकील से कहा कि जब तक हड़ताल न खुलेगी, उस समय तक हकूमत अपने पहले हुक्म को वापिस नहीं लेगी। परिणाम यह हुआ कि उस वर्ष हिन्दुओं ने रामलीला नहीं निकाली।

## सार्वजनिक स्थानों में जलसे बन्द

उसी जमाने में यह हुक्म भी हकूमत की ओर से निकला कि सार्वजनिक स्थानों में सार्वजनिक सभायें इत्यादि बिना पुलिस कप्तान की आज्ञा नहीं की जायंगीं, जब तक कि पुलिस कप्तान

को जलसे, जलूस और भाषण देने वालों के नाम से सूचित न कर दिया जाय और एक अवसर पर इस इत्तला के दे देने पर भी इजाजत नहीं मिली।

## भारतमन्त्री के आगमन की तय्यारी

वर्ष के अन्त में मि० मोन्टेग्यू भारतमन्त्री को दिल्ली आना था। सरकार ने यह प्रगट कर दिया कि इस अवसर पर वह नहीं चाहते कि उस समय "कोई तमाशा हो" यानि यह कि लोग उनका जलूसों और जलसों से स्वागत करें।

## अनियमित जिला कांग्रेस कमेटी की स्थापना

इसी समय में अनियमित तौर पर एक जिला कांग्रेस कमेटी भी बना ली गई थी। और ता० १० दिसम्बर सन् १९१७ को एक सार्वजनिक सभा में यह निश्चय हुआ कि आगामी वर्ष के लिए कांग्रेस और मुसलिम लीग को देहली में अधिवेशन करने का निमन्त्रण दिया जाय।

## दिल्ली एसोसियेशन की स्थापना

भारतमन्त्री देहली में आये और उनके आने से पहले ला० प्यारेलाल वकील के सभापतित्व में देहली ऐसोसियेशन

स्थापित हो गई। जिस का उद्देश्य प्रगट तौर पर इतना ही था कि वह देहली की ओर से भारतमन्त्री को एक अभिनन्दन-पत्र पेश करें। जैसा कि उसने किया और उसके बाद वह एसोसियेशन लुप्त हो गई। उन सैंकड़ों अभिनन्दन-पत्रों के मुकाबले में जो मि० मोनटीग्यो को पेश हुए, दिल्ली का अभिनन्दन-पत्र बिलकुल ही निराला था, जिस में अलावा और बातों के यह कहा गया था कि हिन्दुस्तान की नाबालगी का जमाना खत्म हो चुका है और अब बालिग हिन्दुस्तान अपना एक सत्तात्मक शासन का हक मांगता है। उस अभिनन्दन-पत्र के प्रारम्भ में एक फिकरा यह भी लिख दिया गया था कि यह दिल्ली वही दिल्ली है जो बहुत सी हकूमतों का पिंगूरा ( झूलना ) भी रही है और जिस में बड़ी बड़ी सलतनतें दफन भी हो गई हैं।

## दिल्ली की ओर से कांग्रेस को निमन्त्रण

कलकत्ते की कांग्रेस में देहली से रायबहादुर सुलतानसिंह, ला० प्यारेलाल मोटर वाले, ला० शंकरलाल, मि० आसफअली, पंडित शिवनारायण हक्सर और सरदार नानकसिंह और होमरूल लीग के कुछ अन्य सदस्य भी सम्मिलित हुये थे और रायबहादुरसुलतानसिंह ने दिल्ली की ओर से कांग्रेस को सन् १९१८ में अधिवेशन का निमन्त्रण दिया था। दिल्ली को

यह सन्मान कांग्रेस के इतिहास में पहली बार प्राप्त हुआ कि कांग्रेस ने यह निमन्त्रण स्वीकार किया

रायबहादुर सुलतानसिंह के अलावा मि० आसफअली को भी दो इसी अधिवेशन में भाषण करने के लिए अवसर मिला।

## प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की स्थापना

कांग्रेस से वापिस आकर पहला काम देहली में यह हुआ कि इन्डियन नेशनल कांग्रेस के सेक्रेटरी मि० गोकरणनाथ मिश्रा को निमन्त्रण दिया गया, उनकी उपस्थित में उनके आदेशानुसार रायबहादुर सुलतानसिंह की कोठी पर नियमानुसार दिल्ली प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की स्थापना हुई। इसके बाद ३३ वीं इन्डियन नेशनल कांग्रेस की स्वागतकारिणी कमेटी की स्थापना हुई।

## सन् १९१८ में कांग्रेस अधिवेशन की तय्यारियां

हकीम अजमलखां कांग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के और डाक्टर अन्सारी मुसलीम लीग की स्वागतकारिणी समिति के सभापति निर्वाचित हुए। इस समय देहली के कई वकील, डाक्टर, रहीस और अमीर कांग्रेस स्वागत कारिणी समित के पदाधिकारी चुने गए।

रायबहादुर सुलतानसिंह, ला० प्यारेलाल मोटर वाले, डाक्टर एम० ए० अन्सारी एम० डी०, एम० एस०, रायसाहिब चन्द्रिकाप्रसाद, मिस माइनर सुपरिन्टेडेन्ट हिन्दू गरल्ज़-हाईस्कूल, होनरेबिल ला० मधुसूदनदयाल, सेठ रामलाल, मि० के० सी० राय एसोसियेटेड प्रेस वाले, ला० बनवारीलाल रईस, ला० सत्यनारायण उपसभापति हुए।

रायसाहब ला० प्यारेलाल वकील, ला० श्रीराम बार० एट० ला०, ला० शिवनारायण बी० ए० एल० एल बी० प्लीडर, मि० एस० एम० बोस बी० ए० बी० एल०, प्लीडर, मि० अब्दुररहमान बी० ए० एल० एल० बी० प्लीडर, डाक्टर ए० रहमान एम० बी० सी० एच० बी०, जनरल सेक्रेटरी हुए।

मि० एम० के० आचार्या बी० ए० एल० टी०, ला० दुनीचन्द, ला० मनोहरलाल बी० ए० एल० एल० बी०, मि० गौरीशंकर भार्गवा, ला० रामकृपालसिंह बी० ए०, मि० चन्द्रपाल एम० ए० बार० एट० ला०, मि० बी० जी० भट्टाचार्य एम० ए० एल० एल० बी०, सेठ केदारनाथ गोयनका, लाला बुद्धप्रकाश एम० ए० एल० एल० बी०, ला० हज़ारीलाल जौहरी ला० बेनीप्रसाद, मि० आर० बी० सैन, बाबा हरदयालसिंह बी० ए० एल० एल० बी० प्लीडर, ला० किशनलाल बी० ए०, ला० बृजलाल बी० ए० एल० एल० बी० प्लीडर, ला० जवाहिरलाल, लाला नारायणदास ला० बिशनदयाल बी० ए०

एल० एल० बी० प्लीडर, ला० जवाहिरलाल, ला० नारायण दास, ला० बिशनदयाल बी० एल० बी०, सेठ लछमनदास, ला० शंकरलाल बी० ए०, ला० सूरजप्रसाद, ला० किशनदयाल बी० ए० एल० एल० बी०, मि० ताराचन्द बी० ए० एल० बी० ला० अमीरचन्द खोसला, ला० जमनादास बी० ए० एल० बी० पं० शिवनारायण हकसर एल० एम० ई०, मि० ए० एस० बोस, लाला चिमनस्वरूप बी० ए०, एल०, एल० बी०, ला० रंगीलाल बार-एट-ला, ला० बालकिसनदास, ला० मनोहरलाल अकाऊन्टेन्ट इलाहाबाद बैंक ज्वायन्ट सेक्रेटरी हुए।

ला० मनोहरलाल, और ला० बुलाकीदास गोटे वाले खजान्ची नियुक्त हुए।

इनके अलावा हाजी अब्दुलगफ्फार, मि० पी० मुकर्जी, मि० प्रभूदयाल एम० ए० एल, एल० बी०, रायसाहिब मिट्ठनलाल बी० ए० एल, एल० बी०, मि० पुष्कर नारायण महरा बी० ए० एल०, एल० बी०, मि० घीसूलाल एम० ए०, एल, एल० बी०, मि० चतुरबिहारी लाल, बी० ए०, एल,. एल० बी०, बा० श्रीकृष्णदास महेन्द्र, पं० शिवनारायण द्विवेदी, ला० शामलाल, ला० गुरनारायण खन्ना, ला० रंगबिहारीलाल बी० ए०, एल, एल० बी०, लाला माधोराम खन्ना, ला० रामकिसनदास, ला० बाबूमल, प्रोफेसर इन्द्र चन्द्रा, ला० रामसरनदास लाहरी, ला० हरगोविन्द प्रसाद निगम, ला० उमरावसिंह, सरदार नानक-

कताई बुनाई का एक दृश्य

सिंह, रायसाहिब मोतीसागर बी० ए०, एल, एल० बी०, डाक्टर आई० टी० मित्रा एल० एम० एस०, डाक्टर जे० के० सेन एल० एम० एस०, डाक्टर ए० सी० सेन एल० एम० एस०, पं० बासदेवप्रसाद, ला० बालाप्रसाद रईस, पं० प्यारेलाल, लाला प्यारेलाल, ला० जुगलकिशोर, रायबहादुर कन्हैयालाल, मि० ए० के० देसाई, ला० जगन्नाथसिंह, ला० लक्ष्मीनारायण बी० ए० एल, एल० बी०, मि० बदरूल इस्लाम बी० ए० एल, एल० बी०, बार-एट-लॉ, ला० मदनमोहनलाल, मि० हिम्मतसिंह, लाला बशेश्वरनाथ, पंडित सीताराम एम० ए० एल० एल० बी०, शेख अताउल्ला बी० ए० एल० एल० बी०, मि० नूरुद्दीन, सरदार प्रतापसिंह, ओनरेबिल पं० गोकरणनाथ मिश्रा एडवोकेट, मि० बी० एस० पुरी बी० ए० बार० एट० ला० कार्यकारिणी के सदस्य नियुक्त हुये।

इस के अलावा निम्न उपसमितियें भी बनाई गईं।

चन्दा एकत्रित करने वाली सब कमेटी—हज़ीकुलमुल्क हकीम मोहम्मद अजमलखां, रायबहादुर ला० सुलतानसिंह।

आर्थिक उपसमिति — रायबहादुर ला० सुलतानसिंह, रायसाहिब ला० प्यारेलाल।

पन्डाल सब कमेटी— रायबहादुर कन्हैयालाल, मि० के० ए० देसाई।

प्रचार उपसमिति—डाक्टर एम० ए० अन्सारी, हजीकुल-मुल्क हकीम मोहम्मद अजमलखां।

कार्यालय उपसमिति — मि० एस० एन० बोस, मि० अब्दुलरहमान।

स्वयंसेवक उपसमिति—ला० जगन्नाथसिंह।

बोर्ड उपसमिति—डाक्टर आई० टी० मित्रा, ला० लक्ष्मी-नारायण।

ड्राफ्टिंग उपसमिति—मि० के० सी० राय।

स्वागत उपसमिति— डाक्टर जे० के० सेन।

दिल्ली वालन्टीयरसकोर के निम्न पदाधिकारी चुने गये :—

केप्टीन—मि० श्रीराम बार० एट० लॉ०, वाइस केप्टेन मि० चन्द्रलाल बार० एट० ला०, मि० बी० एस० पुरी बार० एट० ला०, मि० ताराचन्द बी० ए० एल० एल० बी०, मि० अमीरचन्द खोसला, मि० कृष्णलाल बी० ए०, मि० जगन्नाथसिंह, मि० ईश्वरदास, मि० सूरजप्रसाद, तिब्बीया कालेज वालन्टीयरस केप्टेन, बम्बई होमरूल लीग वालन्टीयरस केप्टेन, दिल्ली होम-रूल लीग वालन्टीयरस केप्टेन, मेरठ वालएटीयरस कोर केप्टेन और मि० अब्दुररजाक।

खजांची – ला० रामप्रसाद और ला० रामगोपाल।

## प्रो० इन्द्र का दिल्ली में आगमन

इसी साल प्रोफेसर इन्द्र विद्या वाचस्पति भी दिल्ली आ गये थे और उन्होंने भी स्वागत कार्यों में भाग लिया। स्वागत कारिणी का कार्य बड़े जोर शोर से आरम्भ हो गया। स्वयंसेवक भरती होने लगे। सेवक मण्डली मि० श्रीराम बेरिस्टर के नेतृत्व में और कांग्रेसवालियन्टर मि० अमीरचन्द और मुसलिम रजाकार मि० मोहम्मद गालीब के नेतृत्व में कार्य करने लगे, और इस वर्ष के आरम्भ मे ही कार्य बड़े उत्साह से शुरू हो गया।

## रा० ब० कन्हैयालाल ने पंडाल बनाया

राय बहादुर कन्हैयालाल इन्जीनीयर ने पत्थरवाले कुएँ के मैदान में एक बड़ा विशाल पंडाल तैयार किया। जिसमें लगभग १४-१५ हजार सीटों का प्रबन्ध था। प्रतिनिधियों और स्वागत कारिणी के सदस्यों के वास्ते कुर्सियों और दर्शकों के वास्ते सर्कसों की तरह बेंचों वाली गेलरी का प्रबन्ध था।

## अजमेर मेरवाड़ राजपूताना दिल्ली कांग्रेस प्रान्त में

इस अधिवेशन में मि० श्रीराम बार-एट-लॉ और ला० मनोहरलाल बी० ए० एल, एल० बी० वकील दिल्ली अजमेर

मारवाड़ और ब्रिटिश राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी दिल्ली के सेक्रेटरी नियुक्त हुये।

## हबसी जासूस का जलसे में विघ्न

सन १९१७ से देहली के जलसों में भाषणों की शैली दिन प्रतिदिन कड़ी होती जाती थी। इससे स्थानीय सरकारी अधिकारी नाराज थे, और वह हुक्म जिसका ज़िक्र ऊपर आ चुका है, एक विशेष घटना के बाद से आरम्भ किया गया था। वह घटना यह थी कि पुलिस का एक हबसी जासूस एक विराट् जल्से के अवसर पर कम्पनी बाग के एक पेड़ पर चढ़ गया और वहां से उसने जल्से की कार्यवाही में गड़बड़ करनी आरम्भ करदी। जल्सा समाप्त होने पर कुछ व्यक्ति उस पेड़ के नीचे इकट्ठे हो गये और उस व्यक्ति को पेड़ पर से नीचे उतरने के लिये बाधित किया, जब वह नीचे उतर आया तो उसकी अच्छी आवभगत की।

## निजी मकानों में सार्वजनिक जल्से

इसके बाद हकूमत को यह एक अवसर हाथ आ गया और उसने जल्सों पर पाबन्दियाँ लगा दीं। इसके कारण सन १९१८ में जल्से क्या तो ला० लक्ष्मीनारायण की धर्मशाला में या ईश्वरभवन खारी बावली में या इसी प्रकार के अन्य निजी मकानों में होते थे।

## पं० नेकीराम शर्मा व खापड़ डे का भाषण

मार्च या अप्रैल सन १६१८ में ईश्वर भवन के एक जल्से में मि० खापड़ डे ने भी भाषण दिया और उस समय यह पहला अवसर था कि पं० नेकीराम शर्मा ने भी दिल्ली में भाषण दिया। क्योंकि उनका यह भाषण जनता ने बहुतपसन्द किया। इसलिये बाद में भी उनके कई भाषण हुए।

## मि० आसफअली और पं० नेकीराम शर्मा की जबान बन्दी

प्रत्यक्ष में सरकार पर यह प्रभाव था कि यदि पं० नेकीराम शर्मा और मि० आसफअली की ज़बान बन्द करदी जाय तो निश्चिन्तता हो जायगी। इसलिए ता० १५ जून सन १६१८ को मि० आसफअली और पं नेकीराम शर्मा को डिफेन्स आफ इंडिया एक्ट के मातहत यह आज्ञा दे दी गई कि सार्वजनिक सभाओं में भाषण न दिया करें।

## मि० आसफअली और पं२ नेकीराम पर मुकद्दमा

दो ही दिनों के बाद होमरूल लीग का वार्षिक अधिवेशन हुआ। जिसमें केवल लीग के ही सदस्य थे। बहुत से लोग

जल्से के दिन ही लीग के मेंबर बने और इस जल्से में उपरोक्त दोनों वक्ताओं ने अपने भाषण दिये क्योंकि यह सार्वजनिक जल्सा न था। इस पर ता० ८ जुलाई सन १६३५ को दोनों वक्ता गिरफ़्तार हुए। और उन पर मुकद्दमा चलाया गया। लेकिन ता० २३ अगस्त १६१८ को दोनों व्यक्ति बरी कर दिये गये। मि० स्पेन्स जो आजकल गर्वनमेंट आफ इंडिया लेजिस्लेटिव डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी हैं, खास इस मुकद्दमे के लिये दिल्ली आये थे। इस मुकद्दमे का देश में विशेष तौर पर अधिक चर्चा हुआ। क्योंकि इससे पहले विख्यात राजनैतिक मुकद्दमे केवल लोकमान्य तिलक और हसरत मोहानी पर चलाये गये थे।

## चांदनी चौक के घनदार पेड़ काटे गये

सन १६१७ के अन्त में चांदनीचौक की पटड़ी के दोनों ओर के पेड़ जिनकी कतार फतहपुरी से किले तक थी गिराये जा चुके थे। और इसके खिलाफ भी देहली में काफी चर्चा हुआ थां।

## राष्ट्रपति के जलूस पर पाबन्दी

इन कठिनाईयों और अड़चनों के बाद भी कांग्रेस का अधिवेशन बड़ी सफलता के साथ शांतिपूर्वक समाप्त हो गया। उस अधिवेशन के सभापति लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

चुने गये थे। परन्तु क्योंकि वह विलायत चले गये थे इसलिए उस अधिवेशन का सभापतित्व पं० मदनमोहन मालवीय जी ने किया। सभापति के जलूस निकालने की भी स्थानीय सरकार ने मनाही कर दी थी।

## हेलीइज्म

सन १६१७ से जो सख्तियें दिल्ली में हो रही थीं उनके कारण बम्बई क्रानीकल ने देहली की सरकार के रवैये का नाम "डेलीईज्म" रख दिया था।

## डाक्टर अंसारी का एडरेस जब्त

काँग्रेस और लीग दोनों के अधिवेशन बड़ी आबोताब से हुए मगर डाक्टर अंसारी साहब का स्वागतकारिणी समिति के सभापतित्व पद से दिया गया भाषण जो बहुत ही अच्छा और गठा हुआ था सरकार ने जब्त करार दे दिया।

## कांग्रेस अधिवेशन की चहल पहल

काँग्रेस के जमाने की चहल-पहल दिल्ली में देखने योग्य थी। वालन्टीयरों की भड़क और स्वागत कारिणी कमेटी के अधिकारियों के सुनहरी कारचोबी तमगे, पिंडाल की सजावट, गर्ज यह कि ऐसी चहल-पहल थी कि बादशाह की वर्ष गांठ के दरबार में भी होनी मुशकिल हैं।

## आल इंडिया म्यूजिक कान्फ्रेंस

इसी पन्डाल में नवाब रामपुर के सभापतित्व में आल-इण्डिया म्यूजिक कान्फ्रेंस ( संगीत सम्मेलन ) हुई। जिसमें लार्ड मेस्टन जो उस वक्त सर जेम्स मेस्टन थे समिलित हुए।

## स्टेटस सब्जेक्टस कान्फ्रेंस

इस अवसर पर स्टेटस सब्जेक्टस कान्फ्रेंस भी मि० एन० सी० केलकर के सभापतित्व में हुई थी।

## पांच नये अखबार

सन् १९१८ के अन्त में पांच अखबार भी दिल्ली से प्रकाशित होने आरम्भ हुए। एक तो कारी अब्बास हुसैन ने अखबार "कौम" निकला, जिसकी नीति कौम परवर थी, और एक अखबार "कांग्रेस" निकाला जिसका सम्पादन मौलाना आरिफहस्वी ने किया, और तीसरा अखबार हिन्दी का 'विजय' निकला, इसके सम्पादक प्रो० इन्द्र थे। चौथा अखबार उर्दू का 'फतह' निकला और पांचवा अखबार 'सुबह सितारा' था। इन अखबारों की फाइलों से उस समय की पूरी घटनायें मिल सकती हैं।

# पांचवां अध्याय

## सन् १९१९

सन् १९१९ दिल्ली के लिये ही नहीं बल्कि तमाम हिन्दुस्तान के लिये बड़ी परीक्षा का वर्ष था इस समय तक तो कांग्रेस एक प्रकार की वार्षिक प्रदर्शनी और पढ़े-लिखे व्यक्तियों के लिये सजीदा किस्म की तफरीह का अवसर होती थी। जो भी जरा शिक्षित हिन्दुस्तानी थे, इसमें शौक से सम्मिलित होते थे। लेकिन इन शौकीनों के कुर्बानी के भावों और रचनात्म कार्य की शक्ति की परीक्षा नहीं हुई थी।

## हरकौम का स्वराज्य का अधिकार माना जा चुका था

सन् १६१७ में युद्ध समाप्त हो चुका था। जर्मनी के साथ ही तुर्की की भी पराजय हो चुकी थी। रूस में प्रजातन्त्र स्थापित हो चुका था और विरसाई के सुलहनामों का मामला पेश था। प्रेसीडेन्ट विल्सन ने १० पुआंट पेश कर दिये थे, और हर कौम का स्वराज्य का अधिकार माना जा चुका था। इधर हिन्दुस्तान के लिये नये सुधारों की घोषणा भी हो चुकी थी, और लोग उसकी टीका-टिप्पणी में व्यस्त थे। दूसरी ओर हिन्दुस्तान के मुसलमान जजीर-तुल-अरब को स्वतन्त्र रखने और खिलाफत को सुरक्षित बनाने के सवाल पर सख्त बेचैन थे।

## रोलट बिल से हलचल

इस सब पर तुर्रा यह हुआ कि रोल्टबिल, जिन्हें इस समय हिन्दुस्तानी नेता मनुष्यत्व के अधिकार के लिये सब में जहरीला समझते थे, सामने आ चुके थे। इन घटनाओं का मिलजुल कर यह प्रभाव हुआ कि हिन्दू और मुसलमान दोनों में तमाम देश में सख्त हलचल और बेचनी पैदा हो गई थी, और दोनों संगठित तौर पर एक आवाज निकाल रहे थे।

## रोलट बिल के विरोध में गांधी जी की घोषणा

इसी अवसर पर महात्मा गांधी ने जो अभीतक मि० गांधी थे और वास्तव में हिन्दुस्तान के राजनैतिक इतिहास में उनका सीधा कदम नहीं आया था, रोल्ट बिल के विरोध में घोषणा की कि ता० ३० मार्च सन १९१९ को तमाम हिन्दुस्तान में एक हड़ताल होनी चाहिये और जुलूस निकलने चाहिये, और शाम को जल्से में रोल्ट बिलों के विरोध में भाषण होने चाहिये।

## ३० मार्च की हड़ताल

देहली में ता० ३० मार्च की हड़ताल का राष्ट्रीय कार्य-कर्ताओं ने, जिसमें लाला शंकरलाल का नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय है, प्रबन्ध कर लिया था। इसके बाद दूसरी घोषणा निकली कि हड़ताल ६ अप्रैल सन १९१९ को होनी चाहिये। लेकिन दिल्ली का तमाम प्रबन्ध पूरा था इस कारण से यहां ३० मार्च को बड़ी पूरी हड़ताल हुई। इसमें तमाम हिन्दू और मुसलमान पूरे तौर पर शरीक थे और तमाम शहर का कारोबार गाड़ी, तांगे, ट्राम इत्यादि कुल बन्द थे, लेकिन शहर भर में लोगों की अपार भीड़ थी।

कुछ लोगों को स्टेशन के दुकानदारों का खयाल आया और कुछ वालंटियर वहां गये और वहां के दो-एक

फल बेचने वालों से उनकी कहा सुनी हो गई कि इतने ही में पैदल व सवार पुलिस की पार्टियां पहुंच गईं। जिला मजिस्ट्रेट व पुलिस आफीसर भी पहुंच गये।

## गोली चली

इससे भीड़ और बढ़ गयी और इतने ही में सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ने शिकायत की कि एक रोड़ा उनके लगा। और मि० करी जिला मजिस्ट्रेट ने फायर करने का हुक्म दे दिया। पुलिस ने गोली चलाई, कुछ व्यक्ति भीड़ के जख्मी हुये और इसके बाद कुछ तितर-बितर हो गये और बाकियों को घुड़सवारों ने दबाकर कम्पनी बाग में धकेल दिया। यह समाचार शहर में आग की तरह फैल गया। और लोगों के जोश व उत्साह का ठिकाना नहीं रहा। उस दिन भीड़ पर तीन बार गोली चलाई गई, और चांदनीचौक में घन्टाघर के नीचे टाउनहाल के सामने से अंग्रेजी फौज ने फायर किये।

## १८ दिन की हड़ताल

अट्ठारह दिन तक शहर में हड़ताल रही और सख्त उत्तेजना बेचैनी और सख्तियां रहीं। इन अठारह दिन में दो बार फिर गोली चलाई गई एक बार बिल्लीमारान के सामने और एक बार और। इस हड़ताल के बीच में जो नाम विशेषता के साथ गव-

र्नमेंट ने हड़ताल जारी रखने वालों के बयान किये उनमें ला० शंकरलाल और मौलाना अब्दुल्ला चूड़ीवाले ( जो उस वक्त चूड़ीवाले कहलाते थे ) के नाम उल्लेखनीय हैं।

## ६ अप्रैल की हड़ताल

६ अप्रैल के जलसे में तो एक लाख के करीब भीड़ थी और इसमें सिकन्दराबाद, मेरठ, रोहतक रिवाड़ी और सहारनपुर आदि के भी बहुत से लोग आये हुए थे।

यदि इन १८ दिन की घटनाओं को विवरण के साथ लिखा जाय तो पृथक पुस्तक की आवश्यकता होगी। स्वामी श्रद्धानन्द, हकीम अजमलखाँ, डाक्टर एम० ए० अन्सारी, रायबहादुर सुलतानसिंह जैन, ला० प्यारेलाल जैन, एडवोकेट, मि० अब्दुल रहमान, ला० शंकरलाल, पं० शिवनारायण हक्सर, मि० शुऐब कुरैसी और प्रो० इन्द्र के नाम विशेषतौर पर उल्लेखनीय है कि उनके परिश्रम से १८ दिन के बाद हड़ताल खुली।

## कार्यकर्ताओं को विचित्र आज्ञा

इसी हड़ताल के दौरान में डिप्टी कमिश्नर ने १४ आदमियों को यह हुक्म जारी किया कि वह स्पेशल कान्सटेबिल का काम करें, और अन्य कई आपत्तिजनक आज्ञायें भी जैसे कोतवाली में हाजरी देना, पुलिस लेन में रहना, पुलिस का बेज

लगाना, इत्यादि। और इन चौदह आदमियों में ला० प्यारेलाल वकील, मि० आसफअली, मि० फकरूद्दीन, पं० जगन्नाथ, इत्यादि शरीक थे।

## आज्ञा-पालन का विचित्र ढंग

इन आज्ञाओं का किस प्रकार से पालन हुआ उसका भी एक उदाहरण यहां दे देना अनुचित न होगा। मि० आसफ-अली को जब स्पेशल कान्सटेबिल बनाने का हुक्म मिला तो वह दोपहर को दिल्ली डिस्ट्रिक्ट जेल पर गये और सिपाही से कहा दर्वाजा खोलो। सिपाही ने पूछा आप कौन हैं? क्यों आये हैं, इत्यादि। इस पर आपने यही उत्तर देकर कि मैं स्पेशल कांस-टेबिल हूं, अन्दर चले गये, और जेल के रजिस्टर कागजात इत्यादि चीजों की थोड़ी देर तक देखा भाल कर लेने के बाद उन पर अपनी सम्मति बताकर चले आये थे। जब सायंकाल इस घटना का समाचार डिप्टी कमिश्नर को मिला तो वह बहुत घबराये और उन्होंने दोपहर को उन्हें बुलाकर कहा कि यह क्या कर आये।

इस घटना को जिसने सुना वह हंस २ कर लोट-पोट हो गया। इससे अधिकारी भी सावधान हो गये और फिर शायद इस प्रकार का नोटिस किसी राष्ट्रीय कार्यकर्ता को नहीं दिया गया।

## महात्मा गांधी दिल्ली नहीं आ सके

ता० १० अप्रैल को अमृतसर में डाक्टर सत्यपाल और डाक्टर सैफुद्दीन किचलू गिरफ्तार हुए और वहां गोली चली। इस सम्बन्ध में महात्मा गांधी दिल्ली और अमृतसर जाने के अभिप्राय से फरीदाबाद तक पहुंचे, और वहां से उन्हें सरकारी हुक्म से वापिस कर दिया गया। पंजाब में मार्शल ला का ऐलान हो गया। ता० १३ अप्रैल को जलीयांवाले बाग की घटना हुई। ६ अप्रैल की हड़ताल के सम्बन्ध में देश के अन्य स्थानों पर भी ऐसी ही घटनायें घटीं। इन तमाम घटनाओं का देहली पर प्रतिदिन असर पड़ता गया और किसी तरह हड़ताल खुलने में न आती थी।

## सी० आई० डी० इन्सपेक्टर पर हमला

ता० १४ अप्रैल को एडवर्डपार्क में एक जलसा हुआ। जिसमें मुहम्मद फकीर इन्सपैक्टर सी० आई० डी० पर कुछ लोगों ने हमला किया और पिस्तोल छीन लिया।

## ला० शंकरलाल डाके के अभियोग में गिरफ़्तार

इस सम्बन्ध में ला० शंकरलाल और तीन अन्य व्यक्ति गिरफ़्तार हुए और मोलवी अब्दुलमजीद को मफरूर करार दिया

गया, और उन पर डकैती का मुकद्दमा चलाया गया। इस मुकद्दमे की बड़ी चर्चा हुई और शहर में सनसनी फल गई। मुकद्दमे की पैरवी के लिये मि० देशमुख मि० अभयंकर, और मि० सी० आर० दास बाहर से आये, और देहली से मि० आसफअली, मि० एस० एन० बोस इत्यादि अन्य वकीलों ने पैरवी की। बहुत समय तक मुकद्दमा चलने के बाद ला० शंकरलाल बरी हो गये, और बाकी अभियुक्तों को सजायें हो गयीं।

## महात्मा गान्धी दिल्ली में

यहाँ यह बयान करना आवश्यक है कि रोल्ट बिलों के ऐजीटेशन के सम्बन्ध में महात्मा गांधी ने सत्याग्रह कमेटी की घोषणा करदी थी। और उसी सम्बन्ध में जनवरी सन् १९१९ में वह देहली आये और सेन्ट स्टीफन्स कालेज के प्रिन्सपिल मि० रुद्रा के मकान पर कुछ व्यक्तियों को एकत्रित किया गया।

## सत्याग्रह कमेटी की स्थापना

उनके सामने सत्याग्रह के उद्देश्य पेश किये और सत्याग्रह कमेटी स्थापित हुई। जिसके कुल १५ सदस्य बने। जिन में स्वामी श्रद्धानन्द, ला० शंकरलाल, डाक्टर अन्सारी, पं० शिवनारायण हकसर, मि० आसफअली और अन्य होम-

गान्धी जी के दर्शनों के लिये उमड़ी हुई जनता का एक दृश्य
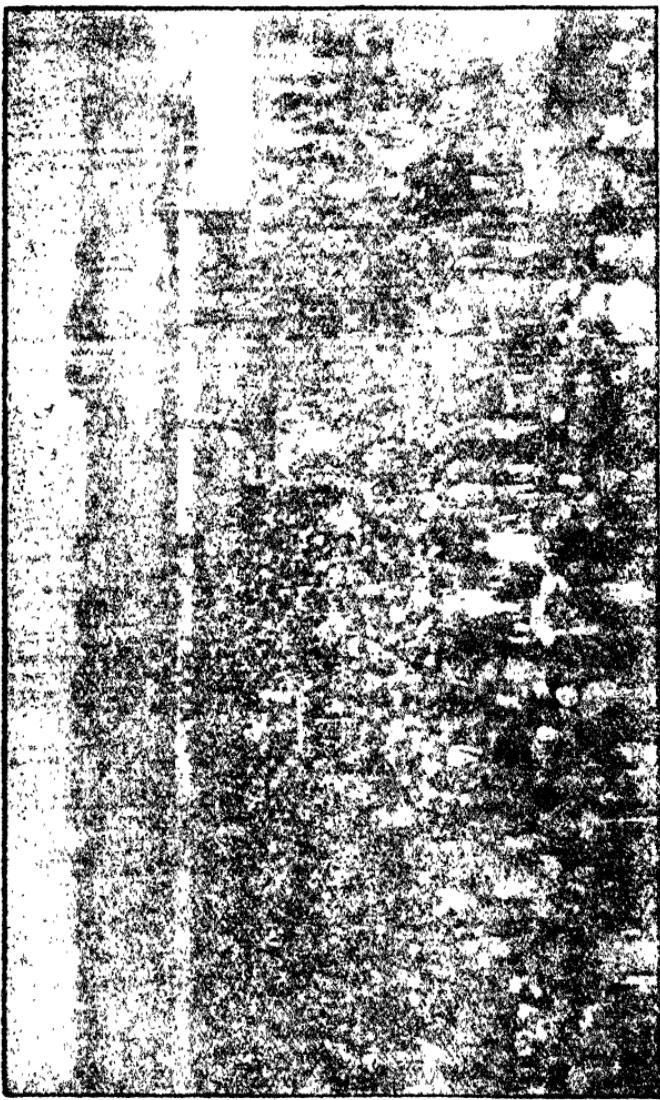
रूल लीग के मेम्बर थे और ता० ३० मार्च की हड़ताल वास्तव में सत्याग्रह कमेटी की संरक्षता में ही हुई थी।

३० मार्च को गोली चलने के अवसर पर दस बारह के करीब व्यक्ति मरे थे और बहुत से जख्मी हुये थे। उस के बाद जो गोली चलीं उन में भी कई मरे और कई जख्मी हुये थे।

## शहीदों की स्मृति में शहीद-हाल की स्थापना

इन शहीदों की स्थाई स्मृति बनाने के लिये यह निश्चय हुआ कि चन्दा जमा किया जाय और शहीद हाल के नाम से सार्वजनिक सभाओं के लिये कोई पब्लिक हाल बनाया जाय। स्वामी श्रद्धानन्द और हकीम अजमलखां की संरक्षता में ला० शंकरलाल और अन्य होमरूल लीग के सदस्यों ने चन्दा जमा करना शुरू किया। वालन्टीयरस काले कपड़े पहन कर और झोली डाल कर शहर में चन्दा जमा करने के लिये निकलते थे और यह फेरियां कई सप्ताह तक जारी रहीं। दुकान दुकान और मकान मकान चंदा हुआ। तितालीस हज़ार रुपये के करीब चदा एकत्रित हुआ। स्वामीजी ने सेठ रग्घूमल लोहियों से एक लाख का वायदा लिया, जो उन्होंने धर्मादे के रुपयों में से देना स्वीकार किया और इसी में से पचास हजार रुपया नकद शहीद हाल के लिये स्वामीजी को दे दिया। एक ट्रस्ट की कमेटी बनाई गई जिस में स्वामी श्रद्धानन्द, 'हकीम अजमलखां,

रायबहादुर सुलतानसिंह, ला० प्यारेलाल मोटर वाले, डाक्टर अन्सारी, ला० हज़ारीमल जौहरी और अन्य कई व्यक्ति ट्रस्टी बनाये गये। पाटौदी हाऊस वाली जमीन शहीदहाल के लिये एक लाख कुछ हजार रुपये में रायबहादुर सुलतानसिंह और प्यारेलाल मोटर वालों से खरीदी गई और सन् १९२५ तक वह शहीदहाल-गांधी नगर के नाम से कांग्रेस के कब्जे में रहा और इस में तमाम सार्वजनिक सभायें और कान्फ्रेन्सें इत्यादि होती रहीं।

## शहीद हाल के लिये तिरानवें हजार रुपया दिया जा चुका

लेकिन क्योंकि शहीदहाल की कुल रकम में से तिरानवें हजार रुपया अदा हुआ था, इसलिये शेष बारह हजार के बदले इस जमीन को रायबहादुर सुलतानसिंह और ला० प्यारेलाल मोटर वालों के हाथ रहन रख दिया गया।

## शहीद-हाल रहन रक्खा गया

कुछ समय बाद इस जायदाद का एक भाग आर्यसमाज अनाथालय को किराए पर दे दिया गया। १९२५ में रायबहादुर सुलतानसिंह से यह रहन इस प्रकार छुड़ाया गया कि अनाथालय

की रकम में मे कर्ज लेकर उनको दे दी गई, और ता० १५ मई सन १९२५ को रहननामा अनाथालय के नाम कर दिया गया।

यह जिक्र हम ने इस स्थान पर इसलिये कर दिया है कि शहीद हाल के मामले जो अब लोगों की याद से निकलते जाते हैं, जड़ से ही कहीं बिलकुल गायब न हो जायें।

दिल्ली और पंजाब की घटनाओं के बाद देश में बहुत ही जबरदस्त चहलपहल पैदा हो गई, और देहली में भी सख्तियों का दौर दौरा बढ़ गया।

## ६ अप्रैल की विराट सभा

६ अप्रैल की हड़ताल के सिलसिले में तमाम हिन्दुस्तान में ऐसा प्रदर्शन हुआ कि जिसका दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है।

जैसे कि देहली में गोली चली और अमृतसर में जलियांवाला बाग, लाहौर, गुजरांवाला, गुजरात और पंजाब के दूसरे भागों में अहमदाबाद बम्बई, और देश के अन्य कई भागों में, इसी प्रकार की वारदातें पेश आई।

## हिन्दू-मुसलिम प्रेम का उमड़ता हुआ दृश्य

इस वर्ष की प्रारम्भ की घटनाओं में यह याद रखना भी आवश्यक है कि ३० मार्च की गोली चलने के बाद देहली में

हिन्दू-मुसलिम एकता के जो दृश्य देखने में आये वह इस बात का प्रमाण हैं कि वास्तव में वह मनुष्यत्व की एकता जिसकी सोतें साम्प्रदायिक और अन्य सतहों से बहुत गहरी हैं, सम्मिलित और सब की विपत्ति के समय में चश्मों की तरह उबल कर सतह के ऊपर आ जाती हैं। उन दिनों में हजारों हिन्दू और मुसलमान बिना धार्मिक व सामाजिक भेदभाव के एक दूसरे से कन्धे से कन्धा मिलाकर घूमा करते थे, और जलूसों में सम्मिलित हुआ करते थे, और एक दूसरे के घरबार व माताओं बहनों की इज्जत करते थे।

## १८ दिन की हड़ताल में कोई चोरी नहीं

उस अठारह दिन की हड़ताल के समय में तीन दिन ऐसे आये कि पुलिसने अपना पहरा रात को शहर के गली कूंचों से हटा लिया और गली २ कूंच २ में वालन्टियरों ने पहरे दिये और यह एक आश्चर्यजनक घटना है कि उन तीन दिनों में किसी दुकान या मकान का भी ताला नहीं टूटा। प्रचलित तो यह बात थी कि उस अठारह दिन की हड़ताल में कहीं भी एक चोरी नहीं हुई।

## शहीदों की अर्थियों के जलूस

अस्सी अस्सी हजार के जलूस निकले, अर्थियों और जनाजों के साथ हिन्दू और मुसलमान सब होते थे, और ऐसे भी दृश्य

देखने में आये कि एक ही बरतन से हिन्दू मुसलमान पानी पीते थे।

## जामा मसजिद में स्वामी श्रद्धानन्द का भाषण

इसी जोश व उत्साह के समय में तारीख ४ अप्रैल को जामा मसजिद में हिन्दू और मुसलमान दोनों एक जलसे में एकत्रित हुये थे और इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द ने जामा मसजिद के मुकब्बर पर से राष्ट्रीय एक्यता पर भाषण दिया। दो ही दिन बाद एक और अवसर पर तारीख ६ अप्रैल को इसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द का भाषण फतहपुरी मसजिद में हुआ।

## पुलिस की गोलियों से कौन कौन मरा

तारीख ३० मार्च और १७ अप्रैल को जो पुलिस ने गोलियाँ चलाईं उनसे बयान किया जाता है कि ११ आदमी मरे जिन में से ७ के नाम तो मिलते हैं और शेष ६ नामों का पता नहीं चल सका। यह सात नाम निम्न हैं:—(१) श्री असमत उल्ला खाँ हसनपुरी, (२) मि० रामचन्द्र (उमर ३५ बरस), (३) मि० रामस्वरूप, (४) श्री अब्दुलगनी (उमर ३१ बरस), (५) मि० राधेश्याम (उमर २८ बरस), (६) मि० रामकृष्ण (उमर २४ बरस), (७) मि० चन्द्रभान सुपुत्र छिद्दामल (उमर ३० बरस)

## सस्ती दुकानें और सदाव्रत

हड़ताल के अवसर पर दानी सज्जनों ने जनता की सुविधा के वास्ते सस्ते भावों पर चीजें बेचने वाली दुकानें और सदावृत खोल दिये थे। ला० परशराम हरनन्दराय कटड़ा तम्बाकू वालों ने भी एक बड़ा सदावृत लगा दिया था।

## रेलों की हड़ताल

पंजाब, देश व नगरों की हलचल के कारण व कुछ रेलों के कर्मचारियों के हड़ताल कर देने के कारण कई स्थानों पर रेलें रुक गईं। देहली के स्टेशन पर भी उन यात्रियों को जो वहां एकत्रित हो गये थे, आराम पहुँचाने के लिये लोगों ने तरह तरह के प्रबन्ध किये और उन्हें खाना पीना पहुंचाया।

## हन्टर कमेटी के सामने गवाहियां

गवर्नमेंट की ओर से हन्टर कमेटी का ऐलान हुआ कि वह तमाम इन घटनाओं की तहकीकात करे। पहले कांग्रेस ने यह फैसला किया कि इस कमेटी के सामने गवाहियां पेश की जायं, और कांग्रेस का केस पेश करने के लिये मि० सी० आर० दास मुकर्रर हुए। और देहली का केस पेश करने के लिये मि० आसफअली, मि० सी० आर० दास के साथ पेश हुए। हकीम

अजमलखां, डा० अन्सारी, ला० शंकरलाल, मौलाना अब्दुल्ला, ला० प्यारेलाल, रायबहादुर सुलतानसिंह, और बहुत से कांग्रेसियों की कमेटी के सामने गवाहियें हुईं।

## म० गांधी दिल्ली में

म० गांधी इस अवसर पर देहली आये और मि० रुद्रा के यहां ठहरे और देहली के केस की पूरी निगरानी की।

## हन्टर कमेटी का बहिष्कार

मगर देहली का केस पेश करने के बाद कांग्रेस ने हन्टर कमेटी का बायकाट कर दिया, और खुद अपनी तहकीकाती कमेटी पं० मोतीलाल नेहरू के सभापतित्व में स्थापित करदी। इस वर्ष कांग्रेस और लीग के अधिवेशन अमृतसर में होने निश्चित हुए। पं० मोतीलाल नेहरू कांग्रेस के और हकीम अजमल खां लीग के सभापति चुने गये।

## खिलाफत कानफरेन्स का अधिवेशन

इस वर्ष नवम्बर के महीने में खिलाफत कानफरेन्स का पहला अधिवेशन बड़ी शान से देहली संगम थियेटर में हुआ। हकीम अजमलखां साहब उसकी स्वागत कारिणी के सदस्य और मौलाना अहमद सईद और मि० आसफअली सेक्रेटरी

नियुक्त हुए। इस अधिवेशन की चन्द विशेषतायें वर्णन करने योग्य हैं।

इस अधिवेशन के सभापति मौलवी फजलुलहक कलकत्ते वाले थे। म० गांधी पं० जवाहरलाल नेहरू, पं० कृष्णकांत मालवीय, और चन्द हिन्दू नेता भी इस अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे। इस अधिवेशन की विशेषता यह थी कि नौजवानदल बायकाट का प्रस्ताव पास करना चाहता था। महात्मा जी ने उसका विरोध किया और बजाय इसके नान को-आपरेशन का एक प्रस्ताव जिसको बाद में तर्कमवालात, अदमतावन, और असहयोग, नामिल वतन, इत्यादि नामों से बाद में देश में ख्याति हुई और सामने आया।

## महात्मा जी और असहयोग

यह पहला अवसर है कि हिन्दुस्तान के सामने महात्मा जी ने नानकोआपरेशन का ख्याल पेश किया। महात्मा जी के विरोध के बाद भी कानफरेन्स ने बायकाट का प्रस्ताव पास कर दिया और नानकोआपरेशन का भी। इन दोनों विषयों पर इस कानफरेन्स में महात्मा जी के मार्के के भाषण हुए थे। इस समय तक लोग नान कोआपरेशन या अदमतावन को न समझते थे, और न उनके ख्याल में यह बात साफ तौर पर आई थी कि उसकी क्या २ शक्लें हो सकती हैं।

## हिन्दू नेताओं की मीटिंग

इस कानफरेन्स के बाद बल्कि कांग्रेस और लीग के अधिवेशनों के बाद जो अमृतसर में हुए थे, फरवरी सन १९२० में औरएक हिन्दू मुसलिम नेताओं का जलसा डाक्टर अन्सारी और हकीम अजमलखां के मकानों पर हुआ। जिसमें ला० लाजपतराय, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक और महात्मा जी भी सम्मिलित हुए थे। इसमें असहयोग की चार मदें निश्चित की गयीं।

## अली भाइयों का अपूर्व स्वागत

१६ दिसम्बर सन् १९१६ में अलीभाई रिहा होकर अमृतसर कांग्रेस में सम्मिलित होने के लिये देहली पहुंचे, यहां पर उनके जलूस और उनको अभिनन्दनपत्र देने का प्रबन्ध किया गया। इस अवसर पर मौलाना अब्दुल्ला का नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय है क्योंकि इस सम्बन्ध में उनके जलूस निकालने तथा अभिनन्दनपत्र देने का तमाम कार्य इनके ही सुपुर्द था।

घन्टाघर पर किले की ओर एक प्लेटफार्म जहाज की शक्ल का बनाया गया था, जिसका नाम एस० एस० लिबर्टी था। तमाम शहर के बाजारों में दर्वाजे बनवाये गये थे और तमाम दुकानें सजाई गयीं और मोहल्ले २ में स्वागत करने और प्रशंसा

पत्र देने का प्रबन्ध किया गया। दिल्ली के इतिहास में यह जलूस अपना उदाहरण आप ही रखता था। केवल एक ही जलूस इसके बाद और ऐसा निकला था और वह म० गांधी का था, जो इसके ही लगभग था। मगर जिस शान शौकत का प्रबन्ध अलीभाइयों का इस अवसर पर हुआ था, वह न देहली को उससे पहले और न उसके बाद देखना प्राप्त हुआ। लोगों ने इसके अलावा और प्रकार के स्वागतों के सामने, रुपयों और अशर्फियों के हार इन दोनों भाइयों के गलों में डाले। कूंचे २ और बाजार २ में जलूस फिरा। इस अवसर पर देहली वालों की ओर से ख्वाजा हसन निज़ामी ने ऐडरस पढ़ा।

## स्वदेशी स्टोरों का उद्घाटन

इसी वर्ष में और भी घटनायें ऐसी हैं जिनका जिक्र करना आवश्यक मालूम होता है। ला० शंकरलाल की कोशिशों और रायबहादुर सुलतानसिंह, डा० अन्सारी, हकीम अजमलखाँ, ला० प्यारेलाल मोटर वाले और कुछ अन्य सज्जनों की सहायता से देहली में चांदनीचौक में स्वदेशी स्टोर की नींव पड़ी और जिसका उद्घाटन म० गांधी के हाथों द्वारा हुआ। एक और स्टोर पं० हरदत्त की कोशिशों से खारीबावली में खुला और उसका उद्घाटन भी म० गांधी के हाथों द्वारा हुआ। यह पहला स्टोर था जिसमें करघों को लगाया गया था।

देहली वालों की गफलत शोचनीय है कि आज यह स्टोर देहली में काम नहीं कर रहे, वरना वास्तव में स्वदेशी का वह आन्दोलन जो कि सन् १९०५ में बंगाल में आरम्भ हुआ था, यदि उत्तरी भारत में लोगों की गफलत उसके रास्ते में रुकावट न बन जाती तो आज इस प्रकार के स्टोर देहली जैसी मण्डी में बीसियों और पचासों होने चाहियें थे, और बड़ी सफलता से चलने चाहिये थे।

## गौ-रक्षा के प्रयत्न

हिन्दू मुसलिम एक्यता के सम्बन्ध में दिल्ली के मुसलिम नेताओं ने इसे अनुभव करना शुरू किया कि अगर गौ-रक्षा के सम्बन्ध में कोई कदम उठाया जाय तो वह सब हिन्दुस्तानियों के वातावरण पर बहुत बड़ा असर डालेगा। विशेषता के साथ हकीम अजमलखां और उनके अनुयायी इस आन्दोलन के संचालक थे। इसलिए वह पत्र जो हिन्दू नेताओं को खिलाफत कान्फ्रेन्स में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रण के वास्ते गया था। उस में मि० आसफअली ने यह भी लिखा था कि "इस अवसर पर यह भी उम्मेद की जाती है कि गऊ-रक्षा के सम्बन्ध में विचार हो"। इस लिए इस का हवाला महात्मा गांधी जी ने अपनी आत्म-कथा पुस्तक में दिया है।

लेकिन क्योंकि हकीम अजमलखां इस विचार को विशेष तौर पर मुसलिम लीग में सभापति की हैसियत से अपने प्रेसीडेन्शियल एडरेस में सम्मिलित करना चाहते थे, इस लिए खिलाफत कान्फ्रेन्स के अवसर पर इस मामले को स्थगित कर दिया गया। देवबन्द व अन्य स्थानों के उलमाओं से भी इस में परामर्श किया गया।

## हकीम अजमलखां गाय की कुर्बानी पर

अमृतसर में हकीम अजमलखां ने अपने एडरेस में इस मामले पर जो कुछ कहा उस का विवरण यह था कि " इस बात का लिहाज रखते हुए कि हिन्दुओं को गौ-रक्षा से खास दिलचस्पी है, मुसलमानों का कर्तव्य है कि वह बकरा ईद के अवसर पर कुर्बानी के लिए जहां तक सम्भव हो दूसरे जानवरों को तर्जीह दें।

## बकरा ईद पर मुसलमानों का आदर्श कार्य

इस आंदोलन का यह परिणाम हुआ कि सन १९१९ १९२० और १९२१ में बकरा ईद के अवसर पर देहली के कमेले में, जहां प्रत्येक वर्ष ३०० से अधिक गाय ज़िबह होती थीं, वहां केवल २०—२२ गायें रह गईं। और यह भी शायद फौज की जरूरत के वास्ते।

इस को सफल बनाने में मौलाना अब्दुल्ला, मौलवी ताजुद्दीन, कारी अब्बास हुसैन, अब्दुल अजीज़ अन्सारी, मौलाना आरिफ हस्वी के नाम बयान करने योग्य हैं। और मौलाना अब्दुल्ला और मौलाना आरिफ हस्वी की कोशिशें विशेषतः के साथ बहुत ही बड़ी थीं।

## मजदूरों का गाय की कुरबानी के विरुद्ध आदर्श कार्य

इस लिए एक अवसर पर यह घटना हुई कि किसी व्यक्ति ने यह समझ कर कि अधिकारी इस मे प्रसन्न होंगे, सब प्रयत्नों के बाद भी एक गाय जिबह कर डाली थी, लेकिन उसको लेजाने के वास्ते एक भी मजदूर नहीं मिला। तब उस के लेजाने के लिए एक ठेला किराये पर किया, मगर दूसरे ठेले वाले ने आकर यह कहते हुए, उस के पहिये निकाल लिये कि यह पहिये मेरे हैं। इस घटना से उस समय के मुसलमानों के राष्ट्रीय और एक्यता के भावों का अनुमान लगाया जा सकता है।

## युद्ध-सन्धि दिवस का बहिष्कार

इसी वर्ष युद्ध-सन्धि का समारोह मनाने के लिए गवर्नमेंट ने फसला किया लेकिन क्योंकि अभी तक तुर्कों से सुलह नहीं हुई थी

इसलिए देहली में यह फैसला हुआ कि सन्धि समारोह का विरोध किया जाय और उस के अनुसार देश में जलसे हुए और देहली में भी एक आम जलसा हुआ। जिस में महात्मा गांधी सम्मिलित थे।

## लेबर यूनियन की स्थापना

इस वर्ष दिल्ली में एक लेबर यूनियन भी कायम हो गई थी और मि० आसफअली उसके सदस्य थे।

## खिलाफत और मुसलिम कोरें

इसी वर्ष खिलाफत वालन्टियर कोरें और अन्य मुसलिम कोरें भी स्थापित हुईं और इन कोरों के कार्य करने वालों में सय्यद मुबारिक, अनवारुलहक, सय्यद इकबालशाह के नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं।

जिन कार्यकर्ताओं का ऊपर जिक्र आ चुका है उन के अलावा इस वर्ष के काम करने वालों में कारी अब्बास हुसैन, मौलाना ताजुद्दीन जब्बलपुरी, पं० लक्ष्मीनारायण, पं० रामचंद्र, डाक्टर कीर्ती देवशर्मा, श्रीमती सुभद्रा देवी, सेठ नौरङ्गराय, मि० के० ए० देसाई, मौलाना अहमदसईद, मि० आर० बी० सैन, मि० जानकी-

प्रसाद, श्रीमती सुरेन्द्रबाला, श्रीमती भगवतीजी, श्रीमती बसन्तीदेवी, मि० गौरीशंकर भार्गव, मौलाना मौहम्मद मुफ्ती किफायतउल्ला, मौलाना मोहम्मद ईदरीस, मि० ओंकारनाथ, मि० राधारमन और डा० सुखदेव के नाम भी मिलते हैं।

## अजमेर मेरवाड़ का दिल्ली से अलग होने का प्रयत्न

सन् १९१९ में अमृतसर की कांग्रेस के अवसर पर अजमेर वालों ने यह मामला उठाया कि अजमेर-मारवाड़ बृटिश राजपूताना को, कांग्रेस के देहली प्रान्त से अलग कर दिया जाय।

श्रीयुत सुभाषचन्द्र बोस

माता कस्तूरबा गांधी
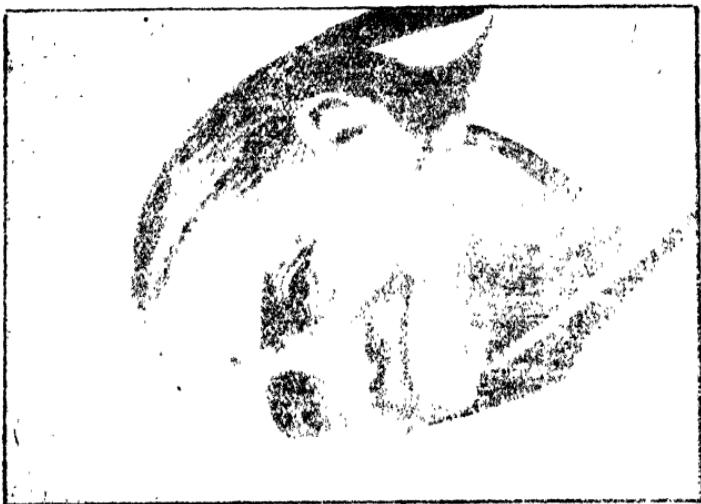
# छठा अध्याय

## सन् १९२०

### खिलाफत कमेटी के चार फैसले

सन १९२० में देहली में खिलाफत कमेटी नियमानुसार स्थापित हो गई और अमृतसर से वापसी के अवसर पर हिन्दू मुसलिम नेताओं का देहली में मिलना हुआ और खिलाफत कमेटी के सम्बन्ध में डाक्टर अन्सारी और हकीम अजमल खां साहिब के मकानों पर जलसे हुए। जिनमें नान-को-ओपरेशन की चार बातें कायम की गईं :—

१—उपाधियां इत्यादि छोड़ना।

२—स्कूलों, कालेजों, अदालतों और वकालतों को छोड़ना।

३—सरकारी नौकरियों को छोड़ना।

४—टैक्स का बन्द करना।

## लोकमान्य तिलक बहुत आगे थे

इस अवसर पर यह बता देना आवश्यक है कि डाक्टर अन्सारी साहब के मकान पर जो प्रारम्भिक परामर्श हुआ उसमें सय्यद महफूज अली, मौलाना हसरत मोहानी और मि० सुऐबकुरेशी इन बातों क तय करने में विशेष तौर पर सम्मिलित थे, और हकीम साहब के मकान में जो जलसा हुआ उसमें महात्मा गांधी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, ला० लाजपतराय, ला० हर-किशनलाल, पं० रामभजदत्त चौधरी भी शरीक थे। लोकमान्य तिलक को कहीं और जाना था, इस कारण वह महात्मा जी से यह कह कर खड़े हो गये कि मुझे अब इजाजत दीजिये और आप जो फैसला करें उस पर मेरे हस्ताक्षर करवा लीजियेगा क्योंकि आप जो फैसला करेंगे, उससे मैं बहुत आगे जाने को तय्यार हूँ।

इस वर्ष प्रारम्भ से ही दिल्ली में बड़ा जोश व उत्साह था और सार्वजनिक सभाओं की भरमार थी। महिलाओं के जलसे भी खिलाफत कमेटी की संरक्षता में काफी हुए।

## खिलाफ कार्यकर्ताओं की कान्फ़रेन्स

नेताओं के इस जलसे के बाद मौ० हसरत मुहानी के सभापतित्व में खिलाफत कार्यकर्ताओं की एक कान्फ़रेन्स रामा थियेटर में हुई। इस के कान्फरेन्स के मौलाना आरिफहस्वी और मौलाना अहमदसईद ने निमन्त्रणपत्र भेजे थे और इन्होंने ही इसका तमाम प्रबन्ध किया था। इस कान्फरेन्समें गरम दल के विचारों को प्रगट किया गया।

## नये अखबारों का थोड़ा जीवन

अखबार का प्रेस बन्द हो चुका था। इसलिए मौलाना आरिफहस्वी ने पहले "हुर्रियत" और "इन्किलाब" निकाला। काजी अब्दुलसत्तार ने "अम्न प्रवाह" निकाला, और ख्वाजा हसन निजामी ने "रईयत" अखबार निकाला परंतु थोड़े समय तक यह अखबार अपना काम करके बंद हो गए।

## शहीद हाल में लोकमान्य तिलक का भाषण

इसी वर्ष के प्रारम्भ में अमृतसर से लौटने के अवसर पर लोकमान्य बाल गँगाधर तिलक के भाषण के लिए शहीदहाल में एक बड़ी विराट सभा हुई जिस में उन का अंग्रेजी में भाषण हुआ। स्वामी श्रद्धानंद इस जलसे के

सभापति थे, और मि० आसफअली ने लोकमान्य बालगङ्गाधर-तिलक के भाषण के लिये शहीद हाल यानी पाटौदी हाउस में एक बड़ी विराट् सभा हुई। जिसमें उनका अंग्रेजी में भाषण हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द इस जलसे के सभापति थे और मि० आसफअली ने लोकमान्य तिलक के भाषण का अनुवाद किया था। इस भाषण में लोकमान्य तिलक ने यह कहा कि "यह न समझिये कि मैं हिन्दुस्तान या आने वाली नसलों के लिए आजादी मांगता हूं, मैं जो कुछ कहता हूं वह मेरी स्वाभाविक आवाज है। मैं किसी की खातिर से ऐसा नहीं कहता। मैं कहीं और किसी हालत में भी होता तो आजाद ही चाहता।

फिर नये रिफार्म के सम्बन्ध में भाषण देते हुए नये विधान को बेकार और रद्दी बताते हुए उन्होंने यह कहा कि आजादी आसानी से हाथ नहीं आती। आजादी बड़ी कुर्बानियां चाहती है। आजादी उस अमृत के समान है जो देवताओं ने समुद्र मन्थन करके निकाला था। उस मौके पर चौदह रत्न निकले थे, मगर अमृत से पहले विष निकला था। इसी तरह आजादी प्राप्त होने से पहले हमारे देश में भी सख्तियों का विष निकलेगा और हमें उससे डरना नहीं चाहिए। सख्तियों का मुकाबला करने के लिए कुर्बानियां करनी पड़ेंगीं और फिर आजादी मिल जायगी।

## सेडीसस मीटिंग एक्ट लागू

ता० २३ अप्रैल से २३ अक्तूबर सन १६२० तक के लिये यानी ६ मास के लिये सेडिसस मीटिंगस एक्ट लागू होगया और इस कारण से देहली में जलसे होने बन्द हो गये।

## एक लाख से अधिक ताजीरी टैक्स के विरुद्ध आन्दोलन

गत वर्ष के बलवों वगैरह के सम्बन्ध में ताजीरी पुलिस के अधिकारों के मातहत देहली पर एक लाख से ज्यादा का एक ताजीरी टैक्स लगाया गया। उसके खिलाफ सख्त आंदोलन हुआ, और क्योंकि जलसे बन्द थे, इस लिये बड़े २ तख्तों पर आंदोलनकारी इशतहार लिखवाये गये, और लोगों को हिदायत की गई कि यह टैक्स अदा न करें। एक ऊँट की पीठ पर दोनों ओर यह इश्तिहार टाँक कर, उस ऊँट को कई रोज तक शहर में फिराया गया। यह मौलाना अब्दुल्ला की सूझ थी और उस दिन से खास २ मोकों पर ऊँट निकालने का तरीका पड़ गया और एक कहावत प्रचलित हो गई कि "ऊँट निकल गया"। जिस का अर्थ यह था कि जो ऊँट पर हिदायतें निकली हैं, वह पूरी होगीं। कुछ लोग कहा करते थे 'पवित्र ऊँट निकल

गया। एक अवसर पर तो बेचारा ऊँट भी गिरफतार हो गया था और ऊँट वाला उसे छोड़ कर भाग गया था।

इस अवसर पर ला० प्यारेलाल वकील और अन्य वकीलों की ओर से हकूमत से यह कहलवा दिया गया था कि अगर टैक्स वसूल करना बन्द न किया गया तो भारत-मन्त्री पर दावा हो जायगा। परिणाम यह निकला कि टैक्स के कुछ ही रुपये वसूल होने पाये थे कि टैक्स रद्द हो गया। लेकिन जलसों की उसी प्रकार बन्दी रही।

## कूचे २ में वालन्टियर कोरें

इस वर्ष कई वालन्टीयर कोरें बनीं। बल्कि गली २ और कूचे २ में वालन्टीयर कोरें बन गईं। इन सब में खिलाफत वालन्टीयर कोर की इसलिए ज्यादह ख्याती हो गई कि उस के ५० युवक प्रतिदिन प्रातःकाल वर्दी पहनकर नियमानुसार पैरेड किया करते थे। इस में कभी २ स्वराज्य सेना के युवक भी पैरेड करने के लिए सम्मिलित हुआ करते थे। खिलाफत कोर मि० आसफअली के नेतृत्व में और स्वराज्य सेना ला० शँकर-लाल के नेतृत्व में और एक और कोर मोहम्मदइशाख के मातहत थी जिन का बाद में नाम कर्नल ईशाख पड़ गया था, और एक और कोर मि० अन्वारुलहक के मातहत थी जिस का नाम अन्वार कोर था।

## दिल्ली के वालन्टीयर अन्य नगरों में

यहां यह कह देना उचित होगा कि सन १६२१ के अंत तक उन वालन्टियरों की संख्या, जिन पर यह कोरें बनी हुई थीं १८०० तक पहुच गई थी। खिलाफत कोर के आदमी इतने ट्रेन्ड थे कि न केवल शहर ही के प्रबन्ध में बल्कि शहर के बाहर भिवानी, अजमेर, आगरा, मदुरा वगैरह में भी कान्फरेन्स इत्यादि के अवसर पर बुलाये जाया करते थे।

## नगर के बाद जल्से जमना पर हुए

जब नगर में जल्से होने बन्द हो गये तो जल्सों का प्रबन्ध जमना पार होने लगा। कभी जमना के पार की रेती में, कभी आस पास के जमना पार के गांव में और कभी गाजियाबाद में जल्से होते थे। हजारों लोग पैदल, सैकड़ों गाड़ियों, तांगों में और सैकड़ों रेलों में सवार होकर इन जल्सों में जाकर सम्मिलित होते थे। इन में दो जल्से तो बहुत ही स्मरणीय है। एक वह कि जो जमना पुल के पास सड़क से तीन कोस पर एक गांव की मसजिद में हुआ था, जिसमें हजारों आदमी देहली से पैदल चल कर सम्मिलित हुए थे। एक वह जल्सा जो ता० १ अगस्त को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के स्वर्गवास के दिन शोक प्रगट करने के लिये हुआ था। ता० ३१ जुलाई की रात को

लोकमान्य तिलक का बम्बई में स्वर्गवास हुआ और दूसरे दिन देहली में एक जबरदस्त हड़ताल हुई और शोक सभा जमना पार हुई।

## फूल वालों की सैर का बहिष्कार

इसी वर्ष फूल वालों की सैर भी बन्द कराई गई। यह सैर देहली से ११ मील दूर कुतुब में हुआ करती थी और उस के लिये भी ऊन्ट निकाला था।

## गौ-बद्ध निषेध पर बाबर का फरमान

अगस्त मास में मौलाना आरिफ हस्वी ने भोपाल रियासत की पुस्तकालय से बाबर बादशाह का एक फरमान प्राप्त किया, और उसे छपवा कर प्रकाशित किया गया। इस में बाबर बादशाह ने गाय की कुर्बानी का निषेध किया था।

## आगरे में साम्प्रदायिक दंगा

ता० २० सितम्बर को आगरे में एक साम्प्रदायिक दंगा हो गया, इस मे शहर बन्द हो गया और पुलिस व फौज का पहरा लग गया। २२ सितम्बर को हकीम अजमलखां साहिब और खिलाफत के कार्यकर्ताओं के पास यह समाचार पहुंचा, और हकीम अजमलखां अपने साथ ला० शंकरलाल, मौ० आरिफ-हस्वी, मि० आसफअली और अन्य कई हिन्दू-मुसलिम बाल-

न्टियरों को साथ लेकर आगरा पहुंचे और दिन भर के परिश्रम व प्रयत्नों के बाद दूसरे दिन हिन्दु-मुसलमानों का मिलाप करा दिया और शहर खुल गया।

## अजमेर में दिल्ली डिस्ट्रिक्ट पोलिटिकल कान्फ्रेंस

इसी वर्ष दिल्ली अजमेर मारवाड़ राजपूताना की डिस्ट्रिक्ट पोलिटिकल कान्फ्रेन्स अजमेर में हुई। जिसमें डाक्टर अन्सारी सभापति थे और राजा साहब खरवा स्वागत कारिणी के सभापति थे। देहली के तमाम कार्यकर्ता इस कान्फ्रेन्स में सम्मिलित हुए थे।

## राष्ट्रीय पंचायतों का कार्य

सितम्बर के महीने में कलकत्ते में स्पेशल कांग्रेस का अधिवेशन हुआ और उस में नानकोओपरेशन का प्रस्ताव पास हो गया। देहली में नानकोओपरेशन नियमानुसार खिलाफत कमेटी द्वारा कार्यरूप में शुरू हुआ। एक राष्ट्रीय पंचायत स्थापित की गई जिस में फौजदारी और दीवानी मुकद्दमों का फैसला किया जाता था। प्रारम्भ में यह पंचायत मि० आसफअली ने स्थापित की और दो माह के बाद ही मोहम्मद तकी वकील को

इस पंचायत का जज नियुक्त कर दिया गया । देहली की इस अदालती पंचायत में पचास २ हजार रु० की रकम तक के फैसले हुये ।

## आजाद कौमी दर्शगाह

अरेबिक स्कूल के साठ सत्तर के करीब विद्यार्थियों और तीन चार अध्यापकों को स्कूल से अलहदा करके एक 'आजाद कौमी दर्शगाह' खोली गई । इस का प्रारम्भ मि० आसफअली ने किया था । दो ढाई साल तक यह मदरसा चला । जब यह आंदोलन दृढ़ होने लगा उस वक्त एक ओर अलीगढ़ में, और दूसरी ओर देहली में विद्यार्थी यूनिवर्सिटी और स्कूलों से पृथक होकर जामेमिलिया और आजाद कौमी दर्शगाह में आ गये । तब प्रायः यह कहा जाने लगा कि हिंदू दर्शगाहों को भी इधर कदम उठाना चाहिये । इसलिए आगे चल कर गुजरात और बनारस विद्यापीठ स्थापित हुई । इन में से जामेमिलिया और बनारस विद्यापीठ आज तक भी बनी हुई हैं ।

## कन्सट्रकटीव कोओपरेशन

इसी समय में मि० आसफअली ने कन्सट्रकटीव कोओपरेशन के शीर्षक से एक लेखमाला प्रकाशित की, जो बाद में एक किताब के रूप में प्रकाशित हो गई । उस में यह प्रस्ताव किया गया था

कि केवल नानकोआपरेशन पर ही मामला न छोड़ा जाय, बल्कि गवर्नमेंट के मुकाबले के महकमे कायम किये जायं। जो अहिंसा के उद्देश्य पर रचनात्मक कार्य हाथ में लें, पंचायतें, अदालतें, दरसगाहें, वालन्टीयर कोरें इत्यादि कायम करें।

## शहीद हाल में पोलिटिकल कान्फ्रेंस

नवम्बर सन १९२० में दिल्ली पोलिटिकल कान्फरेन्स देहली में शहीद हाल में हुई। जिसके सभापति मौलाना मोहम्मदअली थे। उस की स्वागत कारिणी के सभापति ला० प्यारेलाल मोटर वाले थे। इस कान्फरेन्स में महात्मा जी भी सम्मिलित हुए। अन्य प्रस्तावों के अलावा मि० आसफअली की कन्सट्रकटीव नानकोआपरेशन की स्कीम एक प्रस्ताव के रूप में इस कानफरेन्स में पेश हुई। मगर महात्मा जी ने निजी तौर पर यह कहा कि यह एक मुकाबले की गवर्नमेंट (Parelal Government) का प्रस्ताव है, और अभी इस का समय नहीं है। परन्तु इस प्रस्ताव को एक सब कमेटी के सुपुर्द कर दिया गया।

## हिन्दू कालेज और पंजाब यूनिवर्स्टी

अलीगढ़ कालेज और अरेबिक स्कूल के विद्यार्थियों के इन स्कूलों से अलग होने से प्रभावित होकर, और देहली कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बार २ अनुरोध करने पर हिन्दु कालेज के

प्रिन्सपिल मि० ठडानी और कालेज के विद्यार्थियों ने ट्रस्टियों से प्रार्थना की, कि कालेज का पंजाब यूनिवर्स्टी से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया जाय। परन्तु यह प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई।

## जलसों और अखबारों पर पाबन्दियां

इस वर्ष जिस प्रकार जलसों पर पाबन्दियें लागू होगई थी उसी प्रकार अखबारों पर भी सेन्सर कायम होगया था, और प्रायः बहुत से अखबार तो पाबन्दियों के कारण बन्द होगये और जो प्रकाशित होते रहे, उन में कालम के कालम कोरे ही प्रकाशित कर दिये जाया करते थे। क्योंकि जो हिस्सा सेन्सर होता था वह निकाल दिया जाया करता था। और इसलिये अखबार बहुत ही अरूचिकर होगये थे। यही हाल बंगाल और पंजाब के अखबारों का भी था। इसलिये अमृत बाजार पत्रिका ने तंग आकर ताने के तौर पर सम्पादकीय अग्रलेख के स्थान पर आलूओं की कास्त और इसी प्रकार के हास्यप्रद लेख देने शुरू कर दिये थे।

## शेखुल हिन्द महमुदुल हसन का स्वर्गवास

शेखुल हिन्द महमुदुल हसन का जिन्हें युद्ध में तमाम दिनों में माल्टा में नजरबन्द रखा गया था, ता० दो दिसम्बर को

डाक्टर अन्सारी साहब की कोठी पर देहान्त होगया। इस पर शहर में हड़ताल हुई। शेखुल हिन्द हिन्दुस्तानियों की स्वतन्त्रता के बहुत बड़े समर्थक थे।



## खद्दर पहनना आवश्यक ठहराया गया

कलकत्ता स्पेशल कांग्रेस के बाद से कांग्रेस वालों के लिये खद्दर पहनना आवश्यक कर दिया गया था। इसलिये सितम्बर मास तक करीब २ सभी कांग्रेस वाले और एक बड़ी हद तक तमाम खिलाफत कमेटी के कार्यकर्ता और जमीयत-उल-उल्मा के कार्यकर्ता खद्दर धारी हो गये।

## चरखों और करघों का प्रचार

अब चर्खों और करघों का कार्य शुरू हुआ। इस सिलसिले में एक तो पं० हरदत्त ने देहली में करघों और एक लाला दलेलसिंह जौहरी ने चर्खों का कार्य शुरू किया।

## ला० दलेलसिंह चर्खों के प्रचार में

ला० दलेलसिंह तो आज तक भी इन चर्खों के कार्य में लगन से लगे हुए हैं। आपने सन् १६१६ से ही चर्खों का थोड़ा २ काम शुरू कर दिया था।

## जमीयत उल उलमाय हिन्द की स्थापना

इसी वर्ष नवम्बर मास के अन्त में या दिसम्बर मास के प्रारम्भ में हिन्दुराव के बाड़े में एक बहुत बड़ा जलसा उलमाओं का हुआ। और जमीयत-उल-उलमाय हिन्द की नींव पड़ी।

## नेताओं ने दाढ़ियें रक्खीं

इस सम्बन्ध में यह बात वर्णन करने योग्य है कि इस जल्से के बाद से बहुत शिक्षित मुसलमानों ने दाढ़ियां बढ़ालीं। जिन में डाक्टर अन्सारी, ख्वाजा अब्दुल हमीद इलाहबादी, मि० तसद्दुक अहमदखां शेरवानी, मौलाना मौअज्जमअली, और मि० आसफली वगैरह सब ने दाढ़ियां रखलीं।

## रामलीला में राष्ट्रीय स्वयं सेवकों का प्रबन्ध

इस साल रामलीला का प्रबन्ध बिल्कुल पुलिस को नहीं दिया गया, बल्कि प्रारम्भ से लेकर अन्त तक का तमाम प्रबन्ध राष्ट्रीय स्वयं सेवकों के सुपुर्द रहा। जिन्होंने बहुत ही सुविधा और उत्तमता के साथ काम को पूरा कर दिया। और यह पहला अवसर था कि इस रामलीला में न अधिकारियों को निमन्त्रण दिया गया और न कोई अधिकारी बाड़े के अन्दर घुसा। बल्कि अधिकारियों की बजाय राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के गले में हार डाले गये।

## वालन्टीयरो के जलूसमें मस्जिद के सामने बाजा

रामलीला के बाद हिन्दु और मुसलमान तमाम वालन्टियरों के एक जलूस ने तमाम नगर में चक्कर लगाया। और जिस समय जलूस फतहपुरी मस्जिद पर पहुँचा तो हिन्दुओं ने कहा कि प्रचलित प्रथा के अनुसार यहां बाजा बन्द कर दो लेकिन मुसलमानों ने बहुत अनुरोध किया और बाजा बन्द नहीं होने दिया और कहा कि यह तो एक राष्ट्रीय अवसर है। और यही दृश्य जामा मस्जिद पर भी रहा। इससे उस समय के राष्ट्रीय इतिहास और राष्ट्रीय जीवन पर प्रकाश पड़ता है।

## कांग्रेस का नेतृत्व महात्मा गांधी के हाथों में

इस वर्ष देहली से एक बहुत बड़ी संख्या प्रतिनिधियों की नागपुर अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिये गई। जिसमें तमाम कांग्रेस कार्यकर्ताओं के अलावा तमाम खिलाफत और लीग के भी कार्यकर्ता सम्मिलित थे। इस वर्ष लीग के सभापति डाक्टर अन्सारी थे, और कांग्रेस के सभापति श्री सी० विजय-राघवाचार्य थे। सत्तरह अठारह हजार का समूह था। जिसमें तेरह चौदह हजार के लगभग प्रतिनिधि थे। इससे अधिक संख्या में इससे पहले कांग्रेस में कभी डेलीगेट सम्मिलित नहीं हुये। इस वक्त से कांग्रेस बिलकुल महात्मा गांधी के हाथ में आगई।

## अहिंसा, स्वराज्य, असहयोग कांग्रेस के उद्देश्यों में

जो लोग नानकोओपेरेशन, अहिंसा और स्वराज्य के उद्देश्यों की नीति से सहमत नहीं थे, कांग्रेस से पृथक हो गये।

## कांग्रेस के मेम्बरों के लिये चार आने फीस

इसी साल से इन्डियन नेशनल कांग्रेस के मेम्बरों के लिये चार आने साल सदस्यता की फीस मुकर्रिर होगई। इस कांग्रेस में कांग्रेस का विधान बिलकुल नया बना, जिस पर साधारण संशोधनों के साथ सन १९३४ तक कार्य होता रहा।

## मेरठ मुजफ़्फरनगर, मथुरा कांग्रेस दिल्ली प्रान्त में

इसी विधान में अजमेर मारवाड़, राजपूताना दिल्ली से पृथक होकर नया प्रांत बन गया। और दिल्ली प्रांत में मेरठ मुजफ्फरनगर, और मथुरा सम्मिलित होगये।

## गवर्नमेंट प्रेस के कर्मचारियों की हड़ताल

इस वर्ष के प्रारम्भ में गवर्नमेंट प्रेस के कर्मचारियों के एक हिस्से ने कलकत्ता, इलाहाबाद और देहली में हड़ताल कर दी।

और देहली में यह हड़ताल कई दिन तक जारी रही, और उस का नेतृत्व मि० आसफली ने किया।

## ट्राम्वे के कर्मचारियों की हड़ताल

इसी प्रकार दिल्ली ट्राम्वे के कर्मचारियों ने हड़ताल की और वह १८ दिन तक जारी रही। इसका भी नेतृत्व मि० आसफअली ने किया।

## लाला लाजपतराय का अपूर्व स्वागत

सन् १९२० के मध्य में लाला लाजपतराय कई साल के निर्वासन के बाद हिन्दुस्तान वापिस आये। उनके देहली आने के अवसर पर बड़ी धूमधाम से उनका स्वागत किया गया, और जनता की ओर से उनका जलूस निकाला गया और अभिनन्दन-पत्र भेंट किये गये। इस अवसर पर शहर वालों ने बड़े जोश व उत्साह से लालाजी का स्वागत किया। बड़े २ बाजारों को सजाया और बड़े प्रेम से उनकी भाव-भक्ति की।

## लाला देशबंधु, पं० श्रीराम ने कालेज छोड़ा

१ दिसम्बर को ला० देशबन्धु गुप्ता, पं० श्रीराम शर्मा और ईश्वरदयाल तवकले के साथ कालेज छोड़ कर चले आये। यहां से लाला देशबन्धु का राजनैतिक जीवन आरम्भ होता है।

## मि० तकी, मि० आसफअली ने वकालत स्थगित की

इसी वर्ष नानकोओपरेशन के सम्बन्ध में शेख मोहम्मद तकी और मि० आसफअली ने वकालत करनी स्थगित करदी । और सन् १९२४ तक स्थगित रक्खी ।

वह दौर जो देहली में राजनीतिक आन्दोलन का सन् १९०७ में शुरू हुआ था। और जिसने समय २ पर भिन्न २ रूप धारण किये । जिनका वर्णन संक्षेप में इस परिच्छेद में आया है । सन् १९२० में एक ऐसी सीमा तक पहुंच गया कि उसके बाद राजनैतिक आन्दोलन ने देहली में जो सूरत धारण की, एक नये दौर का आरम्भ बन गई ।

एक दृष्टि से सन् १९२१ और १९२२ की देहली के राजनैतिक आंदोलनों को पुराने ही दौर में सम्मिलित करना चाहिये था ।

## गत वर्षों पर एक दृष्टि

परन्तु वास्तव में नागपुर काँग्रेस के बाद देहली के राजनैतिक कार्य लगभग खालिस कांग्रेस के उद्देश्यों के होगये । और उनमें खारिजी उद्देश्यों का हिस्सा बहुत कम होगया । और सन् १९२२ के अन्त से जो सांप्रदायिक झगड़ों का नकशा जमा उनका केन्द्र

भी देहली ही कायम हुआ। मगर कांग्रेस आन्दोलन और खा-लीस राष्ट्रीय राजनीति का वह केन्द्र जो देहली में सन् १६२१ से दृढ़ तौर पर कायम होगया था। वह सन् '१६२२ के आखिर से सन् १६२८ तक के उन साम्प्रदायिक झकोलों में भी जो देहली में तुफान की शक्ल में उठते रहे, एक सुरक्षित जजीरे की तरह कायम रहा। इस दौर पर जिसे हमें इस परिच्छेद में खत्म कर रहे हैं, एक दृष्टि डालनी जरूरी है। पहले दिल्ली में राजनैतिक के आसार नहीं के बराबर थे। सन् १६०६, १६०७, और १६०८ में कुछ शुद्ध बुद्ध शुरू हुई। मगर मामला भाषणों और सामायिक जोश से आगे न बढ़ा। सन् १६०६ से सन् १६१२ तक देहली फिर सोगई। मगर सन १६१२ के आखीर में जो घटना हुई, उससे मालूम होता है कि कुछ व्यक्ति राजनीती और क्रान्ति को एक ही समझते थे मगर जनता सही राजनैतिक बेदारी से भी परिचित न थी। सन् १६१२ से सन १६१५ तक देहली आहिस्ता २ मुसलिम जोश व उत्साह का केन्द्र बनती रही। सन् १६१६ से होम रूल के आन्दोलन ने जनता को आहिस्ता २ राष्ट्रीय राजनीती से जागृत करना शुरू किया। सन् १६१८ में नियमानुकूल कांग्रेस कमेटी देहली में कायम होगई, और राजनै-तिक जागृति इतनी काफी बढ़ी कि शिक्षित विभाग शौक से काँग्रेस के कार्यों में भाग लेने लगा। सन् १६१६ में देहली की राजनैतिक जागृती ने जोश व उत्साह का एक ऐसा दृश्य पेश

किया कि शिक्षित विभाग का एक बहुत बड़ा भाग उस से भयभीत होगया।

सन् १६१६ के अन्त में खिलाफत के आन्दोलन ने देहली में काफी जोर पकड़ा और सन १६२० के प्रारम्भ में ही जनता और कुछ शिक्षित व्यक्ति एक ओर गये और शिक्षित विभाग के बहुत से व्यक्ति राष्ट्रीयता की बढ़ती हुई बाढ़ से प्रभावित होकर करीब २ पृथक हो गये। इस दौर की समाप्ती पर वह व्यक्ति जो सन १६१८ की कांग्रेस में अग्रसर थे, सिवाय कुछ नेताओं और दृढ़-विश्वासी कार्य करने वालों के बाकी सब हट गए। यह तमाम घटनायें शिक्षा-प्रद हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन के उतार चढ़ाव में यही हुआ करता है।

## सातवां अध्याय

# रचनात्मक असहयोग

## सन् १६२१

### राष्ट्रीयता की हरी भरी खेती

राष्ट्रीयता के वह बीज जो बोए जा चुके थे सन १६२१ में फूट बढ़े और सन १६२१ के अन्त तक राष्ट्रीयता का खेत देहली में लहराने लगा।

प्रारम्भ ही से प्रान्तीय और जिला कांग्रेस कमेटियां बड़े जोर के साथ अपने कार्य में सलग्न हो गई। खिलाफत, लीग और जमीयत-उल-उल्माय हिन्द के दफ्तर भी कार्य-ग्रस्त दिखाई देने लगे।

## कांग्रेस बोर्ड कमेटियां

जिला कांग्रेस कमेटी ने तमाम शहर में बोर्ड कमेटियां कायम कर दीं।

## गली कासिमजान में कांग्रेस का दफ़्तर

जिला कांग्रेस कमेटी का दफ़्तर एक सुन्दर विशाल भवन में कासीमजान की गली में खुल गया।

## राष्ट्रीय पंचायत, स्कूल, चर्खे, कर्घे और तिलक स्वराज्य-फण्ड

राष्ट्रीय अदालतें जिले के आधीन कार्य करने लगीं, तिलक स्वराज्य फन्ड एकत्रित होना शुरू हुआ। चर्खों और करघों की सर्व प्रियता बढ़ने लगी। दिल्ली कांग्रेस प्रांत के मथुरा, मुजफ़्फरनगर व मेरठ में, आज़ाद स्कूलों, करघों के कारखाने, राष्ट्रीय-पंचायतें, स्वदेशी प्रदर्शनीयें और और राजनैतिक कान्फ्रेन्सें होने लगीं। संक्षिप्त तौर पर तमाम कांग्रेस प्रांत यह मालूम होता था कि

कार्य-रूप में स्वराज्य के मार्ग में बहुत-सी मंजिलें तय कर गया है, और कांग्रेस की सत्ता इतनी बढ़ गई कि, किसी व्यक्ति की यह मजाल न थी कि वह कांग्रेस की आज्ञाओं के विरुद्ध कोई भी कार्य कर सके !

## पुलिस के मुकाबले में वालंटियरों का कार्य

वरदियों से सुसज्जित वालंटियर अपने कर्तव्य का पालन करते थे। जलसे, जलूसों, कानफरेन्सों और मेलों इत्यादि के प्रबन्ध करते थे, यानी राष्ट्रीय पुलिस का पूरा नकशा होता था।

## पांच हजार चरखे बने

दिल्ली जिला कांग्रेस कमेटी के दफ़्तर में हर समय चहल पहल रहती थी। एक मुख्य कर्मचारी के आधीन जिसका वेतन सवा सौ मासिक तक पहुंच गया था, ७–८ वैतनिक कर्मचारी काम करते थे। जिले ने पांच हज़ार चरखे तैयार कराये। यह चरखे शहीद हाल में मौलाना अब्दुल्ला की देखरेख में तैयार हुए थे।

## इम्पीरियल कौन्सिल का बहिष्कार

इस वर्ष के प्रारम्भ में ही नये शासन-विधान के अनुसार इम्पीरियल कौंसिल के चुनाव होने निश्चित हुए। क्योंकि कांग्रेस ने नानकोओपरेशन का प्रस्ताव पास कर दिया था।

देहली को एक प्रतिनिधि मिला था, मगर कांग्रेस ने यह फैसला कर दिया कि देहली से कोई व्यक्ति कौंसिल में नहीं जायगा।

## मौ० अब्दुलहमीद हलवाई इम्पीरियल कौन्सिल में

यद्यपि कुछ व्यक्तियों ने अपने उम्मेदवारी के फार्म भर कर नामजदगी कराई, मगर सिवाय एक रायबहादुर राजनारायण के सबने अपने नाम वापिस ले लिये। इन बातों को दृष्टि में रखते हुए कुछ राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं ने इनके मुकाबले में देहली के प्रसिद्ध हलवाई अब्दुलहमीद हलवा सोहन वाले को खड़ा किया। चुनाव सम्मिलित था। मगर बहुत ही उत्साह से देहली वालों ने हलवाई को सफल बनाया। इस लिए कि देहली वाले नहीं चाहते थे कि कोई व्यक्ति कांग्रेस की आज्ञा के विरुद्ध कौन्सिल में जायं।

## खानबहादुर अब्दुललहद के जनाजे पर रुकावट

इस घटना से कुछ दिन पहले एक और घटना हुई। देहली के एक विख्यात परिवार के एक बड़े रईस खान बहादुर अब्दुललहद का, जिनके सम्बन्ध में मुसलमानों में यह आम ख्याल था, कि

वह खिलाफत के आंदोलन से सहानुभूति नहीं रखते, और जिन की गणना सरकार परस्तों में होती है, मर गये। उनकी मृत्यु के अवसर पर एक बहुत बड़ा जनसमूह उनके मकान पर एकत्रित होगया, जिसमें सय्यद अजीजहसन बकाई, मौलाना आरिफ-हस्वी और मौलाना अब्दुल्ला भी सम्मिलित थे।

## राष्ट्रीय कार्यकर्ता खानबहादुर के जनाजे पर गिरफ़्तार

बयान यह किया जाता है कि इस अवसर पर यह कहा गया कि क्यों कि खान बहादुर मुसलमानों के खिलाफत आँदोलन के विरुद्ध थे, इस लिये न मुसलमान उनका जनाजा उठायेंगे और न उन्हें मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफन होने दिया जायगा। इस हील हुज्जत में बड़ी देर तक खानबहादुर का जनाजा दफन न हो सका और पुलिस ने मौलाना अब्दुल्ला, सय्यद अजीजहसन और मि० आरिफहस्वी को गिरफ्तार कर लिया और उन पर मुकदमा चलाया गया।

## कचहरी के अहाते में नमाज पढ़ी

इस मुकदमे के समय में अदालत में इतनी भीड़ हो जाया करती थी कि तिल धरने को जगह न रहती थी, और एक

अवसर पर उस भीड़ ने नमाज भी कचहरी के अहाते में पढ़ी।

## जुम्मे की नमाज पर मसजिद में गड़बड़

इसी बीच में एक घटना यह भी हो गई कि एक दिन जब जुम्मे की नमाज की सफ बन्दी जामा मसजिद में हो चुकी तो कुछ लोग अदालत से जामा मसजिद में पहुंचे।

## इमाम मसजिद हुजरे में जाकर छिपे

उनको यह ख्याल हो गया था कि इमाम साहब जामा मस-जिद भी, जिनकी गणना सरकारपरस्त हल्कों में होती थी, और जिनकी मृत अब्दुललहद से रिश्तेदारी भी थी, मौलाना अब्दुल्ला, सय्यद अज़ीज हसन और मौलाना आरिफहस्वी के मुकद्दमे में सरकार की ओर से गवाही देंगे, और इन लोगों ने जोरदार आवाज में कहा कि इमाम जामा मसजिद के पीछे नमाज न पढ़ें। फौरन ही तमाम सफें टूट गईं और कुछ लोगों ने इमाम साहब के साथ सख्ती की। इस पर इमाम साहब और खान बहादुर अजीजुद्दीन परांचियां ने बड़ी कठिनता से दक्षिणी हुजरे में जाकर आश्रय लिया, और उसके दर्वाजे बन्द कर लिये, लेकिन लोगों की भीड़ हुजरे के सामने जाकर इकट्ठी हो गई, और जबरदस्ती हुजरे के दर्वाजे खोलने के प्रयत्न किये। इसी

समय में किसी व्यक्ति ने तकबीर कहनी शुरू कर दी और सफ-बन्दी फिर हो गई। लोग हुजरे के आगे से तो नहीं हटे, परन्तु वहीं पर नमाज पढ़ने लगे।

## हकीम अजमल खां और मि० आसफअली इमाम साहब की सहायता में

इमाम साहब के लड़के ने भागकर इस मामले की मि० आसफअली को सूचना दी, और वह फौरन ही घटनास्थल पर पहुंचे। नमाज खतम होने पर बहुत सी अड़चनों का मुकाबिला करते हुए लोगों को हुजरे के किवाड़ खोलने से रोका, और कुछ वालन्टियर वहीं पर तैनात करके हकीम अजमल खां साहब को बुलाकर लाए, और हकीम साहब ने इन दोनों साहबों को इस अस्थाई कैद से मुक्त कराके घर पहुँचाया।

## जनता खिताब वापिस कराना चाहती थी

इन दोनों घटनाओं के सम्बन्ध में यह कह देना जरूरी है कि मृत अब्दुल अहद और इमाम साहब दोनों से जनता की यह मांग थी कि वह खिताबों को वापिस कर दें और क्योंकि उन्होंने खिताब वापिस नहीं किये थे, इस कारण से भी उन की मुखाल-फत थी।

## हकीम जो व ला० प्यारेलाल ने खिताब छोड़े

केन्द्रिय खिलाफत कमेटी और कांग्रेस दोनों यह फैसला कर चुकी थीं कि खिताब वापिस कर दिए जायँ। देहली से ला० प्यारेलाल वकील और हकीम अजमल खां ने अपने खिताब वापिस कर दिए थे आगे चल कर इमाम साहब ने भी अपना खिताब वापिस कर दिया था। मौलाना अब्दुल्ला और सय्यद अज़ीज़ हसन (नकशबन्दी) बकाई को छः छः माह की कैद हुई और मौलाना आरिफहस्वी विचाराधीन अवस्था में दो ढाई महीने जेल रहने के बाद बरी कर दिए गए।

## दफा १४४, १०७ और १०८ का प्रयोग

इस वर्ष दफा १४४, १०७ और १०८ का प्रयोग देश में बड़े पैमाने पर हुआ और अखबारों का सेन्सर भी सख्त हो गया।

## मौ० अजीज़ अन्सारी, अहमद सईद, आरिफ हस्वी गिरफ़्तार

देहली और देहली का प्रान्त भी इन आफतों से खाली नहीं रहा। इसलिए मौलाना आरिफ हस्वी आगरे के एक भाषण पर और मौलाना अहमद सईद और मि० अब्दुल अज़ीज़ अन्सारी

और भाषणों के सम्बन्ध में गिरफ्तार हुए। मौलाना आरिफ हस्वी को दो बर्ष और अब्दुल अजीज अन्सारी व मौलाना अहमद सईद को एक एक वर्ष की सजा हुई।

## मथुरा में प्रान्तीय राजनैतिक कान्फ्रेन्स

इसी वर्ष दिल्ली प्रान्तीय राजनैतिक कान्फ्रेन्स मथुरा में होनी निश्चित हुई और पं० मोतीलाल नेहरू उसके सभापति हुए।

## मथुरा के कार्यकर्ताओं पर सख्तियां

मथुरा के अधिकारियों ने अनियमित तौर पर वहां के कार्यकर्ताओं पर सख्तियां कीं। पं० राधारमण भार्गव को जो एक उत्साही कार्यकर्ता थे, गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें सज़ा हो गई। उनके अलावा अन्य वालन्टियरों को भी गिरफ्तार किया गया।

## दिल्ली के वालन्टीयर मथुरा में

इसलिये देहली से मि० आसफअली और पं० शिवनारायण हक्सर वालन्टीयरों को लेकर मथुरा गये। और सैकड़ों कठिनाईयों और खराबीयों के बावजूद भी कान्फ्रेंस का प्रबन्ध किया। कान्फ्रेंस में महात्मा गांधी जी भी सम्मिलित हुए थे।

देहली के तमाम कार्यकर्ता भी डाक्टर अन्सारी, हकीम अजमलखां, स्वामी श्रद्धानन्द और ला० शङ्करलाल के साथ कान्फरेन्स में सम्मिलित हुए।

## रामलीला के प्रबन्ध में राष्ट्रीय स्वयंसेवक

इस वर्ष भी रामलीला का प्रबन्ध राष्ट्रीय स्वयंसेवकों ने किया।

## गढ़मुक्तेश्वर में प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी

गढ़मुक्तेश्वर के मेले के अवसर पर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन गढ़मुक्तेश्वर में हुआ। और उसमें यह फैसला हुआ कि, बारदोली के वास्ते महात्मा जी ने जो शर्तें मुकर्रर की थीं वह तमाम शर्तें मेरठ के इलाके में पूरी हो गई हैं। इसलिये आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी से इजाजत ली जाय कि देहली प्रान्त ऐसे इलाकों में सविनय आज्ञा भंग आन्दोलन शुरू कर दें।

## आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी की मीटिंग

नवम्बर में दिल्ली में आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन हुआ और इतिहासिक दृष्टि से यह एक मुख्य अधिवेशन था, क्योंकि इसमें सविनय आज्ञा भंग आन्दोलन के सम्बन्ध में खास फैसला होना था। यह अधिवेशन अजमेरी दर्वाजे के पास कून्डे वालों में हुआ। ला० शंकरलाल और हकीम अजमलखां

ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं के सहयोग और उनकी सहायता से इसका उत्तम प्रबन्ध किया।

## महात्माजी के दर्शन लंगोटी के बाने में

इस अधिवेशन में महात्माजी पहली बार अपने उस रूपमें आये कि जो आज तक बना हुआ है। मद्रास में एकअवसर पर उन्होंने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि भारत में बहुत से गरीब वस्त्रहीन व्यक्ति पड़े हुए हैं इस लिए मुझे क्या अधिकार है कि मैं बहुत से कपड़े पहनूं। इस लिये अब केवल तन ढांपने के लिए एक लंगोटी का बाना पहनूंगा और अन्य कपड़े नहीं। इस लिये इस अधिवेशन में इसी रूप में आये थे। इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द, ला० लाजपतराय और महाराष्ट्र के एक दो प्रतिनिधियों के भाषण विशेषतः वर्णन करने योग्य हैं। इस अधिवेशन के सम्बन्ध में इससे अच्छा और कुछ नहीं कह सकते कि "नवजीवन" का वह लेख जो ता० १३ नम्बर सन् १९२१ के पर्चे में निकला था, उसे यहां उद्धृत कर दें।

## अधिवेशन में क्या हुआ

## स्वराज्य पार्लियामेन्ट

चार नवम्बर सन १९२१ को देहली में वर्तमान अखिल भारत राष्ट्रीय महासभा समिति की आखरी बार बैठक हुई।

देहली के प्रसिद्ध हकीम अजमलखां की देख रेख में सारा प्रबन्ध था। उन की तबियत अलील है, और आप को कुछ समय तक आराम करने की जरूरत है, लेकिन वह इस समय आराम करना नहीं चाहते। उन का विशाल भवन और डाक्टर अन्सारी की कोठी खासी धर्मशालायें हो रही थीं। जहां महमानों के ठहराने का प्रबन्ध किया गया है, चाहे हिन्दू हों या मुसलमान यहां देहली में हिन्दू मुसलिम एकता का प्रत्यक्ष व्यवहार दिखाई देता है। यहां के हिन्दू हकीम जी को पूरे तौर पर कृतज्ञतापूर्वक अपना नेता मानते हैं, और यहां तक कि अपने धार्मिक हितों की रक्षा भी उनके हाथों में सौंप देने मे नहीं हिचकते।

जनता की इस पार्लियामेंट का भवन था, बस एक शामियाना, और सजावट का सामान था, कुछ पौदे और लता-पत्र। हां! कुर्सियां और मेज भी लगाई गई थीं, परन्तु वह इस लिये कि जहां पिंडाल था वहां धूल उड़ती थी, कुर्सियों और मेजों के द्वारा उस से बचाव और सफाई की सम्भावना थी। सभापति की मेज पर रक्खा हुआ एक खादी का कपड़ा टेबिल क्लौथ का का काम दे रहा था। प्रायः सब प्रतिनिधि, क्या स्त्री, क्या पुरुष, मोटी खादी के कपड़े पहने हुए थे, कुछ इने गिने लोग आजकल जिसे बेजवाड़ा की महीन खादी कह सकते हैं, उस के कपड़े पहने थे। इन सब बातों की सविस्तार चर्चा मैंने इस लिए की है कि अखिल भारतीय महासभा बहुतेरे लोगों की दृष्टि में

महात्मा गांधी द्वारा आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बिया कालेज का उद्घाटन

भावी स्वराज्य पार्लमेंट का नमूना है। यह हिन्दुस्तान की सच्ची हालत के अनुकूल ही है। यह भारत भूमि की दरिद्रता, सादगी और उस की आबोहवा की जरूरतों का थोड़ा बहुत प्रतिबिम्ब ही है।

अब इस के साथ वहाँ शिमला और यहाँ नई देहली में जो झूठा दिखावा शान और फिजूलखर्ची होती है, जरा उस का मुकाबला कीजिये।

जैसा बाहर वैसा भीतर राष्ट्र का यह अत्यन्त महत्वपूर्ण काम बहुत ही व्यवस्थित और यथोचित रीति से बारह घन्टों में किया गया। कोई भी ऐसी बात नहीं की गई, या करने दी गई, जिस की प्राय छान बीन ना करली गई हो। कार्यकारिणी समिति और सभापति महाशय के मतभेद से सम्बन्ध रखने वाले प्रस्ताव पर जितना मुमकिन था शान्ति के साथ वाद-विवाद किया गया। सभा समिति ने अपने अधिकारों की रक्षा के विषय में सावधान होते हुए भी कार्यकारिणी समिति के निर्णय पर यह व्यवस्था दी कि मौजूदा नियमों के अर्थ करने का अधिकार सभापति की अपेक्षा समिति को ही है। तथापि उसने प्रस्ताव में ऐसी कोई भी बात नहीं रहने दी, जिस से दिमाग लड़ाने पर भी वह सभापति महाशय के प्रति अशिष्ट मालूम हो। इस अधिवेशन का मुख्य प्रस्ताव था, सविनय कानून भंग के सम्बन्ध में, जो यहाँ देते हैं :—

चूंकि राष्ट्र के इस निश्चय की पूर्ति के लिये कि इस साल के समाप्त होने के पहले स्वराज्य की स्थापना कर लेंगे। अब एक महीने से कुछ ही अधिक समय बाकी है और चूंकि अली भाइयों की गिरफ्तारी और सजा दिये जाने के मौके पर देश ने पूर्ण अहिंसा का पालन करके उदाहरण भूत आत्म संयम की क्षमता का परिचय दिया है, और अब देश को यह वांछनीय मालूम होता हैं कि वह अधिक कष्टसहन और स्वराज्य प्राप्ति के योग्य नियम पालन की क्षमता का परिचय दे। अतः अखिल भारतीय महा सभा समिति प्रत्येक प्रांत को यह अधिकार देती है, कि वह अपनी जिम्मेदारी पर उनके प्रांत की महासभा समिति जिस ढंग से उचित बतावे सविनय कानून भंग करे, जिसमें लगान देना नहीं, यह भी शामिल है। पर इसके लिये नीचे लिखी शर्तों का पालन करना आवश्यक है।

१ व्यक्तिगत कानून भंग की अवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को चर्खा कातने का ज्ञान होना चाहिये और कार्यक्रम के अनुसार अपने २ कर्तव्यों का पालन पूरे तौर पर करना चाहिये।

अर्थात प्रत्येक मनुष्य ऐसा हो जिसने विदेशी वस्तु को बिलकुल त्याग दिया हो और केवल हाथ का बुना कपड़ा पहनता हो। हिन्दू-मुसलिम एकता को तथा भारत की भिन्न २ जातियों की एकता को अटल सिद्धांत की तरह मानता हो।

खिलाफत और पंजाब के अन्यायों की क्षति और स्वराज्य प्राप्ति के लिये अहिंसा को पूर्ण आवश्यक मानता हो, और अगर वह हिन्दू है तो अपने निजी व्यवहार के द्वारा यह दिखलाता हो कि छूतछात राष्ट्रीयता के माथे पर कलंक है।

२ आम कानून भंग की अवस्था में एक जिला या तहसील राष्ट्र का एक घटकपूर्ण अङ्ग समझना चाहिये। वहां के अधिकांश निवासी पूर्ण स्वदेशी का पालन करते हों, उसी जिले या तहसील में हाथ के कते सूत से करघों पर बने कपड़े पहनते हों और असहयोग की दूसरी तमाम मदों के मानने वाले हों।

इसके अलावा कानून भंग करने वाले व्यक्ति को सार्वजनिक चन्दे की रकम से निर्वाह करने की आशा न रखनी चाहिये। सजा पाने वाले व्यक्तियों के परिवार वालों से यह आशा की जाती है कि चरखा कातने, रुई धुनने, कपड़ा बुनने तथा दूसरे किसी प्रकार अपना निर्वाह कर लेंगे।

अगर कोई प्रांतिक समिति दरख्वास्त करे तो कार्यकारिणी समिति को यह अधिकार है कि वह अगर अपना इत्मीनान करले तो सविनय कानून भंग की किसी शर्त को उसके लिये ढीला करदे।

जो लोग कानून भंग करने के लिए बहुत आतुर थे उन्होंने तरमीमों का तांता बांध दिया, तरमीमों की ताईद उन्होंने बड़ी

चातुरता के साथ की। उनके भाषण इतने मुख्तसिर थे कि वे रसका नमूना कहे जा सकते है। पूर्ण वादविवाद के बाद हरएक तरमीम मन्सूख होगई। वादविवाद करने वालों में मौलाना हसरत मुहानी मुख्य थे, वे कानून भंग के लिये बहुत अधीर थे। इससे वे उन कसौटियों का मर्म नहीं समझ सके जो भावी कानून भंग करने वाले के लिये लगाई गई थीं। सिख प्रतिनिधियों के कहने मे केवल एक बात और जोड़ दी गई, वे अपने विशेष अधिकारों के विषय में वहुत अधीर थे, ऐसी अवस्था में अगर हिन्दु मुसलिम एकता की रक्षा की जाती है तो पंजाब में हिन्दू मुसलमान सिख की एकता यह जरूर ही जोर दिया जाना चाहिये। तब दूसरे लोगों का कहना लाजिम था कि फिर और दूसरी जातियों का भी नाम क्यों न लिखा जाय। फल यह हुआ कि तमाम भिन्न २ धर्मावलम्बिनी जातियों की एकता का भी उल्लेख किया गया।

यह तरमीम अच्छी है क्योंकि इसमे यह जाहिर होता है कि हिन्दू मुसलिम एकता कोई डरावनी बात नहीं है बल्कि सब जातियों की एकता को चिन्ह है।

## ड्यूक आफ कनाट का बहिष्कार

इसी वर्ष के प्रारम्भ में ड्यूक आफ कनाट भी हिन्दुस्तान आए और कांग्रेस केमेटी के फैसले के अनुसार जनता ने

उनके स्वागत में हिस्सा लिया और शहर में जबरदस्त हड़ताल मनाई गई और एक विराट सभा में उनके वहिष्कार सम्बन्धी प्रस्ताव भी पास हुए।

ड्यूक आफ कनाट के आने के अवसर पर लेबर यूनियन की ६ फरवरी को आधे दिन की हड़ताल करने का आदेश दिया गया और उन्हें बताया गया कि वह ड्यूक आफ कनाट के किसी समारोह में भाग न लें।

## सहस्रों आदमी खद्दर पोश

एक ओर तो जनता को सूत कातने, खद्दर पहनने, और देशी वस्तुओं को व्यवहार में लाने का प्रोत्साहन दिया गया। शहर में हजारों आदमी खद्दरधारी नजर आने लगे।

## गांधी टोपी का प्रचार

इसके साथ ही गांधी टोपियों का बहुत ही रिवाज हो गया।

## विदेशी कपड़े वालों के प्रतिज्ञापत्र

दूसरी ओर राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं ने विदेशी कपड़ा बेचने वालों से प्रतिज्ञापत्र लिखवाये कि वह विदेशी कपड़ा बेचना बन्द कर देंगे, और केवल खद्दर या देशी कपड़ा ही बेचेंगे। इस आन्दोलन के बीच में गिरफ्तारियां शुरू हो गयीं, और विदेशी कपड़े

## विदेशी कपड़ों की होलियां

कई अवसरों पर विदेशी कपड़ों की होलियां हुई। विदेशी कपड़ों से सुसज्जित गधों के जलूस निकाले गये। प्रायः लोगों में यह साहस न था कि वह विदेशी कपड़ा पहन कर जलसों या जलूसों में सम्मिलित होते।

## अमन सभाओं का दौर-दौरा

सन १६२१ ही में अमन सभाओं का दौर-दौरा शुरू हुआ। और विशेषतः के साथ यू० पी० और पञ्जाब में उनका खास जोर बन्धा। देहली में भी कुछ खुशामदी व्यक्तियों ने अमन सभा कायम करने के लिये कम्पनी बाग में एक जलसा करना चाहा, मगर राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं ने उस जलसे पर कब्जा कर लिया और अमन सभा के प्रबन्धकों को अपनी मेज कुर्सियें उठा कर वहां से भागना पड़ा।

## मथुरा अमन सभा पर दिल्ली कार्यकर्ताओं का कब्ज़ा

इससे पहले मथुरा में इससे भी सख्त घटना हुई थी। वहां के तमाम खिताबयफ़ताओं और बहुत से रईसों ने कलक्टर के सभापतित्व में एक जल्से का प्रबन्ध किया। परन्तु जल्सा प्रारम्भ होते ही मि० आसफअली के नेतृत्व में मथुरा के कार्यकर्ताओं ने

जल्से पर कब्जा पा लिया, और कलक्टर साहब अपने सहायकों की टोली को वापि लेकर जल्से मे चल दिये। और उनका कार्यक्रम छिन्न-भिन्न हो गया।

## खिलाफत बोर्ड कमेटियों की स्थापना

खिलाफत कमेटी ने भी अपनी बोर्ड कमेटियां कायम कर दी थीं। दिसम्बर के आरम्भ तक देहली में बहुत सी वालन्टीयर कोरें कायम हो चुकी थीं, जिन में कुछ के नाम निम्न हैं :

## नई मुसलिम वालन्टियर कोरें

खुद्दामेहिन्द, नेशनल वालन्टीयरस, मुईने मिल्लत, खुद्दामेमदीना, फिदाये हक, नेशनल वालन्टियर।

यह उन वालन्टीयर कोरों के अलावा थीं जो इस से पहले कायम हो चुकी थीं और काम कर रही थीं।।

## ला० हनुमन्तसहाय कांग्रेस कार्य में

ला० हनुमन्तसहाय जिनका जिक्र सन १९१३ की घटनाओं में आ चुका है, रिहा होकर दिल्ली आ चुके थे, और वह कांग्रेस के कार्यों में बराबर लगे रहते थे।

## वृन्दावन में हिन्दू-महा-सभा

इस वर्ष सितम्बर के महीने में हिन्दू महासभा का अधिवेशन वृन्दावन में पं० मदन मोहन मालवीय के सभापतित्व में हुआ।

और देहली के कार्यकर्त्ता ला० शंकरलाल, ला० देशबन्धु, स्वामी श्रद्धानन्द, पं० नेकीराम शर्मा भिवानी वाले और पं० श्रीरामशर्मा भिवानी वाले इस कान्फ्रेन्स में सम्मिलित हुए।

## फौजों के लिये फी गौ-कशी बन्द हो

यहाँ यह प्रस्ताव पास हुआ कि जब तक फौजों के लिए गौ-कशी बन्द न हो, उसवक्त तक नान को-आपरेशन जारी रहे।

## हिन्दू-महा-सभा का दफ्तर देहली में

वहाँ से हिन्दू-महा-सभा का दफ्तर देहली में ले आये।

## शहीदहाल में आल इन्डिया गौ-रक्षा कान्फ्रेन्स

सत्याग्रह कमेटी के सभापति हकीम अजमलखाँ और सेक्रटरी ला० शंकरलाल थे और इस कमेटी की संरक्षता में नवम्बर मास में बड़ी धूम धाम के साथ आल इंडिया गो-रक्षा कान्फ्रेन्स शहीद हाल में हुई और उस का पंडाल मस्जिद के बराबर शहीद हाल के मैदान में तय्यार किया गया। ला० लाजपतराय इसके सभापति थे, और हकीम अजमलखाँ स्वागत कारिणी के सभापति थे।

## ला० शंकरलाल और स्वराज्य सेना

दिसम्बर के प्रारम्भ में ला० शंकरलाल ने स्वराज्य सेना के नाम से एकवालन्टीयर कोर कायम करने का विचार किया। यद्यपि इस नाम से कुछ वालन्टीयर पहले ही से उन की निगरानी में कार्य कर रहे थे, इस लिये उन्होंने एक बहुत ही जोशीला ऐलान और वालन्टीयर बनने के लिए मार्मिक अपील प्रकाशित की।

## ला० शंकरलाल व हनुमन्तसहाय गिरफ्तार

इस अपील के प्रकाशित होने पर ता० ११ दिसम्बर को ला० शंकरलाल, ला० हनुमन्तसहाय और श्री सूरजमल स्वामी, अध्यक्ष स्वराज्य आश्रम सहित गिरफ्तार होगये।

## शहीदहालहाल में स्वराज्य आश्रम

यह बात स्मरण रखनी चाहिये कि जिस दिन से दिल्ली प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने सविनय आज्ञा भंग की तय्यारी शुरू की थी, उसी दिन से एक स्वराज्य आश्रम शहीद हाल में स्थापित हो गया था। जो लोग इसमें आकर भरती होते थे उनके खाने, पीने और पहनने ओढ़ने का प्रबन्ध होता था और उनको वह तमाम

शर्तें पूरी करनी पड़ती थीं जो सविनय आज्ञा भंग आन्दोलन के लिए आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी ने मुकर्रर की थीं।

## महिलाओं की सभा में पर्दे के पीछे मर्द

एक विशेष घटना इस समय की यह भी उल्लेखनीय है कि अक्तूबर के महीने में महिलाओं की एक सार्वजनिक सभा लक्ष्मीनारायण की धर्मशाला में फतहपुरी पर हुई, जिस में यह प्रबन्ध किया गया कि पुरुष वक्ता परदे के पीछे खड़े होकर बोलें। इस समय में काम करने वाली महिलायें बहुत कम थीं। कांग्रेस कमेटी में सब से ज्यादह काम करने वाली डा० मिसेज वेदी थीं, जिन्होंने सन १९३०, १९३१ तक बड़े परिश्रम से कांग्रेस का कार्य किया।

## ला० देशबन्धु की दफा १४४ में जबान बन्दी

इस मौके पर ला० देशबन्धु ने देहली में काम करना शुरू कर दिया था और उस जनाने जल्से में जिस का ऊपर जिक्र हुआ अन्य और वक्ताओं के ला० देशबन्धु ने भी भाषण दिया था इस घटना के बाद ला० देशबंधु की दफा १४४ के मातहत जबान बंदी हो गई और वह यहां से बाहर कार्य करने को चले गए।

ला० देशबन्धु ने करनाल में कार्य करना आरम्भ कर दिया। वहाँ भी उनकी जबानबन्दी हो गई। उसके बाद वह देहली से ला० शंकरलाल और मि० स्टोकस को करनाल एक जलसे के लिये ले गये। जो भाषण मि० स्टोकस ने वहां उस अवसर दिया उस पर उनके विरुद्ध मुकदमा चला और ६ मास की सजा होगई।

## ला० शंकरलाल ला० देशबन्धु को दिल्ली लाये

इस अवसर पर ला० शंकरलाल, ला० देशबन्धु को अपने साथ लेकर दिल्ली आगये और तब से ला० देशबन्धु दिल्ली में ही काम कर रहे हैं। यहां आने पर ला० देशबन्धु प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के मंत्रियों में से एक मन्त्री नियुक्त हुए। और कुछ समय बाद उनकी फिर यहां जबान बन्द होगई।

## प्रिन्स आफ वेल्स के स्वागत का बहिष्कार

नवम्बर में प्रिन्स आफ वेल्स हिन्दुस्तान आये और उनके आने के अवसर पर कांग्रेस कमेटी की ओर से यह फैसला हुआ कि, क्योंकि प्रिन्स आफ वेल्स को हिन्दुस्तान इस अभिप्राय से बुलाया गया है कि गवर्नमेंट ने जो सख्ती का दौर-दौरा शुरू कर दिया था उस पर पर्दा पड़ जाय। इस लिये हिन्दुस्तान में उस सरकारी स्वागत में, जिसका सरकारी तौर

पर प्रबन्ध किया जाय, लोग कोई हिस्सा न लें। देहली में भी इस प्रस्ताव पर कार्य किया गया और इस लिये १७ नवम्बर को सारे देश की तरह दिल्ली में भी हड़ताल मनाई गई क्योंकि १७ नवम्बर को प्रिन्स आफ वेलस जहाज से हिन्दुस्तान में उतरे थे।

## प्रिन्स के स्वागत की समर्थन वाली सभा पर अधिकार

देहली में राजधानी होने के कारण से एक खास विशेषता रखती थी। इस लिये यहां सरकारी तौर पर यह प्रबन्ध किया गया कि बहुत से गांव-गवों के आदमियों को जिनमें बहुत से अछूत थे, पत्थर वाले कुयें पर एक कानफरेन्स में जमा किया गया। बयान यह किया जाता है कि कुछ सरकारपरस्त हल्के के आदमियों ने इन जमा होने वालों से कुछ इनामों के वायदे वगैरह भी किये, और मि० हेमचन्द एम० एल० सी० इस जलसे के सभापति थे। इस कानफरेन्स में दिल्ली के कार्यकर्ता भी सम्मिलित हुए। जिनमें ला० शंकरलाल और ला० देशबन्धु के नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं। प्रारम्भ में राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को इस कानफरेन्स में बोलने को आज्ञा नहीं मिली, लेकिन आखिर में यह बोले और इस कानफरेन्स पर अधिकार कर लिया। यद्यपि प्रातः जब सभापति का जलूस निकला था उस समय इस कानफरेन्स में सम्मिलित होने वालों ने सरकार

के जयकारे लगाये थे। मगर शाम को राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के कब्जा पा लेने के बाद उन्होंने कांग्रेस और म० गांधी के जयकारे लगाये।

## सरकार के नारों की जगह महात्मा जी की जय के नारे

जब प्रिन्स आफ वेल्स दिल्ली आये तो उनके स्वागत के लिये सरकारी तौर पर विशेष प्रबन्ध किया और बहुत से गंवारों को एकत्र किया गया कि वह जलूस के गुजरने के समय जयकारे लगायें। मगर बयान दिया जाता है कि उस अवसर पर कुछ लोग उस भीड़ में मिल गये और जिस समय शहजादे का जलूस गुजरने लगा तो उन्होंने म० गांधी की जय के नारे लगाए और उनके साथ बाहर के आये हुए गंवारों ने भी आवाज में आवाज मिलाई।

क्योंकि प्रिन्स आफ वेल्स के बम्बई आने के अवसर पर हड़ताल हुई थी और उस हड़ताल में कुछ अनुचित घटनायें पेश आयीं और एक बलवे की शक्ल हो गई। इन घटनाओं से प्रभावित होकर महात्मा जी ने पांच दिन तक स्वयं उपवास करने की घोषणा की और उसी सम्बन्ध में एक दिन के लिये बहुत से लोगों ने भी व्रत रखा, और शाम को जमना की रेती में जलसा हुआ।

## महात्मा जी का सोमवार को मौन रखने का निश्चय

इस समय से महात्मा जी ने यह प्रतिज्ञा की कि जिस समय तक स्वराज्य प्राप्त न हो जायगा मैं हर सोमवार को २४ घन्टे का मौनव्रत रक्खा करूंगा।

## राष्ट्रीय झण्डा बना

राष्ट्रीय झण्डा भी इसी वर्ष तैयार किया गया और म० गांधी के आदेशानुसार उसका देश भर में प्रचार हुआ। इस समय राष्ट्रीय पताका के रंग इस तरीके पर तय किये गये थे कि सब से ऊपर सफेद पट्टी, बीच में हरी और नीचे लाल और झन्डे के बीच में एक चरखा।

चरखा इस बात का चिन्ह था कि इस देश का उद्धार मेहनत करके जीविका कमाने से होगा। लाल पट्टी हिन्दुओं का रंग, हरी रंग की पट्टी मुसलमानों का, और सफेद पट्टी में अन्य तमाम धर्मावलम्बी सम्मिलित थे।

जिस दिन से राष्ट्रीय झण्डा बना देहली की तमाम कांग्रेस कमेटियों पर, और सैकड़ों घरों और दुकानों पर लहराता है।

## चार वालंटियर कोरें गैरकानूनी

हम ला० शकरलाल और ला० हनुमन्तसहाय की गिरफ्तारी का जिक्र ऊपर कर आये है। उनकी गिरफ़्तारी से पूर्व सरकार ने चार वालन्टियर कोरों को गैरकानूनी घोषित कर दिया था जिनमें से एक स्वराज्य सेना और बाकी जमीयते अन्सार, अन्वार वालन्टियर कोर, और खिलाफत वालन्टियर कोर थीं।

इस लिये ता० १२ दिसम्बर को ३० वालन्टियर खिलाफत कोर के, १० स्वराज्य सेना के और १० अन्वार कोर के मि० आसफअली के मकान पर जमा हुए।

## सरकारी आज्ञा को उल्लंघन करने का नोटिस

पहले मि० आसफअली ने स्थानीय अधिकारियों को नोटिस भेजा कि हम लोग आज आपके हुक्म का उल्लङ्घन करेंगे, और आप हमें जामा मसजिद से गिरफ़्तार कर सकते हैं।

उसके बाद जलूस बना कर यह तमाम वालन्टीयर मि० आसफअली के साथ जामामस्जिद गये, और जामामस्जिद के अन्दर बैठ कर गिरफ्तारी की प्रतिक्षा करने लगे। मगर जामामस्जिद के अन्दर उनमें से किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया, बल्कि पुलिस के सौ जवान लाठियां लेकर अस्पताल की ओर आकर जमा हो गये। इन्स्पेक्टर को बुला कर जब मि०

आसफअली ने पूछा कि आप हमें गिरफ्तार क्यों नहीं करते तो उसने कहा कि जब आप लोग नीचे उतरेंगे, उस वक्त देखा जायगा।

## मि० आसफअली जत्थे सहित गिरफ़्तार

इतने समय में शहर वालों की भीड़ बहुत बढ़ गई थी। यह खयाल करके कि लोगों पर कहीं लाठी चार्ज न हो, मि० आसफ-अली ने यह निश्चय किया कि एक २ करके तमाम गिरफ्तार होने वाले नीचे जांय, और अपने आपको पुलिस के हवाले कर दें। इस प्रकार यह सब गिरफ़्तार हो गये, और कोतवाली ले जाये गये। इस समय लोगों की बहुत बड़ी भीड़ कोतवाली के सामने जमा हो गई थी। तीन चार घन्टे की प्रतिक्षा के बाद गिरफ्तार व्यक्तियों को जेल पहुँचाया गया।

## सात प्रमुख कार्यकर्ता गिरफ़्तार

उसी रात को डाक्टर अब्दुररहमान, शेख मोहम्मद तकी वकील, पं० शिवनारायन हक्सर, सरदार नानकसिंह, पं० राधा रमण भार्गव, मौलाना अब्दुल्ला और 'ला० देशबन्धु देहली के इन सात ऐसे कार्यकर्ताओं को जिनपर बहुत कुछ देहली के कामों का भार था, दफ़ा १०७ में गिरफ्तार कर लिया गया।

महात्मा गांधी के ऐतिहासिक जलूस का एक दृश्य

## गिरफ्तारियां करनी बन्द कर दीं

इसके बाद वालन्टियरों की गिरफ्तारियों का तांता बंध गया। हर दूसरे तीसरे दिन दस दस बीस बीस के जत्थे गिरफ्तार होते थे। यहां तक कि गिरफ्तारियों की संख्या ३५०, ४०० तक पहुंच गई। उसके बाद स्थानीय अधिकारियों ने अपना तरीका बदल दिया, यानी दो एक को कभी गिरफ्तार कर लिया और बाकियों के बैज, झण्डे, वर्दीयां थैले इत्यादि छीन लिए और उन्हें छोड़ दिया।

## कार्यकर्ताओं के मुकदमे और सजायें

तारीख १५ दिसम्बर से जेल में मुकदमे और सजायें शुरू हो गईं। ला० शंकरलाल को ३ बरस, मि० आसफअली को डेढ़ बरस, ला० हनुमन्तसहाय को ६ महीने और दफा १०७ में गिरफ्तार हुए व्यक्तियों को एक एक बरस की सजा और बाकी सब को ९ महीने से ३ महीने तक की सजायें हुईं।

तमाम देश में घटनाओं की यही रफ्तार थी, और गिरफ्तारियों की ऐसी ही भरमार। अन्दाजा यह किया जाता है कि गिरफ्तारियां ८० हजार तक पहुंच गई और देश के प्रमुख २ नेता जेलखानों में पहुंच गए।

## बम्बई कांग्रेस में ६२ डेलीगेट गये

इस वर्ष के अन्त में कांग्रेस का अधिवेशन बम्बई में होना निश्चित हुआ था, और सभापति हकीम अजमल खां थे। देहली प्रान्त से भी ६२ डेलीगेट गए, इनमें ७ औरतें, १३ मुसलमान, ४ सिक्ख और ६७ हिन्दु गए थे।

## राजनैतिक बन्दी सहायक फण्ड

इन गिरफ्तारियों वगैरह के बाद राजनैतिक बन्दियों की सहायता के लिए डाक्टर अन्सारी और हकीम अजमल खाँ ने एक फण्ड खोला। बयान किया जाता है कि लोगों ने इस सहायता फण्ड में २ हजार रुपए माहवार तक चन्दा देने के वायदे किए।

## महात्मा गांधी का ऐतिहासिक जलूस

१३ फरवरी सन १६२१ को महात्मा गांधी जब दिल्ली आए, तो उनके स्वागत और जलूस में लोगों का इतना जनसमूह था कि शायद दिल्ली के इतिहास में लोगों का इतना घना जनसमूह केवल एक या दो अवसरों पर ही और हुआ होगा।

बयान किया जाता है कि उन दिनों नरेन्द्र मण्डल की मीटिंग दिल्ली में हो रही थी, इसलिए बहुत से रईस, राजा

और नवाब वेष बदल कर और छुप छुप कर इस जलूस को देखने के वास्ते आए और एक महाराजा साहब ने तो लाल किले के कलकत्ती दर्वाजे पर से इस जलूस को देखा।

## तिब्बिया कालेज का उद्घाटन

इसी अवसर पर हकीम अजमल खां साहब ने बड़ी धूमधाम से महात्मा गांधी के हाथों से तिब्बिया कालेज का उद्घाटन समारोह कराया। यह वही कालेज था कि जिसका बुनियादी पत्थर लार्ड हार्डिंग ने रक्खा था।

## दिल्ली का बड़ा इतिहासिक चर्खा

इस वर्ष की अहमदाबाद कांग्रेस में देहली वाले वह बड़ा इतिहासिक चर्खा भी साथ ले गए थे कि जो देहली के जलूसों में ठेले पर लद कर निकलता है। यह चर्खा एक प्रकार की नई और आश्चर्यजनक वस्तु थी। यह चर्खा १२ फुट लम्बा, ६ फुट चौड़ा और ८ फुट ऊँचा था। इसे राष्ट्रीय झण्डे के रंगों से रंगा गया था। हर पंखड़ी पर एक तोप बनी हुई थी, और बीच बीच की पंखड़ियों पर भिन्न भिन्न फिकरे लिखे हुये थे, जैसे—'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है', 'गुलामी से मरना अच्छा है' इत्यादि। यह चर्खा भी मौलाना अब्दुल्ला की सूझ का नमूना था। वर्षों काम देने के बाद पहले तो यह शहीद हाल में

रखा रहा करता था, और आजकल डाक्टर अन्सारी साहब की कोठी पर रखा हुआ है।

इस वर्ष को खतम करने से पहले हमारा कर्त्तव्य है कि हम यह बता दें कि नागपुर कांग्रेस के बाद महात्मा जी ने यह घोषणा कर दी थी कि यदि कांग्रेस के बताये हुये अहिंसा, असहयोग के कार्यक्रम पर देश ने पूरी तरह कार्य किया और हर परीक्षा में उत्तीर्ण रहे तो एक साल में स्वराज्य मिल जायगा। इस ऐलान ने लोगों में -कार्य करने की एक आग लगा दी थी और प्रत्येक मनुष्य यह विश्वास किये बैठा था कि नान-को-ओपरेशन का प्रोग्राम पूरा कर लेने पर स्वतन्त्रता हमारे चरण चूमेगी।

देहलीमें साल भर तक तमाम देश की तरह बल्कि कई प्रकार से तो देश के और भागों से कुछ अधिक राजनैतिक उत्तेजना, उत्साह और रचनात्मक कार्य की गर्म बाजारी रही। साल भरतक गली २ और कूंचे २ में भाषण होते थे। स्वदेशी पहनने और सूत कातने के लिये प्रोत्साहन दिया जाता था, और राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के पास सरकारी नौकर आते थे और कहते थे कि अगर हमारे बाल-बच्चों के खाने का सहारा भी हो जाय, तो आज हम सरकारी नौकरी छोड़ने को तैयार है। कालेजों और स्कूलों में सख्त बेचैनी थी और विद्यार्थियों में नानकोआपरेशन

के लिये काफी उत्साह था मगर मनुष्य की प्रकृति का तकाज़ा ऐसा सख्त है कि इतने जोश और उत्साह के बाद भी जोश के इस आसमान से बातें करने वाली बाढ़ का परिणाम सीमित ही रहा। लहरें तो पहाड़ों के बराबर उठीं और कुर्बानी और त्याग के प्रशंसनीय उदाहरण भी सामने आये मगर संसारी सम्बन्ध के बन्धनों ने बहुमत के कदमों को कुर्बानी के रास्ते पर चलने से रोक रखा।

# आठवां अध्याय

## सन् १९२२

### कपड़े और शराब पर पिकेटिंग

सन १९२२ में प्रारम्भ से ही गिरफ्तारियों की भरमार हो रही थी। मगर जब गिरफ़्तारियां कम होने लगीं तो वालन्टियरों ने शराब और कपड़े की दुकानों पर पिकेटिंग प्रारम्भ कर दिया। इन अवस्थाओं में केवल जत्थेदार गिरफ्तार हो जाते थे और बाकी को छोड़ दिया जाता था।

## गिरफ़्तारियां करनी छोड़ दीं

यदि कुल सविनय आज्ञा भंग करन वालों को पकड़ा जाता तो उनकी संख्या दिसम्बर से फरवरी तक दो हजार से कम न होती। इस लिये कि अठारह सौ के लगभग तो नियमानुसार भर्ती हुए वालन्टियर ही थे।

## लाठी-चार्ज

इस आंदोलन के समय में अव्वल तो लाठीचार्ज होता न था और यदि कभी-कभी हुआ भी तो मामूली प्रकार का हुआ।

एक खास विशेषता इस आंदोलन के समय में यह थी कि मुसलमानों की संख्या आंदोलन में भाग लेने वालों में बहुत अधिक होती थी। तमाम देश में आंदोलन बड़े जोर पर चल रहा था कि म० गांधी बारडोली का आंदोलन प्रारम्भ करने के लिये वहां पर गये।

## चोरी चोरा कांड

दुर्भाग्य से उसी वक्त चौरी चोरा में थाना जला दिया गया और २०-२१ सिपाही और चौकीदार मार डाले गये।

## सविनय आज्ञा-भग आंदोलन रोक दिया

महात्मा जी पर इस घटना का सख्त प्रभाव हुआ, और

उन्होंने सविनय आज्ञा भंग आंदोलन को रोकने का विचार कर लिया और फिर इसकी घोषणा भी करदी ।

यह घटना ४ फरवरी को हुई थी। देहली में प्रिन्स आफ वेल्स के आगमन के सम्बन्ध में हड़ताल का बहुत पूरा प्रबन्ध किया जा रहा था कि जब हकीम अजमलखां को आंदोलन रोकने का तार मिला। बड़ी सख्त कोशिशों के बाद उन्होंने रोकथाम की। परन्तु जनता पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ा और जनता के बढ़ते हुए जोश और उत्साह पर पानी पड़ गया।

## आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की मीटिंग

जो फैसला महात्मा जी ने बारडोली में वर्किंग कमेटी में किया था, वह स्वीकृति के लिये आल इडिया कांग्रेस कमेटी में पेश होना जरूरी था। इस लिये उसके बाद ही २४, २५ फरवरी को देहली में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन हुआ। हकीम अजमलखां सभापति थे।

## व्यक्तिगत सविनय आज्ञा भंग आँदोलन

महात्मा जी की भरसक कोशिशों के बाद भी आल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने बारडोली के प्रस्ताव में संशोधन किये और विशेष शर्तों के साथ प्रांतों और जिलों को यह आज्ञा देदी कि यदि यह शर्ते पूरी हो जायं तो वह व्यक्तिगत सविनय आज्ञा

भंग आंदोलन की आज्ञा देदें। प्रायः लोगों के यह विचार हो गये थे कि बारडोली का प्रस्ताव पं० मदनमोहन मालवीय जी के प्रस्ताव पर पास किया गया था। मगर महात्मा जी ने इसका खन्डन कर दिया।

मि० वी० जे० पटेल ने संशोधित प्रस्ताव का समर्थन किया, मगर डा० बी० एस० मुन्जे और स्वामी सत्यदेव ने एक और संशोधन पेश किया कि एक सब कमेटी इस कार्य के लिये बना दी जाय कि वह यह देखे कि अहिंसा का प्रोग्राम कार्य करने योग्य है या नहीं। परन्तु अधिक बहुमत से यह संशोधन गिर गया।

## म्युनिसिपल कमेटी के चुनाव

मार्च के अन्त में म्युनिसिपल कमेटी के चुनाव हुए। कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं ने म्युनिसिपेलिटी में कई हिन्दू मुसलमानों को खड़ा किया और वह सफल हो गये, वह पार्टी जो कांग्रेस की ओर से कमेटी में गई थी, प्रारम्भ में ला० प्यारेलाल के नेतृत्व में कार्य करती रही। मगर जब राष्ट्रीय आन्दोलन का उतार होने लगा तो साम्प्रदायिक मतभेद फूट पड़े, और पारटी करीब २ टूट गई।

## कांग्रेस वार्ड कमेटियों में ठन्डापन

आन्दोलन को स्थगित करने की घोषणा के बाद से दिल्ली में गिरफ़्तारियें वग़ैरह बन्द हो गईं। यद्यपि प्रान्तीय, जिला और वार्ड कमेटियां सन् १९२३ के अन्त तक कार्य करती रहीं, मगर प्रायः ठन्डापन आ गया था।

## सविनय आज्ञा भंग आन्दोलन जांच कमेटी

जून में आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी ने लखनऊ में एक सब कमेटी बनाई जो बाद में "सविनय आज्ञा भंग आन्दोलन की जांच कमेटी" के नाम से विख्यात हुई, जिस ने देश भर का दौरा किया और गवाहियें कलमबन्द कीं। इस कमेटी के सदस्यों में देहली से हकीम अजमलखां और डाक्टर अन्सारी सम्मिलित थे। दौरे के अन्त में पं० मोतीलाल नेहरू, हकीम अजमलखां और मि० वी० जे० पटेल ने यह सिफारिश की, कि यद्यपि सविनय आज्ञा भंग करना प्रजा का कानूनन अधिकार है, मगर देश के वातावरण को दृष्टि में रखते हुए सविनय आज्ञा भंग आन्दोलन को बन्द कर देना चाहिए, और कौंसिल में जाने की आज्ञा होनी चाहिये। डाक्टर अन्सारी, मि० सी० राजगोपालाचार्य और मि० कस्तूररंगा आयर ने यह सिफारिश की कि कौंसिलों के प्रवेश के सम्बन्ध में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

जमीयत उल उल्मा और खिलाफत कमेटी ने भी आखरी सिफारिश का समर्थन किया।

## दिल्ली के कार्यकर्त्ता

देहली में इस समय के कार्य करने वालों में जून तक मौलाना कारीअब्बास, मौ० कुतुबुद्दीन, मि० अजीजहुसैन, डाक्टर मिसेज वेदी, मुन्शी जहीरुद्दीन, मि० अमीरचन्द खोसला, ला० बुलाकीदास गोटेवाले, ला० प्यारेलाल मोटरवाले, अग्रसर थे।

## ला० हनुमन्तसहाय और स्वयंसेवक रिहा

मार्च के अन्त से वह वालन्टियर जिन्हें तीन तीन मास की कैद हुई थी, छुटने शुरू हो गये। जून में ६, ६ मास की कैद वाले भी रिहा हो गये। ला० हनुमन्तसहाय भी जेल से छूट कर आगये और उसके बाद से उन्होंने कांग्रेस का कार्य सम्हाला।

इन्हीं दिनों में कुछ सप्ताह के लिये सय्यद हैदररजा भी हिन्दुस्तान वापिस आगये और लखनऊ आल इन्डिया कांग्रेस कमिटि के अवसर पर वहां गये भी। मगर उस समय तक कुछ साम्प्रदायिक वातावरण पैदा होना शुरू हो गया था और किसी कारण से सय्यद हैदररजा वापिस चले गये।

## डा० अब्दुररहमान और मि० तकी रिहा

अगस्त में डाक्टर अब्दुररहमान और शेख मोहम्मद तकी वकील भी छूट गये और तकी साहब ने कांग्रेस का कार्य फिर शुरू कर दिया। तमाम वर्ष कांग्रेस के जल्से शहीद हाल और शहर के भिन्न २ भागों में होते रहे।

## कई वार्ड कमेटियों ने भी विद्रोह किया

वार्ड कमेटियां भी कार्य करती रहीं। दो एक वार्ड कमेटियां बागी भी हो गईं और हिसाब इत्यादि देने से भी इन्कार कर दिया मि० मोहम्मद तकी, डाक्टर अब्दुररहमान और ला० हनुमन्तसहाय की रिहाई पर बधाई देने के लिए जल्से भी हुए।

## "अंगोरा लीजन" की स्थापना

इन्हीं दिनों खिलाफत कमेटी ने यह फैसला किया कि तुर्कों कीउम हकूमत के पक्ष में जो मुस्तफा कमाल ने अंगोरा पर बनाई थी, पचास हजार वालन्टियर भर्ती किये जायं, और इस "अंगोरा लीजन" के लिये दस लाख रुपया एकत्रित किया जाय, एक प्रकार से इस आन्दोलन का केन्द्र भी दिल्ली में कायम हुआ और डाक्टर अन्सारी ने इसका पूरा समर्थन किया।

## मौ० अहमद सईद व अजीज अन्सारी रिहा

वर्ष के समाप्त होने से पहले मौलवी अहमद सईद और मि० अब्दुल अजीज अन्सारी भी जेल से रिहा हो कर वापिस आ गये।

## अमृतसर में स्वामी श्रद्धानन्द गिरफ्तार

सितम्बर मास में स्वामी श्रद्धानन्द जी अमृतसर में गिरफ्तार कर के कैद कर दिये गये।

## कई प्रमुख कार्यकर्ता रिहा

साल के अन्त में मौलाना अब्दुल्ला, ला० देशबन्धु, पं० शिवनारायण इकसर, सरदार नानकसिंह और अन्य सब वालन्टीयर रिहा होकर वापिस आ गये और केवल शंकरलाल स्वामी श्रद्धानन्द और मि० आसफअली जेल में रह गये।

## जेल से महात्मा जी का हकीम जी के नाम एतिहासिक पत्र

इस वर्ष महात्मा जी ने जेल से हकीम साहब के नाम एक मशहूर पत्र लिखा था, जिसकी नकल इस प्रकार है:—

साबरमती जेल—१२ मार्च १६२२

प्रिय हकीमजी,

मेरी गिरफतारी के बाद पता लगाने पर मुझे मालूम हुआ कि जबतक मुझे सज़ा ना हो जाय तबतक मैं चाहूं जितने पत्र लिख सकता हूं, सो यह पहला हो पत्र आपको लिख रहा हूं आपको मालूम होगा कि शङ्करलाल बैंकर भी मेरे साथ हैं। मुझे इस बात से खुशी होती है कि वह मेरे साथ हैं। सब लोग इस बात को जानते हैं कि इनका मेरे साथ कितना निकट सम्बन्ध हो गया है। अतः हम दोनों के साथ ही पकड़े जाने से हमें हर्ष होना स्वभाविक ही है। यह पत्र मैं महासभा की कार्य समिति का सभापति अतएव हिन्दू मुसलिम दोनों का एक और सच पूछिये तो भारत का नेता समझ कर लिख रहा हूं।

मुसलमानों के एक महान नेता मानकर और इसलिये अपना एक परम मित्र समझ कर भी आपको यह पत्र लिख रहा हूं। १६१४ से आपके परिचय का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है, ज्यों ज्यों आपका परिचय अधिकाधिक होता गया त्यों त्यों आपकी मित्रता रूपी खज़ाने का मूल्य विशेष मालूम होने लगा। स्वयं कट्टर मुसलमान होते हुए भी आपने अपने जीवन के द्वारा यह दिखला दिया है कि हिन्दू मुसलमानों की मित्रता क्या चीज है।

बिना हिन्दू मुसलिम एकता के हम अपनी आज़ादी नहीं प्राप्त कर सकते।

यह बात आज हम इतनी अच्छी तरह जानते हैं जितनी कि इससे पहले नहीं जान पाये थे और मैं तो यहां तक कहता हूं कि बिना इस मित्रता के भारत के मुसलमान खिलाफत की वह सेवा नहीं कर सकते जो कि वह चाहते हैं, फूट से तो सदा गुलाम बने रहेंगे। हिन्दू मुसलमान की एकता के धर्म्म को ऐसा सुविधा का धर्म्म नहीं बनाया जा सका कि जबतक चले तबतक ठीक जिस दिन ना बनेगी उस दिन छोड़ बैठेंगे।

हम उस एकता को उसी दिन तिलांजलि दे सकते हैं जब स्वराज्य हमारे लिये भार रूप हो जाय। हमारी तो यही निश्चित नीति अपना धर्म्म होना चाहिये कि हर समय और हर स्थिति में हिन्दू मुसलमान की एकता कायम रखी जाय।

फिर यह एकता पारसी, ईसाई, यहूदी अथवा बलशाली सिक्ख जैसी दूसरी छोटी छोटी जातियों के लिए कदापि भार रूप न होना चाहिये। यदि हम इनमें से किसी एक भी जाति को दबाने का विचार करेंगे तो किसी दिन हम आपस में ही एक दूसरे के साथ लड़ मरेंगे। आपके प्रति मेरा जो यह सुहृदभाव है उसका खास कारण यह है कि आप यह मानते हैं कि हिन्दू मुसलमान की शुद्ध मित्रता तो अनिवार्य है।

मेरी राय में तो जबतक हम लोग अहिंसा को व्यवहारनीति के तौर पर दृढ़ता पूर्वक ना स्वीकार करेंगे तबतक हिन्दू मुसलमान में एकता स्थापित होना अशक्य है।

इस चित्र के बीच में कांग्रेस के संस्थापक मि० ए० ओ० ह्यूम अपने सहयोगियों के साथ खड़े हैं।

मैं व्यवहार नीति इसलिये कहता हूं कि अहिंसा धर्म्म को स्वीकार हम हिन्दू मुसलमान एकता की रक्षा करने के लिये कर रहे हैं, पर इसका परिणाम तो यही निकलता है कि एक खास समय तक नहीं, परन्तु सदा के लिये एकता के साथ सगे भाई की तरह रहने वाले हिन्दू मुसलमानों का, भारत सारी दुनियां के साथ टक्कर ले सकें, और ऐसे तीस करोड लोग यहां के अंग्रेज शासकों से अपना निपटारा कराने के लिए हिंसा मार्ग को ग्रहण करना केवल कायरता मानें। आजतक तो हम अपनी सिधाई के कारण उनसे और उनकी बंदूकों से डरते रहे, पर जिस घड़ी हम अपनी एकता का बल प्राप्त कर लेंगे, उसी घड़ी उनसे डरना और डरकर उनपर हाथ उठाने का विचार करना हमें बिलकुल नामर्दी दिखेगी। इसलिये मैं इस बातसे आतुर और अधीर हूं कि कब मेरे देश भाई अहिंसा को कमजोरी की नहीं किन्तु जोर और ताकत की दृष्टि से देखने लगेंगे। पर मैं और आप दोनों जानते हैं कि अभी हम सबलता की अहिंसा नहीं पैदा कर सके हैं, और इसका कारण यही है कि अभी हम हिन्दू मुसलमान एकता को व्यवहार नीति ही मान रहे हैं, इससे आगे नहीं बढ़ पाये हैं। अभी हमारे आपस में एक दूसरे के प्रति इतना अधिक अविश्वास है जिससे डर मालूम होता है, पर मैं निराश नहीं हूं इतने समय में जो हमने प्रगती की है वह अद्भुत है एक जमाने का काम हमने डेढ बरस में कर डाला है।

पर अभी बहुत काम करने की जरूरत है क्या जनता और क्या शिक्षित समाज दो में से किसी की नस नस में यह बात नहीं बठ गई है कि यह एकता हमारे लिए प्राण रूप है, भारत के हिन्दू मुसलमानों की एकता पर दिवाने की तरह विश्वास रखने वाले थोड़े भी हिन्दु मुसलमान यदि हों तो उस से सारी जनता में ऐक्य की भावना को फैलते हुए जरा भी देर न लगे। हम में से कुछ लोगों को तो पहले पहल यह ठीक २ समझ लेना चाहिये कि मन वचन और कर्म्म से पूर्ण अहिंसा का पालन किये बिना हमारी इतनी प्रगति नहीं हो सकती, जिस से हमारी राजनैतिक आकांक्षायें पूर्ण हो सकें। मेरी इस ऊपर बताई कुन्जी पर जिन कार्यकर्त्ताओं का विश्वास ना हो, वे हमारे दल में नहीं रहने पावें। मैं आप से तथा कार्य समिति से अनुरोध करता हूं कि आप इस बात की चिंता रखें।

मेरी दृष्टि में तो सारे हिन्दुस्तान की ऐसी एकता की अतएव राजनैतिक आकांक्षा की सिद्धि के लिए अहिंसा को अनिवार्य्य साधन के तौर पर जनता के द्वारा माने जाने का साक्षात चिन्ह चर्खा खादी है, जो लोग अहिंसावृत्ति तथा हिंदू मुसलमान साक्षात एकता कायम करने के कायल होंगे, वे रोज चरखा कातेंगे।

मेरी दृष्टि में तो भारत की राष्ट्रीय एकता का तथा अहिंसा का यही पक्का सबूत है कि घर २ सूत काता जाया करें, और सब लोग हाथकती बुनी खादी पहना करें। यही चीज इस बात

को सिद्ध करेगी कि भारत के करोड़ों मूक प्रजा जनों के साथ हमारा कुटुम्ब भाव है । लोगों के नित्य नियम के तौर पर चर्खा कातने तथा धर्म्म और पूजा भाव से खादी पहरने से ही भारत की जातियों में अटूट ऐक्य की भावना उदभूत होगी और देश में नया खून दौड़ने लगेगा । ऐसा काम दूसरी किसी जाति से नहीं हो सकेगा ।

हां मैं यह जरूर चाहता हूं कि जिन लोगों ने अभी अपने खिताब नहीं छोड़ें हैं वे छोड़ दें । वकील लोग विकालत छोड़ दें, विद्यार्थी सरकारी स्कूल छोड़ दें, धारा सभा के सभ्य धारा सभायें छोड़ दें, सिपाही और सिविलयन अपनी नौकरियां छोड़ दें ।

तथापि मैं इस बात पर विशेष जोर देना चाहता हूं कि मैंने जो काम ऊपर बताया है उसमें तथा अब तक जो काम हो चुका है, उसे पक्का करने में लग जायें, तथा देश से मैं आग्रह करता हूं कि जिस शासन तन्त्र को सुधारने या मिटाने का यत्न हम कर रहे हैं उसका त्याग कराने के विषय में हम स्वयं अपने ही बल पर विश्वास रखें ।

फिर काम करने वाले लोग तो ऊंगलियों पर गिनने लायक हैं । अतएव ऐसे समय में जब कि रचनात्मक काम का ढेर हमारे सामने पड़ा हुआ है । मैं नहीं चाहता कि खँडनात्मक अर्थात् विघा तक कार्य में हमारा एक भी आदमी लगा रहे पर, विघातक

कार्य के खिलाफ बड़ी से बड़ी दलील तो यह है कि देश में आज ऐसी असहिष्णुता का जोश उमड़ पड़ा है जैसा पहले कभी नहीं उमड़ा था और असहिष्णुता क्या है हिन्सा ही है । सहयोगी भाई हम से अलग हो गये हैं वे हम से चौंकते हैं। वे कहते हैं कि हम तो वर्तमान नौकरशाही से भी खराब नौकरशाही तैयार कर रहे हैं। हमें चाहिये कि हम उन को इस चिन्ता का प्रत्येक कारण जड़मूल से उखाड़ कर फेंक दें उन्हें जीत कर अपना बनाने के लिये यदि हमें थोड़ा बहुत दबना झुकना भी पड़े तो इसमें कोई हर्ज नहीं। हमें अंग्रेज भाइयों को अपने भय से मुक्त कर देना चाहिये। यह बात कि अहिंसा की प्रतीज्ञा धारण करने से हम अपने कट्टे से कट्टे विरोधी के भी प्रति नम्रता और सद्भावना रखने के बाध्य हैं। जितनी आपको और मुझको स्पष्ट दिखाई देती है उतनी यदि सब लोगों को दिखाई देती होती तो मुझे इतने विस्तार के साथ इसकी चर्चा ही ना करनी पड़ती।

यदि मेरे बताये रचनात्मक काम में देश ठीक २ लग जायगा तो इस भावना का प्रचार अपने आप हो जायगा। मुझे इस बात का मोह है कि मेरी कैद हमारे लिये बहुत समय तक काफी है। मेरी यह नम्र धारणा है कि मेरा किसी के साथ वैरभाव नहीं कितने ही मित्रों को यह बात अच्छी नहीं मालूम होती कि जितने दरजे तक मैं अहिंसा धर्म का पालन करता हूं उतने दरजे तक वे भी करें।

पर हमारा तो यही इरादा था कि केवल वही मनुष्य जेल जायें जो बिलकुल निर्दोष हों और यदि मैं बिलकुल निर्दोष होने का दावा कर सकता हूं तो यह स्पष्ट है कि दूसरा कोई भी पुरुष मेरे पीछे जेल जाने का प्रयत्न ना करे, हां हम इस सरकार का नाश करना तो ज़रूर चाहते हैं पर धमकी के द्वारा नहीं बल्कि अपनी निर्दोषता के अमोघ शस्त्र के द्वारा। जिस तरह बन पड़े उसी तरह जेलों को भर देना मेरी राय में तो धमकी ही है, और जब तक यह ना मालूम होजाय कि जो सबसे अधिक निर्दोष माना जाता है उसका जेल जाना भी काफी नहीं है, तब तक दूसरे निर्दोष लोगों को जेल जाने की कोशिश क्यों करनी चाहिये।

मेरे इस कथन का कि और लोगों को जेल ना जाना चाहिये, यह अर्थ नहीं है कि जेल से दुम दबाई जायं, यदि सरकार खुद प्रत्येक असहयोगी को गिरफ्तार करले तो इसका तो मैं स्वागत ही करूंगा—मेरा अभिप्राय सिर्फ इतना ही है कि तीव्र अथवा शान्त किसी भी प्रकार का सविनय भंग करके हमें जेल ना जाना चाहिये।

उसी प्रकार मैं यह आशा करता हूं कि जो लोग इस समय जेलों में हैं उनके लिये देश कुपित ना होगा जेल में रहने वाले लोग यदि अपनी पूरी मियाद तक सज़ा भोगते रहे तो इससे स्वयं उनको तथा देश दोनों को लाभ ही होगा।

शोभा तो इसी बात में है कि मियाद खतम होने से पहले वे स्वराज्य की धारा सभा के ही हाथों जेल से छूटें और मेरी दृढ़ धारणा है कि यदि तीस करोड़ भारतवासी खादी पहनने लग जायं तो यही स्वराज्य है।

छुवाछूत के मैल को धो डालने के विषय में मैं यहां कुछ कहने की आवश्यकता नहीं समझता मुझे निश्चय है कि प्रत्येक समझदार हिन्दू यह बात मानता है कि इस मैल को तो धो ही बहाना चाहिये, छुवाछूत को दूर करने की बात भी इतनी ही महत्व पूर्ण है, जितनी कि हिन्दू मुसल्मानों की एकता है।

जो भाई खिलाफत के विषय में अत्यन्त अधीर हों वह भी इससे अच्छा कार्यक्रम तैय्यार नहीं कर सकते, मेरी प्रार्थना है कि ईश्वर आप को ऐसा आरोङ्ग ज्ञान प्रदान करें जिससे आप देश को निश्चित ध्येय तक पहुंचा सकें।

आपका मित्र

मोहनदास करमचन्द गांधी

## मुजफ्फरनगर में प्रान्तीय परिषद्

इस वर्ष दिल्ली प्रान्तीय परिषद मुजफ्फरनगर में हुई, जिस की सभानेत्री मिसेज सरोजिनी नायडू हुईं। इस परिषद् के सम्बन्ध में जो विवरण उस समय "नवजीवन" में प्रकाशित

हुआ था, उसे नीचे उद्धृत करते हैं, जिससे उस समय की अवस्था का अनुमान हो सकता है।

भारत की बुलबुल-महात्मा गांधीजी की बांसुरी श्रीमती सरोजनी नायडू की अध्यक्षता में इसका अधिवेशन मुज़फ़्फ़रनगर में सफलता और उत्साह के साथ सम्पन्न हुवा जलूस में तरतीब और व्यवस्था का अभाव नहीं था। खादी का प्रचार भी यहां अच्छा दिखाई दिया, स्त्रियों में खादी बहुत ही कम पाई जाती थी, मिल के कपड़े की अपेक्षा शुद्ध खादी कम थी, जय जयकार की खूब धूम थी। नगर झंडियों तोरनों, बन्दनवारों और चित्रों से खूब सजाया गया था। जगह जगह फूलों की वर्षा होती थी।

जयजयकार में हमारी जितनी शक्ति खर्च हो जाती है उतनी यदि हम चरखा कातने में लगावें तो देश का बहुत उपकार हो, कागज़ की रंग विरंगी झन्डियां पूर्वी सभ्यता पर पश्चिमी सभ्यता की विजय की कड़वी याद दिला रही थीं।

पश्चिमी सभ्यता का वाहरी चटकीलापन मानो कड़क कड़क कर कह रहा था।

बस मैं दो दिन का महमान हूं, हरे पत्तों के तोरण और बन्द नवार प्रकृति की सुन्दरता उसकी हरी भरी तबियत उसकी सरसता की गवाही दे रहे थे।

फूलों की वर्षा एक ओर जहां प्रेम और श्रद्धा सेवा और साधन का आश्वासन देती थी वहां दूसरी ओर भय और

अपमान का कारण होती थी। शुद्ध खादी वाले शरीरों के द्वारा होने वाली पुष्प वर्षा आशीर्वाद रूप थी, प्रसादरूप थी।

परन्तु विदेशी कपड़े से ढके हुवे हाथों से जो फूल बरसते थे। वे यद्यपि छूटते प्रेम के साथ थे पर बरसते ही भय और अपमानरूप हो जाते थे।

विदेशी कपड़े पहने हुवे महात्मा गांधी की जय बोलना। उनके सब सेवकों पर फूल बरसाना क्या उनके लिए भय और अपमान की बात नहीं है।

स्वागत समिति के सभापति श्री सुन्दरलाल जी का भाषण सजीव, सामयिक, और महत्वपूर्ण था। संसार की अन्तर राष्ट्रीय स्थिति के साथ भारत और एशिया के भाग्यों का कैसा निकट सम्बन्ध है, और भारत किस प्रकार उससे बच नहीं सकता इसका मार्मिक निर्वचन आपके भाषण में था। श्रीमती सरोजनी देवी का भाषण उनकी दृढ़ श्रद्धा और दृढ़ निश्चय का परिचायक था। उनकी कोकिल वाणी और कवित्री के व्यक्तित्व ने उसे गद्य काव्य का रूप दे दिया था।

उसमें रमणी हृदय की सचाई और भावुकता तथा वीर हृदय की निर्भीकता और अटलता थी, कौन्सिलों को आपने माया मन्दिर बताया, और असहयोग के मौजूदा कार्यक्रम का पूरी तरह समर्थन किया।

परिषद् में अछूत प्रतिनिधि भी आये थे एक पारसी प्रतिनिधि भी था, हिन्दू मुसलिम एकता यहां अच्छे रूप में दिखाई दी, प्रस्तावों में सामयिक आवश्यक प्रस्तावों के साथ वर्तमान असहयोग कार्य्यक्रम के समर्थन का प्रस्ताव भी था। उसमें विविध बहिष्कार को कायम रखने और सविनय भंग की तय्यारी और उसके लिए कष्ट सहन की आदत डालने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम को आवश्यक बताया गया देश के नेताओं में जबकि कार्यक्रम के सम्बन्ध में मतभेद हो गया था।

देहली सूबे का यह पैगाम दूसरे सूबों के लिये पथप्रदर्शक है, परिषद के दिनों में मुज़फ्फरनगर में जो उत्साह और जोश दिखाई दिया वह देखते हुवे अन्धे और बहरे को भी यह जुरत नहीं हो सकती कि असहयोग आन्दोलन मरना तो दूर दब भी गया है।

## गया कांग्रेस में दिल्ली के प्रतिनिधि

सन १६२८ के आखीर में कांग्रेस गया में हुई। श्रीयुत सी० आर० दास सभापति थे। देहली से डाक्टर अन्सारी और हकीम अजमलखां साहब के अलावा और बहुत से डेलीगेट कांग्रेस में गये। वहां सब से अधिक वादविवाद कौंसिल प्रवेश के सम्बन्ध में हुआ।

## स्वराज्य पार्टी की स्थापना — दो नेता दो ओर बंट गये

हकीम अजमलखां कौंसिल प्रवेश के पक्ष में और डाक्टर अन्सारी विरुद्ध रहे। इसी अवसर पर स्वराज्य पार्टी भी बनी।

## स्वामी श्रद्धानन्द मियांवाली जेल से रिहा

स्वामी श्रद्धानन्द भी मियां वाली जेल से रिहा होकर गया कांग्रेस में सम्मिलित हुए।

## राष्ट्र की हरी भरी खेती पर ओस

सन् १६२३ से देहली की कांग्रेस का देश के अन्य आन्दोलनों के साथ २ उतार शुरू होता है। ऐसा मालूम होता था कि राष्ट्रिय आन्दोलन के दर्या में सन् १६१६, १६२० और १६२१ में ऐसा चढ़ाव आया कि किनारे और बन्द सब टूट गये और बाढ़ दूर २ तक फैल गई।

फरवरी सन् १६२२ से चढ़ाव उतरना शुरू हुआ और सन १६२३ के आरम्भ तक सिर्फ एक पतली सी धार दर्या की तह में रह गई। चढ़ाव का पानी दर्या के दोनों किनारों पर जिन्हें हिन्दु और मुसलमान जमायतों के किनारे कहना चाहिये, कहीं २ गढ़ों में भरा रह गया, और जहां रह गया था वहां सड़ने लगा।

हिन्दु संगठन, मुसलिम तन्जीम, हिन्दु शुद्धि और मुसलिम तबलिग, गौ कसी और गौ रक्षा, आरती और मस्जिद के आगे बाजा इस सड़ते हुए पानी के गढ़ों से सम्प्रदायिक सवाल बनकर हिन्दुस्तान की राष्ट्रियता के वातावरण को बिगाड़ने लगे। जहाँ राष्ट्रियता की बाढ़ लहरें मारती थीं, वहाँ अब सम्प्रदायिक हवा देश को जहरीला बनाने लगी। सन १६२३ के प्रारम्भ में कांग्रेस को, जिसने अपने उद्देश्य अपने विश्वास और एक्यता की दृढ़ भूमि को नहीं छोड़ा था, और न छोड़ सकती थी, और न कभी छोड़ेगी, इस वातावरण में कार्य करना कठिन हो गया। मगर फिर भी लुटे खुसटे कांग्रेस के राष्ट्रिय चमन में कुछ ऐसे दृढ़ विचार वाले बाग के माली बाकी रह गये थे, जो बचे कुचे पौदों को गर्म और सर्द हवाओं से बचाने की कोशिश कर रहे थे। कांग्रेस के जलसों में बीस पच्चीस आदमी जमा होने मुशकिल हो गये थे। कासमजान की गली के दफतर में और शहीद हाल के भवन में टूटे फूटे चरखों के अम्बार लगे हुए थे। राष्ट्रिय पंचायतें बन्द हो चुकी थीं, कौमी आजाद दर्शगाहें खत्म हो चुकी थीं। वह वालन्टियर कि जिन्होंने सजायें पाई थीं, बिखर चुके थे।

## हिन्दू मुसलिम सम्प्रदायिक संस्थाओं के केन्द्र

हिन्दू और मुसलमानों की सम्प्रदायिक संस्थाओं के केन्द्र

दिल्ली में स्थापित हो चुके थे। मुसलमानों में उन्हीं मोहम्मद फकीर सी० आई० डी० के रिटायर्ड इन्स्पेक्टर का, जिनपर सन् १६१६ में एडवर्ड पार्क की सार्वजनिक सभा में हमला किया गया था, दौर दौरा था। और हिन्दुओं में इनके मुकाबिले में चौधरी छोटनसिंह का जोर था।

## दृढ़ विचार वाले सच्चे कार्यकर्ताओं की परीक्षा

राष्ट्रीय कार्यकर्ता दृढ़ संकल्प और खामोशी से अपना काम करते थे। परन्तु जो सम्प्रदायिक रो में नहीं बहे, उनकी आवाजें नक्कारखाने में तूती की आवाज की भांति हो गई थीं। गली २ और कूंचे २ में सम्प्रदायिक बहिष्कार और इसी प्रकार के व्यर्थ मामलों पर उत्तेजनात्मक भाषण होते रहते थे। सम्प्रदायिक जलसे होते थे। और जो उन्हें ठीक रास्ते पर लाने का प्रयत्न करता था उसकी कुर्बानियों पर भी खाक डाल दी जाती थी। इस अवस्था में भी हजारों कठिनाइयों और बुराईयों का मुकाबिला करते हुए कांग्रेस कार्य कर रही थी।

हम यहां पर जानबूझ कर सम्प्रदायिक आन्दोलनों और प्रदर्शनों के विवरण से इसलिये बचते हैं कि उनकी याद देहली के लिये किसी अवसर में भी गौरवपूर्ण नहीं हो सकती।

## हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी के अखबारों का प्रकाशन

इस साल देहली से कई अखबार प्रकाशित हुए हैं। जिनमें हिन्दी का दैनिक "अर्जुन", उर्दू का दैनिक "तेज", "अलजमईयत", अलेमान, मुसलिम और अंग्रेज़ी का दैनिक "हिन्दुस्तान टाईमस" उल्लेखनीय है। इनमें सिवाय "मुसलिम" के बाकी सब अखबार आज तक भी जारी है।

## हकीम अजमल खां का कार्यकारिणी कमेटी से स्तीफा

हकीम अजमलखां साहिब ने स्वराज्य पार्टी में सम्मिलित होने के बाद अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी सभा से स्तीफा दे दिया।

## सरदार नानकसिंह वालन्टियरों के अध्यक्ष

अप्रैल में बहुत समय के बाद जिला कांग्रेस कमेटी की दो मीटिंग हुई और इनमें जो मतभेद कार्य करने वालों के बीच और कांग्रेस और वालन्टीयरों के बीच पैदा हो गये थे, उन्हें सुलझाया गया और सरदार नानकसिंह को वालन्टीयरों के प्रबन्ध के लिये नियुक्त किया गया।

## साम्प्रदायिक झगड़ों की जांच के लिये नेताओं की कमेटी

पंजाब में जो सम्प्रदायिक झगड़े शुरू हो गये थे उनकी जांच पड़ताल करने के लिये अप्रैल में श्रीयुत देशबन्धुदास. हकीम अजमलखां और मौलाना अब्दुलकलाम आजाद नियुक्त हुए थे। उन्होंने मामलों का निरीक्षण करके यह बयान प्रकाशित किया कि इन झगड़ों की तह में मजाकार, मुलतान के किस्से और शुद्धि व संगठन के प्रश्न पाये जाते हैं, और उन्हें सम्प्रदायिक झगड़े मिटाने में सन्तोषजनक सफलता प्राप्त नहीं हुई।

## मौलाना आरिफ हस्वा रिहा

मौलाना आरिफहस्वी साहब भी अप्रैल में जेल से रिहा होकर दिल्ली आ गये।

## स्वराज्य पार्टी की शाख की स्थापना

६ मई को सरदार नानकसिंह की अध्यक्षता में एक जलसा जिला कांग्रेस कमेटी के दफ्तर में हुआ। जिसमें देहली के स्वराज्य पार्टी की शाखा कायम हुई। हकीम अजमलखां पार्टी के सभापति और मौलाना आरिफहस्वी सेक्रेटरी चुने गये।

## मि० आसफअली मियाँवाली जेल से रिहा

१३ जून को मि० आसफअली मियाँ वाली जेल से रिहा होकर दिल्ली आ गये।

## शहीद हाल में तिलक दिवस

१ अगस्त को शहीद हाल में लोकमान्य तिलक की बर्षी के सम्बन्ध में एक जलसा हुआ। ला० नारायणदत्त उप-प्रधान जिला कांग्रेस कमेटी सभापति थे। उसमें 'खलीक' की नज़्म और ला० देशबन्धु, मौलाना आरिफहस्वी, प्रो० इन्द्र और मौलाना अहमद सईद के भाषण हुए।

## प्रो० इन्द्र कांग्रेस और स्वराज्य पार्टी के कार्यों में

इस वर्ष से प्रो० इन्द्र दिल्ली की कांग्रेस और स्वराज्य पार्टी के कार्यों में बराबर हिस्सा लेने लगे।

## कांग्रेस विशेष अधिवेशन के लिये स्वागत-कारिणी कमेटी

अगस्त के आरम्भ में आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी ने यह निश्चय किया कि कांग्रेस का एक विशेष-अधिवेशन दिल्ली में

किया जाय। इस पर दिल्ली में एक स्वागतकारिणी कमेटी बना दी गई। जिसके सभापति डाक्टर अन्सारी और सेक्रेटरी मि० आसफअली और पं० प्यारेलाल शर्मा नियुक्त हुये।

## मौलाना अब्दुल्ला का निगरानी में पंडाल की तय्यारी

मौलाना अब्दुल्ला की निगरानी में पत्थर वाले कुए के मैदान में सतरह अठारह दिन में पन्डाल तय्यार किया गया, क्योंकि रुपयों का एकत्रित करना जरा कठिन कार्य था, इस लिये आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी की आज्ञा से पच्चीस हजार रुपया ऋण लिया गया और इस अधिवेशन का तमाम प्रबन्ध किया गया। वातावरण खराब होते रहने और सर्द बाजारी के होते हुए भी इस अधिवशन का कार्य बहुत ही शानदार पैमाने पर हुआ।

## मौलाना अबुलकलाम आजाद राष्ट्रपति चुने गये

इस अधिवेशन के लिये मौलाना अब्दुलकलाम आजाद इस अधिवेशन के प्रधान चुने गए। परन्तु इस से पूर्व कि हम अधिवेशन के सम्बन्ध में बिस्तृत विवरण बयान करें, यह आवश्यक है कि एक और घटना का वर्णन कर दें।

पं० मदनमोहन मालवीय जी और मौलाना अबुलकलाम आजाद

## पं० मोतीलाल नेहरू का भाषण

२२ अगस्त को उसी मैदान में कि जहां कांग्रेस का अधिवेशन होने वाला था, एक बड़ा जलसा हुआ। जलसे के प्रधान हकीम अजमलखां थे। इसमें प० मोतीलालनेहरू ने राष्ट्र कीएकता और स्वराज्य पार्टी के उद्देश्यों और महत्व को समझाया। राष्ट्रीय आन्दोलन के धीमा पड़ जाने के एक लम्बे समय के बाद दिल्ली को यह अवसर प्राप्त हुआ कि इसमें हिन्दू-मुसलमानों की सम्मलित तीन-चार हज़ारकी उपस्थिति हुई। इस घटनामें यदि हम यह परिणाम निकालें तो गलत न होगा कि राजनैतिक कार्य धीमे पड़ने से साम्प्रदायिक झुकाव को प्रोत्साहन मिल जाता है और प्रत्येक एसे अवसर पर एक नया राष्ट्रीय आन्दोलन' जैसा कि स्वराज्य पार्टी का था, बिखरे हुओं को इकट्ठा करने में सफल होता है और राजनीति का उतार चढ़ाव इसी प्रकार चलता रहता है।

## मौ० मोहम्मदअली, शौकतअली व डा० किचलू रिहाई के बाद देहली में

३० अगस्त को मौलाना मोहम्मदअली रिहा होकर दिल्ली आगये और मौलाना शौकतअली, डाक्टर किचलू, उनसे पहले रिहा होकर दिल्ली आ गये थे।

मौलाना मोहम्मदअली ने एक प्रेस प्रतिनिधि के भेंट करने पर अपने बयान में हिन्दू मुसलिम एकता का बड़े जोर से समर्थन किया तथा कौंसिल प्रवेश का विरोध किया और कहा कि छोटी जेल से रिहा होकर अब मैं बड़ी जेल में आ गया हूं और जब तक महात्मा गांधी रिहा न हो जायें, चैन न लूंगा।

## ला० देशबन्धु पर मुकदमा और सजा

४ दिसम्बर को ला० देशबन्धु सम्पादक "तेज" पर मुकद्दमा चला और यह मुकद्दमा "तेज" अखबार के एक उत्तेजनात्मक लेख के सम्बन्ध में था और मुकद्दमे की लम्बी कार्यवाही के बाद उन्हें एक वर्ष कैद की सजा हो गई।

## शहीद हाल में राष्ट्र के नेताओं को अभिनन्दन-पत्र

कांग्रेस के अवसर पर बाहर से तमाम राष्ट्रीय नेता दिल्ली में पधारे थे और दिल्ली की ओर से शहीदहाल में स्वामी श्रद्धानन्द जी के सभापतित्व में ता० १२ सितम्बर को राष्ट्र के नेताओं की सेवा में एक अभिनन्दन पत्र पेश किया गया। इस अवसर पर स्वर्गीय डाक्टर केशवदेव शास्त्री ने जो इस समय कांग्रेस के कार्यों में पूरी दिलचस्पी से हिस्सा लेते थे, स्वामी जी का नाम

प्रधान पद के लिये पेश करते हुए कहा कि यह वही शहीद हाल है जो राष्ट्र के हिन्दु मुसलमान शहीदों की यादगार के लिये बना है। और इस दृष्टि से उचित यही है कि स्वामी श्रद्धानन्द ही इस जलसे का प्रधान पद ग्रहण करें।

इसके बाद मि० आसफअली ने अभिनन्दन पत्र पढ़ा, और उसके उत्तर में मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, मिसेज सरोजनी नायडू और मौलाना मोहम्मद अली के भाषण हुए। मिसेज सरोजनी नायडू का आकर्षक और प्रभावशाली भाषण के बीचमें लोगों की आंखों से आंसू बहने लगे।

नेताओं की सेवा में निम्न अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया:—

देहली निवासियों की ओर से

श्रीमान मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, श्रीमान श्री कौण्डा वैंकटा परया साहब सम्माननीय श्री अम्मा साहिबा, श्रीमान देशबन्धु चित्तरंजनदास, श्रीमान मौलाना मोहम्मद अली साहिब श्रीमान पं० मोतीलालजी नेहरू, श्रीमती सरोजनी नायडू, श्रीमान डाक्टर सैफुद्दीन किचलू, श्री सेठ जमनालालजी की सेवामें

## अभिनन्दन पत्र

देश और जाति के माननीय नेताओ !

हम देहली नगर निवासी प्रेम श्रद्धा और हार्दिक विश्वास के साथ आप महाशयों का अपने प्राचीन और ऐतिहासिक नगर में स्वागत करने का गर्व करते हैं।

किन्तु हम अपनी इच्छाओं के विरुद्ध उस महापुरुष को जिससे हमारा तात्पर्य महात्मा गान्धी से है नहीं देख रहे हैं।

फिर भी हम विश्वास करते हैं कि उन्हें जेल से बाहर लाने के लिए आप सब महाशय इस अवसर पर प्रभावोत्पादक प्रयत्न का प्रारम्भ करेंगे।

हिन्दुस्तान के लम्बे चौड़े प्रायः द्वीप का प्रत्येक निवासी आप सब महाशयों के अथक प्रयत्नों और आदर्श एवं अनुकरणीय बलिदानों से परिचित हैं।

जो आपने जेल में और जेल के बाहर देश की भलाई के लिये किये हैं।

सच तो यह है कि आप महानुभावों ने आर्थिक और शारीरिक त्याग से देश के सामने ऐसा आदर्श उपस्थित किया है जो एक स्वाधीनता प्रेमी राष्ट्र को मार्ग दिखाने के लिए प्रदीप का कार्य दे सकता है।

हम देहली निवासी देश के इस वर्तमान आंदोलन को बड़ी उत्सुकता से देख रहे हैं और आप महानुभावों को विश्वास दिलाते हैं कि हम भारत भूमि की स्वाधीनता के लिये जिसका प्रत्येक कण हिन्दू और मुसल्मानों के प्राचीन और मनोरंजक इतिहास को प्रकट कर रहा है, प्रयत्न करते रहेंगे और इन प्रयत्नों में हम अपने भारतवर्ष के नगर निवासियों से किसी अवस्था में पीछे नहीं रहेंगे, हम अत्यन्त खेद के साथ इस क्षणिक हिन्दू मुसलिम ऐक्य को जो उन्हें उनके कष्ट-मार्ग में

दूर ले जा रही है देख रहे हैं। यदि ईश्वर ना करे दोनों जातियों के उन नेताओं के कारण जो भिन्नता उत्पन्न करने के दुःखदायक कार्यों को अपना प्रसन्नतादायक कार्य समझते है अनैक्यरूपी खाड़ी चौड़ी होती गई और दिल्ली के विशेष अधिवेशन में आप ने अपनी विचार शीलता से इसे दूर ना किया तो स्वराजरूपी प्रकाश जो हमारे सामने है अन्धकार में परिणित हो जायगा और हम एक ऐसे समय तक जिसकी अवधी वर्णन नहीं की जा सकती इस प्रकार के लाभ से वंचित हो जायेंगे।

इस विशेष कांग्रेस के महत्व को अच्छी तरह समझ रहे हैं और हमें पूर्ण विश्वास है कांग्रेस का यह विशेष अधिवेशन सबसे पहले हिन्दू मुस्लिम ऐक्यता के महत्वपूर्ण विषय पर ध्यान देगा और दिल्ली को इस बात पर गर्व करने का अवसर देगा कि उसकी पुण्य भूमि एकता के पौधों को बटाने के लिये एक विशेषता रखती है, इसके साथ ही हम आप नेताओं से यह निवेदन करते हैं कि आप उस समय तक इस नगर को न छोड़े जब तक हिन्दू मुसलिम एकता के विषय का पूर्णतया निश्चय ना कर लें।

देश के मार्ग प्रदर्शकों!

आप सब महानुभावों ने जो २ कठिनाइयां इस देश को स्वाधीन कराने के आंदोलन में सहन की हैं और कर रहे हैं

उनका मान भारतवर्ष की वर्तमान और आने वाली सन्तानें बराबर करती रहेंगी, जबकि भारतवर्ष की स्वाधीनता का इतिहास लिखा जायगा तो आप महानुभावों के नाम उसके पृष्ठों पर स्वर्ण अक्षरों में लिखे जायेंगे, हम प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा आप सब महानुभावों को साहस तथा धैर्य प्रदान करें जो भारतवर्ष की दासता की बेड़ियों से मुक्त करने के लिये आवश्यक है।

हम हैं आपके शुद्ध प्रेमी
दिल्ली नगर निवासी

## पंडाल में आठ हजार व्यक्तियों के लिए प्रबन्ध

१५ सितम्बर से कांग्रेस का अधिवेशन शुरू हुआ इससे पहले २० रोज से अधिवेशन के लिये तय्यारियां हो रही थीं, और तमाम कार्य करने वाले सिर तोड़ परिश्रम और प्रयत्न कर रहे थे, कि तमाम प्रबन्ध पूरा हो जाय। एक तो समय कम था और दूसरे देहली में बुखारों की बवा फैली हुई थी। मगर फिर भी कांग्रेस का तमाम प्रबन्ध बहुत ही अच्छी तरह पूरा हो गया, और प्रतिनिधियों के लिये भी प्रबन्ध हो गया। दिल्ली की कई धर्मशालायें और कोठियों वगैरह में कैम्प बनाये गये और क्योंकि नागपुर कांग्रेस से कुर्सियें उड़ा दी गई थीं, तब से कांग्रेस अधिवेशन में बैठक जमीन पर होने लगी थी। कांग्रेस के पंडाल

में सात आठ हजार आदमियों के बैठने का प्रबन्ध किया गया था।

## स्वागतकारिणी के प्रधान डा० अन्सारी का भाषण

भाइयों, तथा बहिन प्रतिनिधियों, भद्र पुरुषों तथा देवियों !

जिन अवस्थाओं के कारण देहली में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन करने की आवश्यकता हुई हैं वे सब को विदित ही हैं। देशबन्धुदास के कलकत्ते तथा सरोजनी के बोम्बे ने प्रभूत साधनों के होते हुए भी इस भार को सहन करने की अनिच्छा प्रकट की है।

आसवां बारे अमानत न तुमा नस्त कशीर
कुरए फाल बनाय मन ही वा नोज़दन्द

परन्तु मैं इस बारे में अधिक नहीं कहूंगा। हम बम्बई के बड़े ऋणी तथा आभारी हैं। बिना इस ऋण के हमारे लिये कार्य करना असम्भव ही था

हमारे पास अपेक्षा कृत कम साधनों के होने के कारण तथा साथ ही समय के बहुत कम होने से हम अपने अतिथियों को पूर्णरूप से सुख तथा आराम नहीं दे सके। परन्तु क्या मैं आप से प्रार्थना कर सकता हूं कि आप इसे हमारे भावों का सूचक

मत समझें यद्यपि कार्यरूप में आपका स्वागत करने में कृत-कार्य नहीं हुये हैं। परन्तु हमारे हृदय में आपके प्रति सच्चे प्रेम तथा आदर के भाव हैं। मैं आपका इस शहर में जो कि वर्तमान समय में आपके लिये आराम के साधन पैदा करने में गरीब हैं, परन्तु प्राचीन रीति रिवाजों की दृष्टि से श्रीमान हैं हृदय से स्वागत करता हूं।

भद्र पुरुषों तथा देवियों मेरा विचार आपके सामने एक लम्बा-चौड़ा भाषण करने का नहीं है। मैं कुछेक विषयों पर संक्षेप से ही विचार करूंगा।

पिछली बार जब कि हम एकत्रित हुये थे उसके बाद हमारी मांगों का एक भाग पूर्ण हो चुका है — यद्यपि लूसेन की सन्धि की सब शर्तें पूर्ण से हमें मालूम नहीं हुई हैं तथापि जो सूचनायें अभी तक प्राप्त नहीं हुई हैं उन्हीं से जहां तक कि उनका सम्बन्ध टर्की के मामले से है हमारे पास प्रसन्न होने के लिये पर्याप्त कारण उपस्थित हैं परन्तु अब भी बहुत कुछ करना बाकी है। जजीरुतल अरब अब भी विदेशियों के आधीन है। मुसलमानी पवित्र प्रदेशों को स्वतन्त्र करने रूप कर्तव्य का अभी हमने पालन करना है — हम भारतवासियों ने अरब वालों को पराधीनता के पाश में फंसाने के प्रयत्न में सहायता दी थी, परन्तु जब कि हमें अपनी भारी भूल मालूम हो गयी है और हम इस मामले में सचेत हो गये हैं तब हमारा यह धार्मिक कर्तव्य हो

जाता है कि उस भूल का संशोधन करें तथा उस प्रदेश को साम्राज्यवाद के फन्दे से छुड़ावें चाहे वह कितना ही जटिल क्यों न हो और इसके लिये यदि कोई साधन हो सकता है तो भारत के लिये स्वराज्य प्राप्ती ही हो सकती है जिस पर कि बार बार जोर दिया जाता है।

परन्तु अब विचारणीय विषय यह है कि इस स्वराज्य प्राप्ति के लिये हम क्या प्रयत्न कर रहे हैं स्वराज्य प्राप्ती के लिये परम आवश्यक बात भारत में रहने वाली भिन्न २ समाजों में परस्पर प्रीति सम्बन्ध होना है, परन्तु हम पारस्परिक झगड़ों में पड़ कर छिन्न भिन्न हुवे पड़े हैं पूर्ण हिन्दू मुसलिम एक्यता जो कि आजकल एक निश्चित बात होनी चाहिये थी परन्तु अब वह एकता के न होने से एक विचार की मुख्य बात बनी हुई है। भिन्न २ में किया हुवा सालों का कठोर परिश्रम जहां एक तरफ पारस्परिक एकता को बनाये रखने में अकृत कार्य हुआ है वहां पारस्परिक झगड़ों के निन्दनीय रोग को रोकने के लिए भी असमर्थ हुआ है जो भारतीय राष्ट्रीयता के अस्तित्व को भी भयभीत कर रहा है।

ऊपर के भाषण से मेरा यह तात्पर्य नहीं है कि इस प्रकार के पारस्परिक सद्भाव का होना सर्वथा मुश्किल ही है। इसके विपरीत मुझे यह भी विश्वास है कि कुछ शर्तों पर यह आवश्यक पार-स्परिक समभाव पदा भी हो जायगा परन्तु तथापि

मुझे शोक से कहना पड़ता है कि हम अपने कर्तव्यपालन में अकृतकार्य हुए हैं। मेरी इस बात की पुष्टि कुछ सामयिक शोक-जनक घटनायें करती हैं जिन से मालूम होता है कि हम ने इस आवश्यक बात की तरफ उचित ध्यान नहीं दिया मानो कि इतना ही पर्याप्त न था। हमारी जातिय महासभा में भी एक भेदभाव पैदा हो गया जिस ने कि इस तरफ से हमारे ध्यान को हटा दिया। गया में भी मैं ने भारत में रहने वाले भिन्न २ मतों के साम्प्रदायिक विचारों तथा उनके अधिकारी को बनाये रखने के लिये देशवासियों का ध्यान एक ऐसे भारतीय जातीय संगठन को बनाने की तरफ खींचा था जिस में कि सब मतों के लोग मिलकर इस प्रकार के विभिन्न धर्मावलम्बीयों के पारस्परिक विवादों को राष्ट्रीय जीवन से हटा दिया जाय, परन्तु दुर्भाग्य से इस ओर कोई क्रियात्मक प्रयत्न नहीं किया गया जिसके कारण से कि अब तक भी हिन्दू मुसलिम ऐक्य के प्रश्न का फैसला नहीं हुवा मालाबार तथा मुल्तान की घटनाओं से दुखित हुवे हिन्दुओं तथा इन घटनावों से प्रभावित हुवे उत्तरदायी नेतावों ने भी शुद्धी तथा संगठन के आन्दोलन का कार्य प्रारम्भ किया और जिससे कि मुसल्मानों ने भी इस रोकने के लिये विरुद्ध प्रयत्न प्रारम्भ किये।

हाल ही में होने वाले दंगे शोक जनक घटनावों का परिणाम है।

परन्तु अभी सारा मामला बिगड़ा नहीं है, मैं आशावादी हूं और आशा करता हूं कि यदि हमने इस मामले को निश्चित तौर पर हल करने का प्रयत्न किया तो हम कृत कार्य होंगे, मैंने कई बार कहा है और अब भी हृदय से कहता हूं कि मैं इस बात को अपने हाथ में ले सकता हूं।

स्वराज्य प्राप्ती की अभिलाषा सर्वत्र स्पष्ट मालूम होती है और साथ ही यह बात भी निर्विवाद है कि स्वराज्य प्राप्ती के लिये पारस्परिक एकता सब से प्रथम तथा आवश्यक वस्तु है। मुझे कृत कार्यता में पूर्ण विश्वास है, यदि हम लोग हृदय से एकमत होकर काम करें क्योंकि बिना सामूहिक प्रयत्न के तथा सब के मिल कर हार्दिक प्रयत्न के तथा जब तक कि हम पारस्परिक अन्य मतभेदों को दूर नहीं कर देते, यह कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। कौंसिल सम्बन्धी विषय में जो कि इस समय सारे विवाद का मूल है, मेरे विचार से आप लोगों को पूर्णतया विदित ही है। मैं अब भी नियामक सभाओं में प्रवेश करने सम्बन्धी विचारों की व्यर्थता के विचार पर दृढ़ ही हूं परन्तु मैं कौंसिलों से घृणा करने की अपेक्षा देश तथा कांग्रेस से अधिक प्रेम करता हूं और सत्य घटनाओं की तरफ से अपनी आंखें बन्द नहीं कर सकता, जहां कि एक तरफ मैं कुछ एक सच्चे तथा ईमानदार महानुभावों को कौंसिल प्रवेश के विरुद्ध दृढ़ पाता हूं, वहां साथ ही उसी प्रकार के सच्चे तथा ईमानदार महा-

मनुष्यों को कौंसिल प्रवेश के पक्ष में पाता हूं और कह सकता हूं कि यदि यही अवस्था जारी रही तो कांग्रेस में अशांति का राज्य हो जायगा। इसलिये विवाद को दूर करने के लिये कोई उपाय अवश्य खोजना चाहिये। निस्सन्देह यह आप की ताकत में है कि आप किसी भी पार्टी को जिता दें परन्तु इस से मामला सुलझेगा नहीं। आप को इस प्रश्न पर अच्छी तरह से विचार करना चाहिये, एकता के उच्च उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये दोनों दलों को कुछ त्याग करना पड़ेगा और मुझे दोनों की ही देश भक्ति को देख कर कहना पड़ता है कि वे इस स्वार्थ-त्याग को बुरा न मानेंगे। मुझे कृत कार्यता पर पूर्ण विश्वास है और आशा है कि सब प्रकार के जातिगत द्वेषों तथा मतभेदों का यहीं इस कांग्रेस में अन्त हो जायगा। इसी विश्वास से मैं आप हिन्दुओं तथा मुसलमानों और अपरिवर्तनवादियों से मिल जाने के लिये तथा मिल कर स्वराज्य लाभ करने के लिये निवेदन करता हूं। अपना भाषण समाप्त करने से पहले मैं केनिया के प्रश्न पर भी कुछ एक शब्द कहना चाहता हूं, जातीय महासभा के अनुयायियों के लिये यह निर्णय कोई आश्चर्यजनक नहीं है, भारत में ही भारतियों की कोई अच्छी स्थिति नहीं है, यद्यपि यह निर्णय दुखदायक है तथापि इस से एक लाभ भी हुआ है और वह यह कि इस से लोगों को ब्रिटिश साम्राज्य में अपनी वास्तविक स्थिति का परिज्ञान हो जायगा और इस से हमारे

नर्मदल के भाइयों को भी आँखें खुल गई हैं, उनके मनों में भी साम्राज्य के प्रति आदर तथा स्वतन्त्रराष्ट्रसंघ के प्रति आदर का भाव उनके हृदय में घर नहीं करेगा, उन्हें अब मालूम हो गया है कि ब्रिटिश साम्राज्य में भी रङ्ग का भेद है, उनके प्रमुख नेता श्रीनिवास के साम्राज्य के प्रति विश्वास को भी बड़ा धक्का लगा है उन्हें अब विश्वास हो गया है कि भारत के रोगों को दूर करने में ब्रिटिश सरकार ही कोई निश्चित दवाई नहीं है और उन्हें अफ्रीका यूरोप निवासियों के आन्दोलन की सफलता को देखकर वैध आन्दोलन से अतिरिक्त उपायों की उपयोगिता में भी विश्वास हो गया है।

इस प्रकार हमारी कांग्रेस का ध्येय है कि भारत के निवासियों द्वारा सब न्याय उपायों तथा शान्त उपायों द्वारा साम्राज्य के बाहर भी स्वराज प्राप्त करना नरम दल के एक मुख्य नेता द्वारा न्याय ठहराया गया है। मुझे आश्चर्य है कि अब भी हमारे नरम दल के भाई क्यों नहीं कांग्रेस में सहयोग देते तथा क्यों नहीं हमारे साथ मिलकर न केवल केनिया के मामले में न्याय करने के लिये अपितु भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त के लिये समान अधिकार का मानने के लिये हमारा साथ नहीं देते।

# राष्ट्रपति मौलाना अब्बुलकलाम आजाद का भाषण

इसके बाद इस अधिवेशन के निर्वाचित राष्ट्रपति मौलाना अब्बुलकलाम आजाद ने अपना भाषण पढ़ते हुए कहा कि:—

इस समय हम जातीय आन्दोलन की नाजुक दशा में, अवस्थाओं से वाधित होकर विशेषाधिवेशन में सम्मिलित हुए हैं। इस अधिवेशन में हमें उपस्थित जटिल प्रश्नों को हल करना है। आज हमारे सामने जो दिक्कतें उपस्थित हैं वह कांग्रेस के इतिहास में वह बिलकुल नई हैं। अबतक हमारे सामने ऐसी दिक्कतें उपस्थित नहीं हुईं। इस कांग्रेस में उपस्थित प्रत्येक सभ्य की भी यही सम्मति है। आज से ३ साल पूर्व कलकत्ते में विशेषाधिवेशन के लिये एकत्रित हुए थे। परन्तु कलकत्ते और दिल्ली के विशेष अधिवेशन में बड़ा फरक है। कलकत्ते के अधिवेशन का वह समय था जब कि जातियां स्वतन्त्रता की घोषणा करती हैं। किन्तु आज के दिन में उन अवस्थाओं की झलक है जब कि जातियां स्वतन्त्रता की घोषणा के पीछे उपस्थित होने वाले प्रश्नों पर विचार करने के लिए एकत्रित होती हैं। उस समय हमने आन्दोलन को शुरू किया था आज हम युद्ध में प्राप्त सफलताओं की रक्षा के लिये व्यग्र हैं। उस दिन हम लोग आगे बढ़ने के लिए उत्सुक थे, आज हमारे लिये

रास्ता भूलने की सम्भावना पैदा हो गई है। उस दिन हमने निर्भय होकर अपनी किश्तियां समुद्र में छोड़ी थीं आज हाफिज शायर के कथनानुसार किनारे से दूर निकल आई है, दूसरा किनारा भी बहुत दूर है चारों ओर से हमारे विरुद्ध लहरें उठ रही हैं।

आप लोगों ने मेरी तुच्छ सेवाओं को महत्व देकर मुझे इस विशेष अधिवेशन का सभापति चुनो है, इसके लिये मैं आपका धन्यवाद करता हूं। यद्यपि समय और प्रश्न टेढ़ा और जटिल है, परन्तु हमारा निश्चय पक्का है, उपायों के विषय में सन्देह होने पर भी हमारा लक्ष्य स्पष्ट है। हम लोग सचाई और न्याय के लिये कोशिश कर रहे हैं। परमात्मा के राज्य में सत्य बातें जरूर सफल होती हैं। यद्यपि हमारी यात्रा कठिन है तो भी हमें निराश न होना चाहिये जिस परमात्मा ने हमें कमजोरी की हालत से बचाया है वह हमें जरूर सफलता तक पहुंचायेगा।

प्रतिनिधि गण। मैं उन प्रश्नों पर विचार नहीं करूंगा जिनका सम्बन्ध दिसम्बर कि कांग्रेस से है। उन पर विचार करना मेरे भाई मोहम्मदअली का कार्य है।

इस समय को जटिलताओं के विषय में मेरे लिये चुप रहना ही ठीक है। एक समय था जब कि राष्ट्र सभा नौकर शाही कि

आलोचना करने में समय बिताती थी, अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं, इस नौकर शाही का अन्याय सब पर प्रगट है। इस राज्य प्रणाली का मूल्य तत्व ही अन्याय है, हमारा उद्योग यह होना चाहिये कि हम इस सिस्टम को ही बदल दें।

इस समय हमारे मान्डरेट भाई भी रिफार्म कौंसिलों की असफलता को मान रहे हैं। केनिया के मामले ने बृटिश सरकार कि कलई खोल दी है। नमक कर आदि ने बता दिया है कि रिफार्म कौंसलें फिजूल हैं। यदि हम लोग यह अनुभव करते हैं कि भारत के मान कि रक्षा का समय आगया है तो तुच्छ भेदों को दूर कर एक होकर रक्षा करें।

## टर्की की शानदार विजय

प्रतिनिधी गण! मैं समझता हू कि टर्की विजय की प्रसन्नता में आप लोग मेरे साथ हैं। ६ मास पूर्व कांग्रेस ने युद्ध के मैदान में टर्की की सेनाओं को उन का विजय के लिये बधाई दी थी।

२४ जौलाई के दिन टर्की ने शान्ति स्थापित करने के लिये जो संधि पत्र विरोधी पक्ष में स्वीकृत कराया है, उस पर किसी एशयाटिक या उससे सम्बन्धित भारतीय को खुशी नहीं होगी, इस विजय के लिये मैं भारतवर्ष की ओर से हिज मजस्टी आफ खलीफ; अगोरा की राष्ट्र सभा और कमाल पाशा को बधाई देता हूं। टर्की ने जो विजय प्राप्त किया है वह शक्ति के मुकाबले

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

श्रीयुत देशबन्धु चितरंजनदास
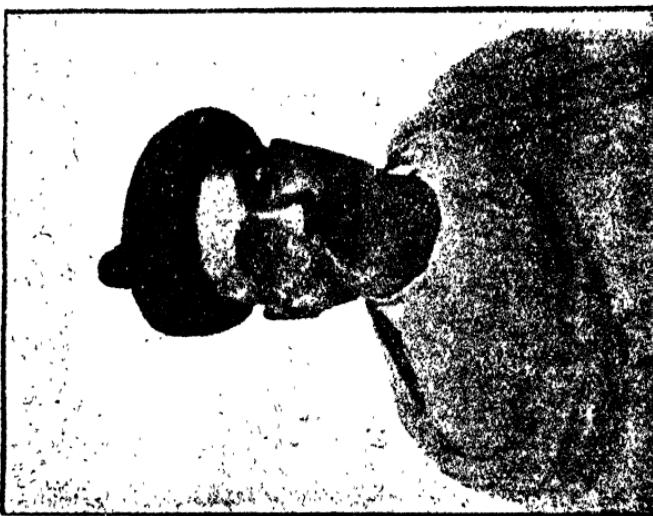
न्याय और सच्चे सिद्धान्तों की विजय है। इसलिये मैं न्याय और सत्य की विजय के उपलक्ष में मनुष्य मात्र को बधाई देता हूं। जो कुछ टर्की ने प्राप्त किया है वह अभिमानी शक्तियों से जबरदस्ती लिया गया है। इस विजय से पूर्व तथा एशिया को लाभ हुआ। परन्तु टर्की के शत्रु पक्ष को कोई फायदा नहीं हुआ। ब्रिटेन को आत्म समर्पण करना पड़ा है, उसे अपयश ही मिला है। टर्की कि विजय ने एक संसार व्यापी क्रान्ति को पैदा कर दिया है। इसके महत्व को आने वाले ऐतिहासिक समझ सकेंगे। आजकल पुरानी चीजें नया रूप धारण कर रही हैं। कल जिसे अमिट समझा जाता था आज वह नष्ट भ्रष्ट होरहा है। मुस्तफा कमालपाशा ने केवल टर्की ही नहीं जगाया उसने मध्य एशिया तथा अफरीका और भारतीय सागर में भी हलचल पैदा कर दी है। इन सब का अनिवार्य परिणाम यह होगा कि कुछ समय में विकसित पूर्व राष्ट्र प्रकट होंगे। प्रतिनिधिगण ! भारतवर्ष पूर्व के व्यापक आंदोलन के साथ जो इसका भौगोलिक या स्वाभाविक सम्बन्ध है उसकी उपेक्षा नहीं कर सकता। न्याय और स्वतन्त्रता पर लड़ने वाले प्रत्येक पूर्वीय राष्ट्र का भारतवर्ष हृदय से स्वागत करता है। इजिप्त, सीरिया, पैलेस्टाइन, मैसोपोटामिया, मौरो को तथा अन्य पूर्वी राष्ट्रों को विश्वास दिलाता है कि स्वतन्त्रता की लड़ाई में भारत उनके साथ पूर्ण सहानुभूति रखता है। विशेषतः भारतवर्ष जजिसजल अरब की स्वतन्त्रता

प्राप्त करने के इरादे को फिर से पक्का करता है। १९२० में कांग्रेस द्वारा की गई खिलाफत सम्बन्धी मांग का यही सार था केवल धार्मिक दृष्टि से हमें जजिरतुल अरब को स्वतन्त्र करना चाहिये। अरेबिया इजिप्त आदि स्थान इतने नजदीक हैं कि एक दूसरे की राजनैतिक स्थिति का परस्पर प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। भारतवर्ष को पराधीनता की बेड़ी में जकड़ने के लिये ही स्वेज कनाल को आधीन किया गया। ब्रिटेन अरेबिया को भी अधीन कर रहा है कि वह उस द्वारा सदा भारतवर्ष को अपने चुंगल में रखे। भारतवर्ष सब अरब निवासियों को विश्वास दिलाता है कि १९२० की तरह अब भी भारत अरब को विदेशी शासन से स्वतन्त्र कराने में कटिबद्ध है।

## कोंस्टेन्टीनोपिल और यरवदा जेल

प्रतिनिधिगण! जिस समय हम कौन्सेन्टीनोपिल को उस की विजयों के लिये बधाई दे रहे हैं उस समय हमारी दृष्टि उस भारतीय कारागार की ओर जाती है जिसमें भारत का बड़ा आदमी कैद है। मेरा विश्वास है कि टर्की से बाहर टर्की कि विजय के लिये यदि किसी को सब से प्रथम बधाई देनी चाहिये तो महात्मा गांधी को। जिस समय टर्की में भी जातीय आन्दोलन के लिये कोई आन्दोलन जारी न था उस समय महात्मा गांधी ने टर्की की सहायता के लिये बुलन्द आवाज की। महात्मा

गांधी ने इस टर्की के प्रश्न कि गहराई को समझ कर केवल मुसलमानों को ही नहीं अपितु सारे देश को इसके लिये प्रेरित किया था। इतिहास बतायेगा कि भारत ने खिलाफत के प्रश्न को हल करने में हाथ बटा कर क्या महत्वपूर्ण काम किया है। खिलाफत प्रश्न के कारण ही हिन्दु-मुसलिम एकता की विजय हो चुकी है। इस आन्दोलन के कारण पूर्वीय जगत में भारत की प्रतिष्ठा स्थापित हो गई है। भारत की सेनाओं ने ही अरब और टर्की को पराधीन किया था। इसलिये उस समय हर जगह भारत को घृणा की दृष्टि से देखते थे। परन्तु आज खिलाफत आन्दोलन में हाथ बटाने से कान्सटेनौपिल में भारत को पूर्व की स्वतन्त्रता का रक्षक समझा जाता है। केरो के बाजारों में महात्मा जी की सफलता के लिये प्रार्थना की जाती है। साथ ही भारत ने आन्दोलन में हिस्सा लेकर बता दिया है कि भारत भी स्वतन्त्रता को कीमत को समझता है। पराधीन जातीयों की न कोई इच्छा होती न चाह। परन्तु भारत ने टर्की के सम्बन्ध में राष्ट्रीय इच्छा प्रकाशित करके बता दिया है कि भारत में भी जनता को संगठित इच्छा शक्ति का जोर है। मैं यहां स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि पिछले चार सालों में मैंने खिलाफत कि मांगों को बहैसियत मुसलमान की अपेक्षा भारतीय दृष्टि से ही देखा है। महात्मा गांधी जी ने खिलाफत के प्रश्न को परिपुष्ट करके देश की बड़ी भारी सेवा की है।

भाषण के शुरू में मैंने दिक्कतों का जिक्र किया था। किसी भी संगठित आन्दोलन की सफलता के लिये एकता की आवश्यकता है। इस समय वह एकता नष्ट हो गई है, और हम आपत्तियों से घिरे हुए है। दिक्कतों के स्वरूप को समझने के लिये मैं आपका ध्यान उन दिक्कतों की ओर खींचता हू। इस समय निराशा और उपेक्षा के बीच में खड़े है। यदि हम आपकी दिक्कतों के समझने में अतियुक्ति करते है तो निराशा अधिक है। यदि उन दिक्कतों की उपेक्षा करते है तो स्थिति को अधिक खराब बनाते हैं, इस समय हमें स्थिति को ठीक २ समझ लेना चाहिये।

## १—सामाजिक जीवन की स्वरूपता

संसार के इतिहास में हम देखते हैं कि मनुष्य के सामाजिक जीवन पर प्रभाव डालने वाले कई नियम हैं जो सर्वत्र समान रूप से पाये जाते हैं। कवियों और फिलास्फरों ने कई तरह इस जीवन की निरन्तरता को नियमपूर्वक प्रकट किया है। फ्रेंच लेखक विक्टर ह्यूगो ने कहा है कि संसार के आंदोलन घटनाओं की निरन्तर होने वाली पुनरावृत्ति है। आज भारत में जो कुछ हो रहा है वह नई या असाधारण बात नहीं है। जो पहले किया जा चुका है हम भी वही कर रहे है। यह मानी हुई सचाई है कि जातियां पतन के बाद उठती हैं। दिमागी तथा

आचार सम्बन्धी परिवर्तनों के बाद उनमें आर्थिक या प्राकृतिक परिवर्तन होते हैं। यद्यपि रास्ता दिक्कतों से भरपूर है परन्तु हमें सफलता पर विश्वास कर आगे बढ़ना चाहिये। कई जगह हमें सावधानी के साथ रुकना पड़ेगा, बीच २ में रुक २ कर आगे बढ़ना होगा, विजय एक बार में ही नहीं मिलती। प्रतिनिधि गण हमारे लिये यह व्यापक नियम हट नहीं सकता। हमें भी सब रुकावटों का मुकाबला करना पड़ेगा। यदि हमारी गति रुक गई है तो हमें फिर नये जोश से आगे बढ़ना चाहिये। यदि किसी बात पर हम एक नहीं हो सके तो घबड़ाने की बात नहीं हमें फिर से एक होने की कोशिश करनी चाहिये। हमें विजयी जातियों की तरह इन दिक्कतों का मुकाबला करते हुए आगे बढ़ना चाहिये निराशा और भयका कोई स्थान नहीं है।

## परीक्षा का समय

सामाजिक कार्यों का अनवैसनिक प्रभाव क्या होता है इस दृष्टि से हमें उपस्थित दिक्कतों पर विचार करना चाहिये। जिस समय किसी जाति के व्यक्ति मानसिक उन्नति की चरम सीमा पर पहुंचते हैं, तो उन्हें चारों ओर अनुकूल परिस्थिति दिखाई देती है। इस समय आवश्यकयता होती है कि सब प्रकार के भावों को मिलाकर एक हों। ऐसी दशा में युक्ति और प्रत्यक्ष की अपेक्षा सेन्टिमेंट बहुत जोर से प्रभाव डालता है।

सब भेदों को एक बिन्दु पर लाने वाली स्थिति युक्ती तथा प्रत्यक्ष ज्ञान की अपेक्षा भावों मे पैदा होती है। इस समय शक्ति प्रकट होकर विरोधी शक्तियों का मुकाबला करती है। ऐसे समय या तो सफलता होती या प्रकृति के नियमानुसार रुकावटें आती हैं और गति के रुकते ही भेदभाव प्रकट होने लगते हैं। इसी समय सम्भलने की आवश्यकता होती है। लोग अनिवार्य परिस्थिति के कारण पारस्परिक भेदों पर ही ज़ोर देते हैं।

यदि ऐसी हालत में दिल और दिमाग ठीक हों और उन पर वाह्य शक्तियों का प्रभाव न पड़े तो स्थिति बहुत सम्भल सकती है। परन्तु जब यह प्रतिक्रिया का समय बीत जाता है तो तब फिर से नया जीवन संचारित होने लगता है। संसार मे होने वाले अनेक परिवर्तनों की तरह समाजों के कार्य भी कभी मन्द गति से और कभी तीव्र गति से होते हैं। इस सामाजिक नियम के अनुसार गति शील क्रिया के बाद हमारे जातीय आदोलन की भी गति बन्द हो गई।

बारदोली के समय आंदोलन चरम सीमा तक पहुंचा था।

परन्तु बारदोली के प्रस्तावों के कारण हमने गति को मन्द किया।

इसके स्वाभाविक परिणाम नष्ट होने लगे।

इस ढील के कारण कांग्रेस का संगठन शिथिल होने लगा। हिन्दू मुसलमानों के झगड़े बढ़ने लगे कांग्रेस में पार-टियां बन गई हैं। प्रतिनिधि गण यह हमारी परीक्षा का समय है, हमें दृढ़ निश्चय के साथ इस आपत्ति को लांघ कर नये जोश के साथ दिमाग और दिल को सब प्रकार के प्रभावों से बचाते हुए आगे बढ़ना चाहिये।

मुझे आप अपनी ओर से घोषणा करने कि अनुमति दें कि हमारा जातीय आंदोलन बन्द नहीं हुआ था हमने इसे थोड़े समय के लिये स्थगित किया था। जहाँ मैंने एक ओर आप लोगों से यह कहा है कि निराशा का कोई स्थान नहीं वहां यह भी ख्याल रखना चाहिये कि हमें स्थिति को फिर से जागृत करने में किसी तरह की ढील नहीं करनी चाहिये। उस समय की दिक्कतों का क्या हाल है। आंदोलन के प्रति जो उपेक्षावृत्ति है उसे दूर करने का क्या उपाय है। इसका उत्तर सब को मालूम है परन्तु उस उत्तर के अनुसार आचरण करना कठिन है। हमें एकता की आवश्यकता है इसी एकता को स्थापित करने के लिये आज हम यहां एकत्रित हुए हैं यह स्मरणीय दिन हमें इस कठिनता में सफलतापूर्वक उत्तीर्ण होने का अवसर देगा। संसार हमारी ओर देख रहा है। हम इस मौके से ठीक फायदा उठाते हैं या नहीं अभी इसका उत्तर आप लोग स्वयं देंगे।

हमें अपने सब विवादों का प्रारम्भिक सचाई से करना चाहिये। हमने अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये अहिंसात्मक असहयोग सिद्धांत का स्वीकार किया है। असहयोग का अर्थ यह है कि बुराई के साथ सहयोग करके उसे आगे बढाना न चाहिये प्रस्तुत उससे अलग होकर उसे अकेला छोड़ देना चाहिये। सब धर्म इसका उपदेश करते हैं।

इस्लाम के अनुयायियों के लिये भी तर्क मवालत का सिद्धांत आवश्यक है ' असहयोग एक सर्व भौम सचाई है। यह मानी हुई बात है कि कोई जाति विजेता के साथ सहयोग करके अपने अधिकारों को प्राप्त नहीं कर सकती सब जातियां अपने परिश्रम से उठीं हैं। बहिष्कार निष्क्रम प्रतिरोध असहयोग आंदोलन के प्रबल शस्त्र हैं। स्वयं किसी सिद्धांत के फल रूप न हो है। मक्का में भी इसी सिद्धांत की गूज हुई थी। रोमन सम्राट सेवरस के समय ईसाई पादरियों ने इसी के गीत गाते हुए कहा था कि हम सिविल युद्ध के झन्डे खड़े कर सकते हैं परन्तु हमारा धर्म हमें सिखाता है कि दूसरे को मारने की अपेक्षा स्वयं मरना बेहतर है। इस लिये हम दूसरों पर हाथ उठाये बिना सब कुछ सहते हैं। आज अभी १७ सदियों के बाद ईसाई शहीद के वाक्यों के अनुसार काम कर सकते हैं। इस समय में काउट लियो टाल्सटाय ही प्रथम मनुष्य था जिसने राजनीतिक अधि-

कार प्राप्त करने के लिये और सरकारी अन्याय का विरोध करने के निष्क्रिय प्रतिरोध का उपदेश दिया था। टाल्सटाय ने धर्म हीन असमता प्रधान प्राकृतिक पाश्चात्त सभ्यता का प्रतिवाद किया। टाल्सटाय का कहना था कि युद्धों और घातों का सामना करना चाहिये।

शस्त्रों का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

संसार का सदा ही विचारात्मक उपदेशों की अपेक्षा क्रियात्मक नेतृत्व की ही आवश्यकता होती है। संसार में कोई सच्चाई नई नहीं है। सत्य को नया चोला पहिना कर उस के कारण हुई सफलता से उसको पहिचाना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति समझता है कि स्वतन्त्रता के लिये लड़ना हमारा कर्त्तव्य है। यद्यपि टालस्टाय ने सच्चाई की घोषणा की थी परन्तु आवश्यकता थी कि कोई व्यक्ति विशेष उसकी शिक्षा को क्रियात्मक रूप दे। टालस्टाय से पहले भी असहयोग की सच्चाई थी परन्तु यह बात महात्मागांधी ने ही बताई कि उसको क्रियात्मक रूप में कैसे परिणित करना चाहिये। महात्मा गांधी द्वारा संचालित असहयोग मूल में वही पुराना है परन्तु अब कई दृष्टियों से बदल गया है। आरम्भ में यह नैतिक बात थी अब यह राजनैतिक प्रोग्राम के रूप में है।

सज्जनों असहयोग कार्यक्रम की कई धाराओं के विषय में हमारे अन्दर जो बड़ा मतभेद उत्पन्न हो गया है, यह मतभेद

यद्यपि कार्यक्रम की एक धारा के विषय में ही था तथापि जब उसने वाद विवाद का रूप धारण किया तो जैसा कि नियम है:— विविध प्रकार के नये प्रश्न उत्पन्न हो गये। अब सबसे पहला प्रश्न जो हमारे सन्मुख उपस्थित है वह यह है कि हमारे कार्यक्रम का स्वरूप क्या है। यह प्रोग्राम एक बार कार्य रूप में परिणित किया गया और जिस तरह वह प्रभाव उत्पन्न कर सकता था इसने किया? परन्तु यह संग्राम हमें (आन्दोलन) के उद्देश्य तक न पहुंचा सका? इसकी तमाम लड़ाई लड़नी अभी बाकी है। अब प्रश्न यह है कि वर्तमान अवस्था में इस प्रोग्राम की स्थिति क्या है। यह एक ऐसा प्रोग्राम था जो एक बार कार्य में लाया जा सकता था।

अगर चल गया तो चल गया नहीं तो फिर किसी दूसरे कार्यक्रम की खोज करनी चाहिये। या क्यो इसको प्रचार समाचार या और धर्म के निम्न सिद्धान्तों की तरह अपरिमित तथा अनन्त काल तक जब तक कि सारा देश व देश का कुछ भोग उसको मान न ले करना चाहिये; इसी अवस्था में इसकी उद्देश्यपूर्ति हो सकेगी।

मैं समझता हूं कि हमें सब से पहिले इस प्रश्न पर विचार कर लेना चाहिये। मैं प्रश्न के दोनों भागों का उत्तर 'नहीं' में देना चाहता हूं। वह न तो ऐसा था कि इसका एक बार ही प्रयोग किया जाये और नहीं इस प्रकार का था कि उसमें

कभी परिवर्त्तन ही न हो। असली बात मध्य में है। इसमें धर्म की दृढ़ता भी और राजनीति की परिवर्त्तनशीलता भी है। यह आवश्यकता और कर्तव्य दोनों के आधार पर स्थित है।

परन्तु इसके समुचित निर्णय के लिये आवश्यक है कि एक बार इस प्रोग्राम के कार्यक्रम पर विचार कर लिया जाए। मैं चाहता हूं कि इस विषय में अपने विचार आपके सन्मुख उपस्थित करदूं जो किसी असहयोग कार्यक्रम के आरम्भ से अब तक मेरे सन्मुख निश्चित रूप में उपस्थित होते रहे हैं। असहयोग कार्यक्रम का ढाचा उससे पहिले कि यह कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में मंजूर हुआ वन चुका था। सब से प्रथम बार जिस कमेटी ने इस पर विचार किया था वह इसी दिल्ली नगर में मार्च १९२० में बैठी थी। इसमें महात्मा गांधी के साथ ला० लाजपतराय जी, हकीम अजमलखां साहिब, तथा मैं विचारपरिवर्त्तन में सम्मिलित थे।

मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि इस तारीख से लेकर आज तक मुझे कभी ऐसा प्रतीत नहीं हुआ था कि इन चरमसीमा गत स्थितियों का नाम ही असहयोग है।

## प्रोग्राम की बुनियाद

इस प्रोग्राम की असली बुनियाद यह है कि हम भारत की वर्त्तमान सशस्त्र नौकरशाही के समक्ष बे हथियार शान्तिमय

आंदोलन के सन्मुख हथियार डाल देने पर बाधित हो। हमने भारत की इच्छा को खिलाफत पंजाब और स्वराज्य का नाम दिया है परन्तु असल में हमारा मामला इन बहुत से शब्दों में नहीं परन्तु इस एक वाक्य में ही आ जाता है कि निर्णय इच्छित है वह यह है कि राष्ट्र का भाग्य राष्ट्र की इच्छा पर आश्रित होना चाहिये न कि सेना बल पर आश्रित राज-शय्या पर।

यह बे हथियार संग्राम किस प्रकार कार्यरूप में परिणित किया जाय। तो इसके उत्तर में निश्चय ही हमारा कार्यक्रम हमें ऐसी ओर खींचता है जो कि केवल समय और आवश्यकता के अनुसार ही नहीं परन्तु जिसका आधार दृढ़ विश्वास पर है। यह बताता है कि वर्तमान राज्यप्रणाली से हमें पृथकता ग्रहण करनी चाहिये। इसीलिए कि हमें ऐसी राज्य सत्ता का साथ नहीं देना चाहिये और इसलिए कि पृथकता का ग्रहण कर हम इसे इस तरह गिरा सकते हैं कि वह हमारे सन्मुख अयोग्य हो जाये।

इसकी मांग कर्तव्य और आवश्यकता दोनों के आधार पर है। वह धर्म सदाचार अनुभव इतिहास सब की सम्मिलित सच्चाई है। हमें उसे अन्याय कार्य के लिय साधन न बनाना चाहिये। इस सच्चाई से कौन मुंह फेर सकता है। अनुमान और इतिहास इस बात की गवाही देते हैं कि संसार में किसी

जाति ने किसी दूसरी जाति की राज्यसत्ता से सहयोग न करके स्वतन्त्रता लाभ नहीं की। और न किसी को वह दान के रूप में प्रदान की है। क्योंकि यह राज्यकर्ताओं के स्वभाव के प्रतिकूल है। इससे किसी को इंकार नहीं।

यदि असहयोग का कार्यक्रम एक ही समय में एक ही बल से पूरा कर लिया जाये, तो किसी भी बुद्धिमान को इसमें सँशय नहीं हो सकता कि सूर्य के एक बार के उदय और अस्त में भारतवर्ष का इतिहास पलट सकता है।

परन्तु यह कार्यक्रम में किस प्रकार परिणित हो। इस छोटे से प्रश्न में ही हमारी सब कठिनाइयां छिपी हुई हैं। इस संग्राम में जो कि संग्राम होता हुआ भी संग्राम नहीं है हमें सबसे पहले इसी प्रश्न से वास्ता है।

मैं कठिनाइयों का पूरा २ दिग्दर्शन न कराऊंगा। परन्तु मुझे यह कहना है कि इन कठिनाइयों को समझते हुए एक ऐसा मार्ग दर्शाने की आवश्यकता है जो सब कठिनाइयों का अन्त करदे। वह अपनी सफलता के लिये किसी समय की आवश्यकता नहीं समझता जब कि देश के सब सहयोगी असहयोगी हो जायें प्रत्येक देश की तरह हिन्दुस्तान के लिए आज जिस प्रश्न का या अत्याधिक संख्या उसका अनुसरण करने लगे। बल्कि उसने ऐसे कार्यक्रम का अनुसरण किया है जिसके लिये विशेष संख्या

का अनुसरण ही पर्याप्त है। यदि इतनी संख्या प्राप्त हो जाय तो यद्यपि वह शेष जन-संख्या की प्राप्ति की इच्छुक तो होगी परन्तु वह उनके लिये रुकेगी नहीं।

असहयोग आंदोलन ने अपने कार्यक्रम को दो भागों में विभक्त कर दिया है। एक तो युद्ध के सामान का संग्रह करना और दूसरा युद्ध को चलाना। युद्ध के सामान से तात्पर्य उन शांतिमय योद्धाओं से है जो सत्याग्रह के सिद्धांतों से सुपरिचित हैं। संग्राम से तात्पर्य है हमारे शांतिमय बल-प्रदर्शन और नौकरशाही के अमानुषिक बल प्रदर्शन से मुठभेड़।

अपने ध्येय की प्राप्ति के लिये इस सेना ने सत्याग्रह व्रत को धारण किया है।

यदि आंदोलन पहली बार सफल न हो तो इसकी कुछ परवाह नहीं योद्धाओं का जख्मी होना उसे निराश न करेगा। यह कार्यक्रम ऐसा न था जिसको केवल एक बार ही कार्य रूप में परिणित करके त्याग दिया जाता।

असहयोग आंदोलन राजनीतिक स्वतन्त्रता सारी सामाजिक आदतों तथा आत्म संयम के भावों की प्राप्ति के लिये खद्दर आदि का विधान करता है। अब उठिये हम वर्तमान स्थिति पर विचार करें। १९२१ में हमने सर्व साधारण को युद्ध क्षेत्र में आवाहन किया।

आंदोलन के लिये अनुकुल परिस्थिति पैदा करने के लिये क्या करना चाहिए कौंसिल बहिष्कार या कौंसिल प्रवेश। सब बातों पर विचार करने के बाद मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि वर्तमान'अवस्थाओं में कौसिल का बहिष्कार करना व्यर्थ है। पहिले निर्वाचन के समय बहिष्कार आवश्यक था आज निर्वाचन में सीटस को काबू करना आवश्यक है । कौंसिलों तथा असेम्बली में प्रवेश कर, हमें उन्हें अपना कार्य क्षेत्र बनाना चाहिये। कौंसिल प्रवेश की नीतिका नियन्त्रण कांग्रेस को करनी चाहिये। कौंसिलों में प्रवेश कर हमें उन्हें अपना कार्य क्षेत्र बनाना चाहिये। उनका बहिष्कार नहीं। इसके अतिरिक्त हमें हिन्दु-मुसलिम श्रमियों के संगठन और राजनीतिक शिक्षा पर जोर देना चाहियें।

## देश की वर्तमान अवस्था

कोई भी आदमी जिस में अपने देश के प्रति थोड़ा सा भी प्रेम का अंश है इस की वर्तमान अवस्था को देखकर शोक किये बिना तथा रोये बिना न रहेगा। चार वर्ष पूर्व हमने स्वराज्य तथा खिलाफत के शब्दों के स्थान पर शुद्धि आंदोलन तथा इस के विरोध में किये गये आंदोलनों के शोर का शब्द सुनाई देने लगा। एक तरफ "हिंदुओं को मुसलमान होने से बचाओ" तथा दूसरी तरफ मुसलमानों को हिन्दुओं से बचाओ के शब्द कहे जाने लगे।

कुछ समय पहिले मुसलमान लोग सामूहिक रूप में कांग्रेस की हलचल में कोई भाग न लेते थे। उन के मन में यह सामान्य भाव था कि संख्या में हिन्दुओं की अपेक्षा कम हैं और शिक्षा तथा सम्पत्ति अवस्था में भी बहुत पिछड़ हुये हैं। इस प्रकार के भावों के कारण मुसलमानों को बहुत सी शक्तियां अपने को संगठित करने में ही लगी रहीं और वे राष्ट्रीय आंदोलन से अलग रहे। परन्तु आप लोगों में से जो कि मुसलमानों का पिछले १२ सालों से मुसलमानों का अध्ययन कर रहे हैं वे जानते हैं कि सन १९१२ में मैंने मुसलमानों को इस नीति को छोड़ने को कहा क्योंकि वह अलग होकर देश की स्वतन्त्रता के मार्ग में रुकावट कर रहे हैं। उस समय मेरे मुसलमान भाइयों ने मेरा विरोध किया परन्तु १९१६ में लखनऊ में मुसलमान कांग्रेस में उत्साह से आने लगे।

महाशयो! आप जानते हैं कि १९१२ में मैंने अपने मुसलमान भाइयों के विरुद्ध निर्भय होकर आवाज उठाई थी। आज वही स्थिति हिन्दु संगठन के लिये उपस्थित हुई है। सारी बातों का विचार करने पर मैं निसंकोच भाव से घोषित करता हूं कि न तो हिन्दू संघठन की आवश्यकता है, न मुसलमानों की संगठन की। आज केवल एक संगठन की आवश्यकता है। वह कौनसा संगठन है। वह एक मात्र "भारतीय राष्ट्रीय महासभा का संगठन है।

जितने ही उत्तरदायित्व पूर्ण शुद्धि के नेताओं ने हिन्दु-मुसलमानों के प्रेम की बातें जोरदार शब्दों में कहीं हैं उन नेताओं से मैं यह कह सकता हूं कि आपने हमको गलत रास्ते पर चलाया है। अब हमें मनुष्य स्वभाव के विपरीत कोई बात करने को न कहें। उचित सिद्धांत भी कभी २ मनुष्यत्व स्वभाव के विपरीत हुक्म करते हैं इस बात का इतिहास साक्षी है। ऐसी स्थिति में हिन्दु-मुसलमानों के प्रेम की बाते व्यर्थ हैं। मैं अपील करता हूं कि आप सब मिल कर भारत के भाग्य का निपटारा करें। यदि आप स्वराज्य चाहते हैं तो आपको ऐसे सब कार्यक्रम स्थगित कर देने चाहियें। कारण इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है।

मैं मानता हूं कि प्रत्येक जाति का यह कर्तव्य है कि वह आन्तरिक संगठन में सुधार करे। फिर भी देश का ध्यान रखना नितान्त आवश्यक है। अपनी रक्षा के लिये संगठन की आवश्यकता बताई जाती है। दूसरे जाति की भूलें तैयार कर संगठन की आवश्यकता बताना मैं ठीक नहीं समझता हूं। हिन्दु-मुसलिम मित्रता के उपरान्त मुलतान के दंगे के लिये प्रत्येक मुसलमान के हृदय में चोट लगनी चाहिये। साधारण दंगों का होना सम्भव है। इसे आप राष्ट्रीय प्रश्न बना कर कभी नहीं हल कर सकते। मैं अपील करता हू कि राष्ट्रीय लक्ष्य पर हिन्दु-मुसलमान ध्यान दें। बिना वादविवाद के शुद्धि एकदम बन्द

करनी चाहिये । यदि शुद्धि बन्द नहीं की जा सकती तो कम से कम स्थगित तो कर देनी चाहिये ।

## राष्ट्रीय सङ्गठन

सज्जनों ! इस सम्बन्ध में मैं आपको स्मरण कराता हूं कि हमें शीघ्र ही राष्ट्रीय संगठन के निर्माण करना चाहिये, जो कि न केवल राष्ट्रीय उद्देश्य का ठीक २ निर्णय कर देंगे परन्तु देश की भिन्न २ जातियों में भावी सम्बन्ध निश्चित कर देगा । जिससे भविष्य में फिर कोई कष्ट न होगा । भारतवर्ष विचित्र भूमि है; यह सर्वथा सम्भव है कि इतनी करोड़ जन-संख्या की स्वतन्त्रता के मार्ग में केवल मस्जिद के पास से गुजरना, गाना, बजाना, जलूस वा वृक्ष की टहनियों को तोड़ देना मात्र ही अनबन डाल दे । देश की ऐसी अवस्था में हमें इन सब बातों को शीघ्रातिशीघ्र निर्णय कर लेना चाहिये । मेरी सम्मति में हमें चुने सज्जनों की एक सब कमेटी बना लेनी चाहिये जो कि आगामी अधिवेशन में अपने विचार उपस्थित करें ।

## उपसंहार

सज्जनों ! अन्य जातियों के महत्वपूर्ण दिनों की तरह आज इस दिन का परिणाम भला बुरा दोनों प्रकार का हो सकता है । आज का दिन ही हमें बड़ी से बड़ी सफलता लाभ करा सकता

है। परन्तु भावी में बड़ी विफलता भी हमें आज ही का दिन दिखा सकता है। हमारे निश्चय उत्साह; तथा देशभक्ति की परीक्षा का समय है। आइये, हम सब मिल कर सम्मलित भावी के निर्माण कार्य में सफल मनोरथ हों।

आइये हम सब देश के भविष्य बनाने में सफल हों।

## परिवर्तनवादी और अपरिवर्तनवादी

चौदहसौ पन्द्रहसौ के लगभग डेलीगेट आये थे। स्वराजियों और अपरिवर्तनवादियों में और नेताओं में हर समय कांग्रेस के बाहर वादविवाद और चर्चायें होती रहती हैं।

मौलाना मोहम्मदअली और डाक्टर सैफुद्दीन किचलू के अपरिवर्तवादी (नोचैञ्जर) हो जाने से जरा दिक्कत पैदा हो गई थी। कांग्रेस का अधिवेशन बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया और स्वराजियों से एक समझौता हो गया।

जो नेता आये हुए थे उनके सार्वजनिक सभाओं में भाषण हुए जिनमें से पंडित मदनमोहन मालवीय जी का भाषण उल्लेखनीय है, जो उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द की सभापतित्व में हिन्दु-मुसलिम एकता पर दिया था।

## विशेष अधिवेशन स्वीकृत प्रमुख प्रस्ताव

सितम्बर मास सन् १९२३ में दिल्ली में आल इन्डिया

कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन मौलाना अब्दुलकलाम आजाद के सभापतित्व में हुआ। इसमें निम्न मुख्य २ प्रस्ताव पास हुए :—

(१) यह कांग्रेस अहिंसात्मक असहयोग के सिद्धान्त में अपने विश्वास को फिर से दृढ़ करती हुई घोषणा करती है कि कांग्रेस के वे सभ्य जिन्हें नियमिक सभाओं में प्रवेश करने में किसी तरह का धार्मिक या आन्तरिक सोच नहीं है वे आने वाले निर्वाचनों में उम्मेदवार बन कर खड़े हो सकते हैं और अपने सम्मति देने के अधिकार का प्रयोग कर सकते हैं। इसीलिये यह कांग्रेस कौंसिल प्रवेश के विरोध में किये जाने वाले आन्दोलन को स्थगित करती है।

उपरोक्त प्रस्ताव मौलाना मोहम्मदअली ने पेश किया और इस पर प्रतिनिधियों ने लम्बी बहस की। अन्त में यह प्रस्ताव लगभग १२५ पक्ष और १० विपक्ष के बहुमत से पास हो गया।

(२) यह कांग्रेस निर्णय देती है कि शीघ्र स्वराज्य प्राप्ति के लिये जिसकी प्राप्ति ही महात्मा गांधी तथा अन्य राज्य नैतिक बन्दियों को छुड़ाने, अरब को स्वतन्त्रता दिलाने तथा पंजाब के अन्यायों का ठीक २ निपटारा करवाने में समर्थ है; प्रबल सविनय कानून भंग आन्दोलन के रचनार्थ अब से एक कमेटी बनाई जाय, जिसको अपनी संख्या वृद्धि करने का पूरा अधिकार हो।

केनिया के सम्बन्ध में निम्न आशय का प्रस्ताव बहुमत से पास हुआ :—

(३) क्योंकि यह निश्चय हो गया है कि जहां कहीं गोरे कालों का संघर्ष होगा, वहां कालों को न्याय नहीं मिल सकता। इस कारण भारत को सोचना पड़ेगा कि भारत का राज्य बृटिश साम्राज्य के बाहिर बनाया जाय।

(४) ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार का प्रस्ताव बहुमत से पास हुआ।

## महात्माजी के जेल के कारण नेता जलूस में नहीं गये

यह बात भी वर्णन करने योग्य है कि क्योंकि महात्मा गांधी मार्च सन १६२२ से जेल में थे और अभी तक रिहा नहीं हुए थे, इसलिये जो नेता दिल्ली कांग्रेस में सम्मिलित हुए, उन्हों ने उनके स्वागत में निकाले जाने वाले जलूस में सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया और इसलिये राष्ट्रपति का जलूस भी नहीं निकाला गया।

## प्रो० गिदवानी कांग्रेस कार्यों में

इस समय में प्रो० गिदवानी, जो कुछ समय से दिल्ली आ गये थे, कांग्रेस के कार्यों में भाग लिया करते थे और उन्हों ने असहयोग आन्दोलन के सम्बन्ध में नौकरी छोड़ दी थी।

## जैतू में पं० जवाहरलाल नेहरू और सन्तानम् गिरफ़्तार

जैतू में अकालियों की सत्याग्रह हो रही थी, वह उसे देखने के लिये गये और पं० जवाहरलाल नेहरू, पं० के० सन्तानम् भी दिल्ली से ही उनके साथ जैतू की घटनाये देखने के लिये चले गए और वहां पहुंचने पर दफा १८८ के मातहत तीनों व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए गये।

## स्वराज्यपार्टी की ओर से ला० प्यारेलाल असेम्बली में

इस के बाद दिल्ली की स्वराज्य-पार्टी ने ला० प्यारेलाल वकील को असेम्बली के चुनाव के लिए खड़ा किया और इस समय से चुनाव के समय तक शहर में चुनाव सम्बन्धी इश्तिहार-बाज़ी और भाषणों की चहल पहल रही। ला० प्यारेलाल के मुकाबले में मि० तमीजुद्दीनखां और मि० शिवनारायण वकील खड़े हुए थे। परन्तु अन्त में ला० प्यारेलाल वकील बहुत भारी बहुमत से सफल हो गए।

इस अवसर पर यह भी वर्णन करने योग्य है कि हकीम अजमलखां और तमाम मुसलिम राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं ने और विशेषता के साथ मि० आसफअली, मौलाना आरिफ हस्वी,

कारीअब्बास, मौलाना अब्दुल्ला, काजी अब्दूलगफार और तमाम हिन्दू राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं ने ला० प्यारेलाल का पूरा साथ दिया।

## हिन्दू मुसलिम पैक्ट

अकाली सत्याग्रह के सम्बन्ध में जो गिरफ़्तारियां पञ्जाब में हो रही थीं उन से दिल्ली भी प्रभावित हुये बिना न रही और कांग्रेस के सच्चे और परिश्रमी कार्यकर्त्ता और वालन्टियरों के सेनापति सरदार नानकसिंह भी गिरफ्तार हो गए। दिल्ली कांग्रेस के एक और कार्यकर्त्तागुरुबखशसिंह भी गिरफ्तार किए गये।

यह कहने की तो आवश्यकता ही नहीं है कि सविनय आज्ञा भंग आन्दोलन के ठन्डा पड़ जाने के बाद भी कांग्रेस की मामूली कार्यवाहियां उसी प्रकार जारी रहीं। लोकमान्य तिलक की बर्षी ओर महात्माजी के जेल जाने के दिन और खास २ राष्ट्रीय अवसरों पर जल्से इत्यादि होते रहे।

## नागपुर झण्डा सत्याग्रह में दिल्ली का जत्था

जुलाई में जबकि नागपुर झन्डा सत्याग्रह चल रहा था, तो दिल्ली जिले की ओर से भी एक जत्था वहां भेजा गया था। इन दिनों प्रो० इन्द्र जिला कांग्रेस कमेटी के मन्त्री थे।

## शहीदहाल में खिलाफत कमेटी का जल्सा

५ नवम्बर को दिल्ली प्रांतीय खिलाफत कमेटी की ओर से शहीदहाल में जल्सा हुआ। मि० आसफअली सभापति थे और उस में मौलाना शौकतअली और मौलाना खलीकुलजमा ने हिन्दू-मुसलिम एकता पर भाषण दिये।

## वार्ड कमेटियों का चुनाव

इस वर्ष यह भी बता देना आवश्यक है कि यद्यपि सन् १६२१ से वार्ड कमेटियां स्थापित थी और मेम्बरों की संख्या अधिक होने की वजह से सन १६२१ का चुनाव प्रत्येक वार्ड में पृथक २ हुआ था। मगर १६२३ में सदस्यों की संख्या कम हो जाने के कारण से सारे शहर का चुनाव कांग्रेस कमेटी के दफ्तर में ही होने लगा। मगर इस पर भी १५ वार्डों के ६० मेम्बर जो १८ नवम्बर को चुने गये, उन में हिन्दू और मुसलमान करीब २ बराबर के थे। इसका अन्दाजा और उस समय के कार्यकर्ताओं का पता चुनाव के निम्न वर्णन से पता लग सकता है।

**इलाका नं० १**

१. ला० बिहारीसिंह, २. मीरमोहम्मद, ३. डाक्टर के० डी० शास्त्री, ४. ला० शेरसिंह।

इलाका नं० २

१. ला० अमीरचन्द खोसला, २. ला० प्रयागदास, ३. ला० गङ्गाराम, ४. सेठ लक्ष्मीनारायण गाड़ोदिया ।

इलाका नं० ३

१. पं० जानकीनाथशर्मा, २. श्रीमती विद्यावती, ३. प्रो० इन्द्र ।

इलाका नं० ४

१. ला० नारायणदास, २. ला० उमरावसिंह, ३. ला० अलोपीप्रसाद, ४. बा० प्यारेलाल वकील ।

इलाका नं० ५

१. ला० डिप्टीमल जैन, २. ला० हज़ारीलाल, ३. पं० आशाराम, ४. ला० टीकमचन्द ।

इलाका नं० ६

१. हकीम अजमलखां साहब, २. मौलाना हफीजुद्दीन, ३. मौहम्मद याकूब, ४. सरदार बलवन्तसिंह ।

इलाका नं० ७

१. मौलाना मोहम्मदहुसैन, २. मौलाना नसीरुद्दीन ३. मौ० अब्दुल्ला, ४. ला० मनोहरलाल भार्गव ।

इलाका नं० ८

१. मुन्शी नूरुद्दीन, २. काजी नजीरहुसैन, ३. इसफाक-हुसैन, ४. मौ० रुजीकअली।

इलाका नं० ९

१. ला० चन्द्रभानगोयल, २. ला० श्रीकृष्ण, ३. ला० श्रीराम बैरिस्टर, ४. पं० शिवनारायणशर्मा।

इलाका नं० १०

१. पं० राजनाथ, २. शेरबानी साहब, ३. हमीद, ४. पं० रामनाथ वैद्य।

इलाका नं० ११

१. डा० अन्सारी, २. मौ० अब्दुलअजीज अन्सारी, ३. शुऐब कुरेशी, ४. ख्वाजा अहमद।

इलाका नं० १२

१. मौ० आरिफ हस्वी, २. मौ० आसफअली, ३. वेगम-अन्सारी, ४. मौलवी अहमदसईद।

इलाका नं० १३

१. मौ० मोहम्मदइब्राहीम, २. ला० गोवर्धनदास, ३. मौ० किफायतुल्ला, ४. ला० बुलाकीदास।

इलाका नं० १४

१. ला० रामप्रसाद, २. कारीअब्बास हुसैन, ३. ला० शंकरलाल।

इलाका नं० १५

१. ला० लछमनदास, २. सय्यद सज्जादहुसैन, ३. सद्दीकी-साहब, ४. हकीम कासिमअली।

## * निवेदन *

प्रिय पाठको !

भारत की राजधानी दिल्ली के एक बड़े दौर का कुछ हलका सा दिग्दर्शन तो आप को इस पहले भाग में हो गया होगा। लेकिन सन १९२४ से १९३० तक का वर्णन दूसरे भाग में और १९३१ से १९३५ तक का वर्णन तीसरे भाग में देखने की कृपा करें।

कांग्रेस स्वर्ण जयन्ती कैम्प,<br>
देहली।<br>
ता० २२ दिसम्बर १९३५

—फूलचन्द जैन